ISSN 2349-6614

फरवरी 2019

मूल्य 50 रु

प्रत्यूष

हिन्दी मासिक पत्रिका

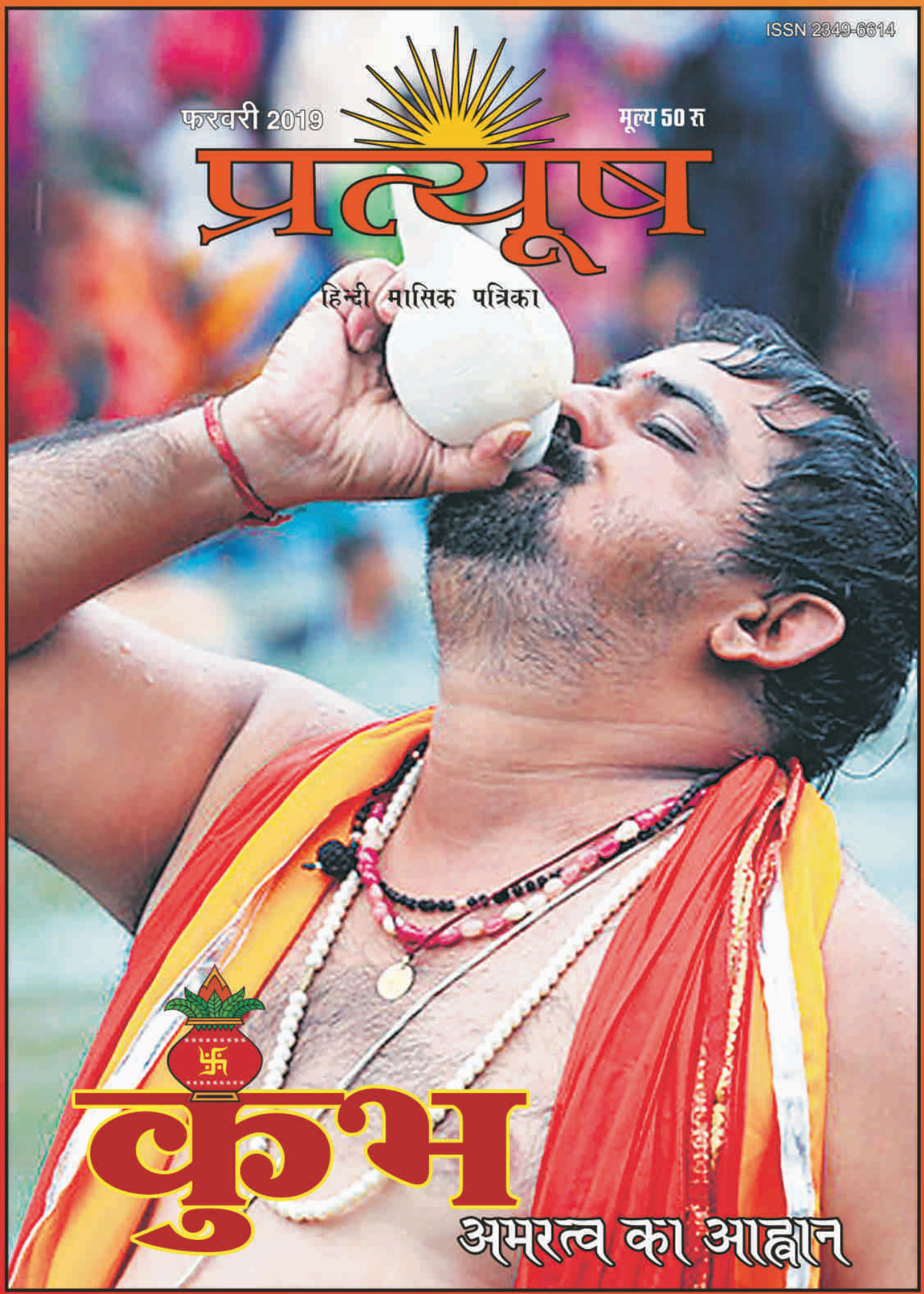

कुंभ

अमरत्व का आह्वान

प्रकाशन की तिथि प्रत्येक माह की 23 तारीख वर्ष 16 अंक12 Postal Registration No. RJ/UD/29-62/2018-2020Posting Date : 27th-28th of Every Month RNI No. : RAJHIN/2003/9297 Posting Office : Shastri Circle, Udaipur

ASCENT

YOUR SUCCESS IS OUR TARGET

IIT-JEE | NEET-UG | NTSE | OLYMPIADS | KVPY

19 YEARS

OF EXCELLENCE

DISCOVER THE CHAMPION IN YOU ...

NEET (UG) RESULT: 2018

AIR-6	AIR-12	AIR-20	AIR-109
PRIYADARSHI	DINESH KUMAR	NUTAN	KUSH BANDWAL
Molana Azad Medical Delhi	RNT Medical College Udaipur	AIIMS Jodhpur	RNT Medical College Udaipur

Total Qualified: 1455*

NEET (UG) RESULT: 2017

AIR-43	AIR-83	AIR-512	AIR-806
JAYA TAMBOLI	HARSH PARIHAR	MONIKA SARAN	AYUSHI AGARWAL
Molana Azad Medical Delhi	AIIMS Jodhpur	SN Medical College Jodhpur	RNT Medical College Udaipur

Total Qualified: 1005*

NEET (UG) RESULT: 2016

AIR-112	AIR-131	AIR-166	AIR-238
CHITRANGNA	ABHILASHA	ARCHI RANKA	PRANAY SHARMA
Lady Hardinge Med. Co. Delhi	SMS Med. College Jaipur	B.J. Med. Co. Ahemdabad	SMS Medical College Jaipur

Total Qualified: 644*

JEE (Main & Advanced): 2018

IIT-Roper	IIT-Mandi	IIT-Jabalpur	NIT-Suratkal
HIMANSHU	JAY PRAKASH	PRAKASH PRAJAPAT	YUKTA JAIN

JEE (Main): 96* | JEE (Advanced): 28*

JEE (Main & Advanced): 2017

JASWANT	JEMESH	BHAVESH	PRAVEEN

JEE (Main): 87* | JEE (Advanced): 26*

Pre-Nurture Division, Results: 2018

VAIBHAV KHATER	SHREEKANT DIXIT	DEVENDRA PALOD	AKSHAT RAM.
• SILVER MEDAL in IESO-2018 • PRMO Level-1	• RAJASTHAN STATE TOPPER NTSE Scholar, Marks: 495/500 • 1st RANK IN CBSE AJMER REGION	RANK-6 in NTSE STAGE-1	RANK-55 in NTSE STAGE-1
Ascent Roll No.: PN10-8709 Class-X, Udaipur	Udaipur	Udaipur	Chittorgarh

ADMISSION ANNOUNCEMENT 2019-20

PRE-NURTURE	NURTURE	ENTHUSE	CRASH COURSE	SUMMER COURSE
VII, VIII, IX & X Students NTSE | OLYMPIADS BOARD Preparation Batch Starts: Just After Exam English Medium Only	X to XI Moving Students PRE-MEDICAL IIT-JEE (Main+Advanced) Batch Starts: 4th April, 2019 English / Hindi Medium	XI to XII Moving Students PRE-MEDICAL IIT-JEE (Main+Advanced) Batch Starts: 7th March, 2019 English / Hindi Medium	XII Passed/Appearing Students NEET (UG) 18th & 22nd Mar., 2019 JEE (Main) 25th Mar., 2019 For Both English/Hindi Medium	IX to X Moving Students Board + NTSE/OLYMPIADS XI to XII Moving Students Board + PRE-MEDICAL | IIT-JEE (Main) Batch Starts : 6th May, 2019 English / Hindi Medium

For NEET (UG)
JEE (MAIN & ADVANCED)
AIIMS | NTSE | OLYMPIADS
FOR CLASSES: 7th to 12th

ASCENT Scholarship Cum Admission Test: ASAT

06 Jan'19 | 13 Jan'19 | 20 Jan'19 | 27 Jan'19

SCHOLARSHIP
Upto
50%
Based on performance on Test

Admission Forms are Available at the following Places for the Convenience of parents:

Udaipur: Ascent Career Point | **Kherwara**: J.P. Stationers | **Dungarpur**: National Book Store | **Sagwara**: Rajasthan Book Store | **Banswara**: Raza Xerox | **Garhi**: Sagar Book Store

ASCENT CAREER POINT

Corporate Office (SAKSHAM Campus)
64, Roop Nagar, Hiran Magri, Sector-3, Udaipur (Rajasthan)

Head Office (SAMRTH Campus)
387-88, Roop Nagar, Hiran Magri, Sector-3, Udaipur (Rajasthan)

Pre-Nurture Division (SARVTHAA Campus)
66, Roop Nagar, Hiran Magri, Sector-3, Udaipur (Rajasthan)

CALL: 0294-2466145, 9414167145, 9414358065, 9414650309

www.ascentudaipur.in | contact@ascentudaipur.in | ascentudaipur | ascentpoint

Sunday Open

'प्रत्यूष' के प्रेरणा स्रोत मात श्रीमती प्रमिला देवी शर्मा एवं
तात श्री आनन्दी लाल जी शर्मा
प्रत्यूष परिवार का शत्-शत् नमन चरणों में पुष्प समर्पण

प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी

सम्पादक रेणु शर्मा

प्रबन्ध सम्पादक नीरज शर्मा, डॉ. वीणा शर्मा

विपणन प्रबन्धक नितेश कुमार, नन्द किशोर
मदन, भूमिका, उषा
चन्द्रप्रभा, संगीता

टाइप सेटिंग जगदीश सालवी

कम्प्यूटर ग्राफिक्स Supreme Designs
विकास सुहालका

सलाहकार मण्डल
गोपाल शर्मा (गोपजी), वैभव गहलोत
पवन खेड़ा, नीरज डांगी, कुलदीप इन्दौरा
कृष्ण कुमार हरितवाल, धीरज गुर्जर, अभय जैन
गजेन्द्र सिंह शक्तावत, लाल सिंह झाला
ओम शर्मा, अजय गुर्जर, आदित्य नाग
हेमन्त भागवानी, डॉ. राव कल्याण सिंह
अशोक तम्बोली, सुन्दरदेवी सालवी

छायाकार :
कमल कुमावत, जितेन्द्र कुमावत,
ललित कुमावत

चीफ रिपोर्टर : उमेश शर्मा

जिला संवाददाता
बांसवाड़ा - अनुराग वेलावत
चित्तौड़गढ़ - संदीप शर्मा
नाथद्वारा - लोकेश दवे
डूंगरपुर - सारिका राज
राजसमंद - कोमल पालीवाल
जयपुर - राव संजय सिंह
मोहसिन खान

प्रत्यूष में प्रकाशित सामग्री में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, इनसे संस्थापक-प्रकाशक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।

प्रत्यूष
हिन्दी मासिक पत्रिका
प्रकाशक-संस्थापक :
Pankaj Kumar Sharrma
''रक्षाबंधन'', धानमण्डी, उदयपुर-313001

प्रत्यूष

फरवरी
2019
वर्ष 16, अंक 12

मूल्य 50 रू
वार्षिक 600 रू

अन्दर के पृष्ठों पर...

07 तिल का ताड़

फिल्मों पर राजनीति या राजनीति ...

15 अजब-गज़ब

जमीन के नीचे बसा शहर

24 खान-पान

वसंत में वासंती व्यंजन

34 डेमेज कंट्रोल

एक दोस्त 'मॉनिटर' तो दूसरा 'तीसरी आंख'

38 गठबंधन

समाजवाद का 'माया' मोह

कार्यालय पता : 2, 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर (राज)
दूरभाष एवं फैक्सः 0294-2427703 वाट्सएप 9414077697
मोबाइल : 94141-57703(विज्ञापन), वाट्सएप 75979-11992(समाचार-आलेख), 98290-42499(वाट्सएप), 94141-66737
Email:pankajkumarsharma2013@gmail.com, Visit us at: www.pratyushpatrika.com

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, संस्थापक, स्वामी पंकज शर्मा की ओर से मुद्रक आशीष बापना द्वारा मैसर्स पायोराइट प्रिन्ट मीडिया प्रा. लि. गुलाब बाग रोड, उदयपुर से मुद्रित तथा 'रक्षाबन्धन' धानमण्डी, उदयपुर से प्रकाशित।

डिसाइड का वादा, कपड़े धुले साफ और ज्यादा

AADHAR PRODUCTS

डिसाइड®

हमारे अन्य उत्पाद

- डिसाइड वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर
- डिसाइड सुपर व्हाईट वाशिंग पाउडर 4कि.ग्रा. जार
- डिसाइड गोल्ड वाशिंग पाउडर
- एडवाइस वाशिंग पाउडर
- एडवाइस डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड डिशवाश बार
- डिसाइड डिशवाश टब
- डिसाइड डिटर्जेन्ट केक
- डिसाइड नमक
- डिसाइड बाथ सोप

AADHAR PRODUCTS PVT. LTD.
(AN ISO 9001:2015 CERTIFIED COMPANY)
RIICO Industrial Area, Gudli, Udaipur - 313 024 (Raj.) India

FOR CONSUMER FEEDBACK, PLEASE CONTACT TO EXECUTIVE (CUSTOMER CARE) ON
77278 64004
or email at **aadharproducts@rediffmail.com**

www.aadharproducts.in

आरक्षण की राजनीति

सरकारी नौकरियों में गरीब तबकों के लोगों को 10 फीसदी आरक्षण देने के फैसले ने पूरे देश की राजनीति को आकस्मिक तौर पर प्रभावित किया है। तीन हिन्दी राज्यों में हार का कड़वा घूंट पीने के बाद मोदी सरकार का इसे 'मास्टर स्ट्रोक' कहा जा रहा है, जो आगामी आम चुनाव में अहम भूमिका निभा सकता है। इस फैसले के बाद से केन्द्र सरकार के मंत्रियों की सक्रियता एकाएक बढ़ गई है। हालांकि उनका यह भी कहना है कि इसको चुनाव से जोड़ने की ज़रूरत नहीं है। देश में लम्बे समय से आर्थिक रूप से पिछड़े तबके द्वारा यह मांग उठाई जा रही थी। जिसे स्वीकार करके सरकार ने ऐतिहासिक और साहसिक फैसला लिया है।

स्वतंत्रता के 7 दशक बाद हमें आरक्षण की सीमाएं भी अच्छी तरह से समझ आ चुकी हैं। अभी तक जिन तबकों को सरकारी नौकरियों में आरक्षण दिया गया है, उनमें से कुछ लोगों का सशक्तीकरण निश्चित रूप से हुआ है, लेकिन जिन लोगों को इसका लाभ मिला है, उनकी तादाद पूरे तबके के मुकाबले बहुत छोटी है। अतएव स्पष्ट है कि जिन तबकों के लिए यह आरक्षण था, उनकी सारी समस्याओं का समाधान उससे नहीं हुआ है। यह स्वीकार कर लेने का कोई कारण नहीं है कि सवर्णों में जो गरीब हैं, उन सबकी तमाम समस्याओं और परेशानियों का हल 'ऊंट के मुंह में जीरा' समान इस दस प्रतिशत आरक्षण से हो ही जाएगा। आरक्षण का झुनझुना सवर्णों को तब थमाया गया है, जब सरकारी नौकरियां लगातार कम हो रही हैं। भारतीय जनता पार्टी अथवा उसके नेतृत्व वाली केन्द्र सरकार का यह उम्मीद करना भी बेमानी है कि ऊंची जातियों के जो लोग अभी तक आरक्षण की संवैधानिक प्रथा का विरोध करते थे, वे इस फैसले से सन्तुष्ट हो जाएंगे। दरअसल देश को आज एक ऐसी अर्थव्यवस्था की ज़रूरत है, जो सभी को उनकी योग्यता के अनुसार रोजगार देने का सामर्थ्य रखती हो। जब ऐसी स्थिति होगी तभी आरक्षण की मांग और उसके विरोध के स्वर थम पाएंगे।

आरक्षण का मसला निस्संदेह बड़ा टेढ़ा है। अनुसूचित जाति-जनजाति और सामाजिक रूप से पिछड़ी जातियों को 50 प्रतिशत आरक्षण मिला हुआ है। सुप्रीम कोर्ट का आदेश है कि 'आरक्षण' इस 'लक्ष्मण रेखा' को पार नहीं कर सकता। मोदी सरकार ने सवर्णों के लिए दस प्रतिशत आरक्षण का मसौदा बड़ी चतुराई से तैयार किया है। इससे संवैधानिक प्रावधान में न सेंध लगी और न किसी तोड़-मरोड़ की ज़रूरत पड़ी, क्योंकि वर्तमान आरक्षण व्यवस्था सामाजिक रूप से पिछड़ी जातियों पर लागू है। ताजा आरक्षण किसी जाति, वर्ग या धर्म विशेष के लिए नहीं है। इसके दायरे में देश के सभी धर्मों और जातियों के आर्थिक रूप से पिछड़े लोग आएंगे। इस प्रकार इस पर 50 प्रतिशत की सीमा रेखा की बाध्यता नहीं होगी। फिर चूंकि यह आरक्षण संविधान संशोधन के जरिए लागू हो रहा है, तो इस पर किसी तरह के न्यायिक विवाद की आशंका भी नहीं रहेगी। लेकिन कुछ ऐसी पेचीदगिया जरूर हैं। जो कैसे हल होगी, पता नहीं।

इसी को लेकर विपक्ष ने सरकार पर तंज तो ज़रूर कसा, पर किसी ने भी इसका तर्कसंगत विरोध नहीं किया। लगभग सभी राजनीतिक दल इसके पक्ष में खड़े दिखे। जहां तक संविधान का सवाल है, उसकी मूल भावना गरीबों तक बुनियादी सुविधाएं पहुंचाने की है। इसलिए कोई भी राजनीतिक दल नहीं चाहता कि गरीबों के उत्थान के लिए किए जा रहे किसी कानूनी प्रावधान का विरोध किया जाए। लेकिन एक बात स्पष्ट है कि जिस तबके के लिए दस प्रतिशत आरक्षण की व्यवस्था की गई है, उस तबके को लेकर राजग सरकार को इतनी ही चिंता थी तो उसने सत्ता में आने के बाद साढ़े चार वर्ष तक उसे इस लाभ से वंचित क्यों रखा ? क्यों नहीं सत्ता में आते ही नोटबंदी, जीएसटी की तरह इसका भी आनन-फानन में फैसला किया गया। चूंकि यह फैसला आसन्न आम चुनाव की दस्तक के बीच हुआ है, इसलिए यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि सरकार ने सिर्फ वोटों की खेती को उर्वरक बनाने के लिए ही यह कदम उठाया है। बहरहाल चूंकि फैसला देर से ही सही पर गरीबों के हित से जुड़ा हुआ है, अतएव स्वागत योग्य है।

With Best Compliments

RK PHOSPHATES
PRIVATE LIMITED
UDAIPUR

Manufacturer:

- Di Calcium Phosphate (Feed Grade)
- Phosphatic Chemicals
- Lime Stone Powder
- Calcium Carbonate (Nano Micron Size)
- Dolomite Powder (Micronized)
- Calcite Powder (Micronized High Grade)
- Industrial Minerals

Corporate Office
'Singhvi House'
6 – Residency Road
Udaipur (Raj.) India

Works:
Umarda
Jhamar Kotra Road
Udaipur (Raj.)

Contact: Tel: +91 294 2422707, Mb. +91 9414165298,
+91 9829040501 Email:rkphosphates@gmail.com, www.rkphosphates.com
An ISO 9001:2008 Certified Company

फिल्मों पर राजनीति या राजनीति की फिल्म

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह पर बनी अनुपम खेर अभिनीत फिल्म 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिन्स्टिर' का ट्रेलर रिलीज होते ही मचा सियासी घमासान, लोकसभा चुनाव से पूर्व 3 फिल्में और आने की संभावना। मामला अदालत तक पहुंचा। रिलीज हुई फिल्म

– नंद किशोर

देश में लोकसभा चुनाव 2019 की सुगबुगाहट शुरू होने के साथ ही राजनेताओं के जीवन पर फिल्में बनाने और उनसे राजनीतिक स्वार्थ साधने का नया ट्रेंड भी प्रचलन में आ गया है। पहले शिवसेना प्रमुख बाल ठाकरे पर 'ठाकरे' और बाद में पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के जीवन पर बनी 'एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' के ट्रेलर रिलीज होने से सियासी गलियारों में भूचाल सा आ गया। आरोप-प्रत्यारोप के बीच वोटरों को अपने पाले में मिलाने के लिए मचा घमासान तेज हो गया। चुनाव के ठीक पहले दक्षिण भारत से भी कुछ इसी तरह की राजनीतिक बॉयोपिक्स की संभावनाओं ने कयासों का बाजार गर्म कर दिया है। इसमें एनटीआर, केसीआर और वॉय. एस. राजशेखर रेड्डी के जीवन पर बनी फिल्में शामिल हैं। लगता है मीडिया और सोशल मीडिया के बाद 2019 के लोकसभा चुनाव में फिल्में वोटरों को प्रभावित करने का माध्यम बनेगी। राजनेताओं की बॉयोपिक पर आधारित फिल्म हो और उस पर विवाद न हो ऐसा संभव नहीं है। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के मीडिया सलाहकार रहे संजय बारु की किताब 'द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर' पर इसी नाम से बनी फिल्म मनमोहन सिंह के कई अदृश्य पक्ष उजागर करती है। इसके कुछ दृश्यों से फिल्म की कहानी सोनिया गांधी और राहुल गांधी के इर्द-गिर्द भी घूमती है। दरअसल इस फिल्म में गांधी परिवार के हाथ में सत्ता की चाबी और प्रधानमंत्री के रूप में मनमोहन सिंह को सिर्फ एक मोहरा दिखाया गया है। हालांकि उनकी गरिमा के साथ कोई छेड़छाड़ नहीं हुई है, फिर भी फिल्म के प्रोमो को बीजेपी द्वारा हाथों-हाथ लेना और अपने ट्विटर हैंडल से ट्वीट करना फिल्म की मंशा पर सवालिया निशान तो खड़े करता ही है। यही कारण है कि कांग्रेस ने रिलीज किए जाने से पहले फिल्म को कुछ वरिष्ठ नेताओं को दिखाने की मांग की लेकिन उसे नजरन्दाज कर फिल्म रिलीज कर दी गई है। ट्रेलर और फिल्म के रिलीज पर रोक लगने से इनकार करने के दिल्ली हाईकोर्ट के फैसले के खिलाफ फैशन डिजाइनर पूनम महाजन ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की है। 9 जनवरी को दिल्ली हाईकोर्ट की डिवीजन बेंच ने फिल्म और उसके ट्रेलर पर रोक लगाने से इनकार किया था। इधर, शिवसेना के संस्थापक स्व. बाला साहब ठाकरे के जीवन पर आधारित फिल्म 'ठाकरे' पहली ही नजर में मनोरंजन के लिए कम और राजनीतिक लाभ के लिए ही बनी लगती है। चुनाव से ठीक पहले राजनीतिक बॉयोपिक्स की इस होड़ से यह सवाल उठना लाजमी है कि क्या कोई फिल्म किसी नेता की छवि को बना या बिगाड़ सकती है? चुनाव के परिणामों पर असर डाल सकती है? राजनैतिक नफा-नुकसान को छोड़कर अगर सिर्फ फिल्म के विषय पर बात की जाए तो मनमोहन सिंह ही नहीं बल्कि देश में ऐसे अन्य लीडर भी हैं या थे जो वास्तव में एक्सीडेंटल पीएम थे। देश के संसदीय इतिहास को टटोलें तो ऐसे कई नेताओं के नाम सामने आएंगे जिनका प्रधानमंत्री बनना महज एक संयोग अथवा तात्कालिक राजनैतिक घटना थी।

द एक्सीडेंटल प्राइम मिनिस्टर्स

रेस में भी नहीं थे मनमोहन

14 वीं लोकसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की करारी हार हुई। भाजपा सत्ता से बेदखल हुई। देश की जनता ने कांग्रेस पार्टी पर अपना भरोसा जताया। कांग्रेस अपने गठबंधन के साथ सबसे बड़े दल के रूप में आई। इस चुनाव में एक और नया अध्याय जुड़ा जब वामपंथी सासंद भारी संख्या में जीतकर आए। कांग्रेस ने केंद्र में सरकार बनाने का दावा पेश किया। लेकिन पार्टी के बाहर कांग्रेस अध्यक्ष सोनिया गांधी के विदेशी मूल का होने को लेकर विवाद पर सियासी जंग छिड़ गई। अंतत: सोनिया गांधी ने प्रधानमंत्री बनने से इंकार कर दिया। आनन-फानन में पार्टी संसदीय दल ने मनमोहन सिंह को अपना नेता चुन लिया। उन्हें सोनिया गांधी का भरोसेमंद माना जाता था और यही बात उनके पक्ष में गई। मनमोहन सिंह एक नहीं बल्कि दो बार देश के प्रधानमंत्री बने। यहां एक खास बात और थी जब प्रधानमंत्री पद पर मनमोहन सिंह का नाम चला तो वह राज्यसभा के सदस्य थे। अमूमन भारत के संसदीय इतिहास में लोकसभा से ही प्रधानमंत्री बनने की परंपरा रही है लेकिन मनमोहन देश के ऐसे पहले प्रधानमंत्री थे जो लोकसभा के सदस्य नहीं होते हुए पूरे दो कार्यकाल तक पीएम रहे।

चरण सिंह भी संयोग से ही बने थे पीएम

देश में आपातकाल के बाद आम चुनाव हुए। छठी लोकसभा के लिए मार्च 1977 में आयोजित आम चुनाव में जनता पार्टी की जबरदस्त जीत में मोरारजी देसाई की महत्वपूर्ण भूमिका थी। देसाई गुजरात के सूरत निर्वाचन क्षेत्र से लोकसभा के लिए चुने गए थे। जिन्हें सर्वसहमति से जनता पार्टी संसदीय दल का नेता चुना गया। उन्होंने 24 मार्च 1977 को प्रधानमंत्री पद की शपथ ली। इस चुनाव में इंदिरा कांग्रेस को करारी पराजय का सामना करना पड़ा। जनता पार्टी संसदीय दल का नेता चुनने का अधिकार जयप्रकाश नारायण और आचार्य जे बी कृपलानी को सौंप दिया। दोनों बुजुर्ग नेताओं ने मोरारजी के नाम पर मुहर लगाई। मोरारजी सरकार में चौधरी चरण सिंह उप प्रधानमंत्री बने लेकिन जल्द ही जनता पार्टी में कलह पैदा हो गई। 1979 में जनता पार्टी के वरिष्ठ सदस्य राज नारायण और चरण सिंह ने अपना समर्थन वापस ले लिया। इसके बाद देसाई को प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा देना पड़ा। यह राजनीतिक अस्थिरता का दौर था। कांग्रेस और सीपीआई के समर्थन से जनता (एस) के नेता चरण सिंह 28 जुलाई 1979 को प्रधानमंत्री बने। राष्ट्रपति नीलम संजीव रेड्डी ने निर्देश दिया कि चरण सिंह 20 अगस्त तक लोकसभा में बहुमत साबित करें। लेकिन इस बीच इंदिरा गांधी ने 19 अगस्त को ही यह घोषणा कर दी कि वह चरण सिंह सरकार को संसद में बहुमत साबित करने में साथ नहीं देगी। नतीजतन चरण सिंह ने लोकसभा का सामना किए बिना ही पद से इस्तीफा दे दिया। राष्ट्रपति ने 22 अगस्त को लोकसभा भंग कर दी। मध्यावधि चुनाव होने के बाद इंदिरा गांधी 14 जनवरी 1980 को प्रधानमंत्री बनी। इस बीच चरण सिंह कार्यकारी प्रधानमंत्री रहे।

राजीव का पीएम बनना भी इत्तफाक

31 अक्टूबर 1984 में इंदिरा गांधी की हत्या के बाद प्रधानमंत्री पद की शपथ उनके बड़े पुत्र राजीव गांधी को दिलाना कांग्रेस की मजबूरी थी। बाद में हुए आम चुनाव में पार्टी को भारी बहुमत मिला और राजीव पुन: प्रधानमंत्री बने। इंदिराजी की आकस्मिक हत्या के बाद देश में नेतृत्व का संकट खड़ा हो गया। ऐसे में इंदिरा जी के ज्येष्ठ पुत्र राजीव गांधी को बुलाकर देश की कमान सौंपी गई। वह देश के सातवें और भारतीय इतिहास में सबसे कम उम्र के प्रधानमंत्री थे। वे राजनीति में नहीं आना चाहते थे लेकिन हालात ने उन्हें विवश कर दिया। वे एयर लाइन्स पायलट थे। आपातकाल के बाद जब इंदिरा गांधी को सत्ता छोड़नी पड़ी थी तब कुछ समय के लिए राजीव परिवार के साथ विदेश में रहने चले गए थे। हालांकि 1980 में अपने छोटे भाई संजय की एक हवाई दुर्घटना में असामायिक मृत्यु के बाद माता इंदिरा का सहयोग देने के लिए सन 1982 में राजीव गांधी ने राजनीति में प्रवेश किया। वे अमेठी से लोकसभा का चुनाव जीतकर सांसद बने और 31 अक्टूबर 1984 को सिख आतंकवादियों द्वारा प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी की हत्या के बाद प्रधानमंत्री बने। उनके कार्यकाल में भारतीय सेना द्वारा बोफोर्स तोप की खरीद में कमीशनखोरी का मामला उठा और अगले चुनाव में कांग्रेस की हार हुई। बाद में राजीव गांधी को प्रधानमंत्री पद से हटना पड़ा। 21 मई 1991 को तमिल आतंकवादियों ने श्री पैराम्बदूर में राजीव की बम विस्फोट कर हत्या कर दी।

मात्र 64 सांसदों के बूते पीएम बने चंद्रशेखर

भाजपा के सहयोग से बनी केंद्र की विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार गिरने के बाद देश में एक बार फिर राजनीतिक अस्थिरता का माहौल उत्पन्न हो गया था। इसके बाद वर्ष 1990 में समाजवादी जनता पार्टी के नेता चंद्रशेखर को प्रधानमंत्री बनने का मौका मिला। भाजपा का समर्थन वापस लेने के चलते विश्वनाथ प्रताप सिंह की सरकार अल्पमत में आ गई। चंद्रशेखर के नेतृत्व में जनता दल में टूट हुई। 64 सांसदों का एक धड़ा अलग हुआ और उसने सरकार बनाने का दावा ठोक दिया। उस वक्त राजीव गांधी के नेतृत्व में कांग्रेस ने उन्हें समर्थन दिया। हालांकि प्रधानमंत्री बनने के बाद चंद्रशेखर ने कांग्रेस के इशारों पर चलने से इंकार कर दिया। चन्द्रशेखर सिर्फ छह महीने इस पद पर रहे। राजीव गांधी ने उनकी सरकार से अपना समर्थन वापस ले लिया। 21 जून 1991 को चंद्रशेखर को इस्तीफा देना पड़ा।

नरसिंह राव बने 10 वें पीएम

पामुलापति वेंकट नरसिंह राव भारत के 10 वें प्रधानमंत्री बने। उनके प्रधानमंत्री बनने में भाग्य का बहुत बड़ा हाथ रहा। 29 मई 1991 को राजीव गांधी की हत्या हो गई थी। ऐसे में पूरे देश में कांग्रेस के प्रति सहानुभूति की लहर छा गई। इस लहर का कांग्रेस को निश्चय ही लाभ हुआ। दरअसल 1991 के लोकसभा चुनाव दो चरणों में हुए थे। प्रथम चरण के चुनाव राजीव गांधी की हत्या से पूर्व हुए थे लेकिन दूसरे चरण के चुनाव उनकी हत्या के बाद हुए। प्रथम चरण की तुलना में दूसरे चरण के चुनावों में कांग्रेस का प्रदर्शन बेहतर रहा। इस चुनाव में कांग्रेस को स्पष्ट बहुमत नहीं प्राप्त हुआ लेकिन वह सबसे बड़े दल के रूप में उभरी। कांग्रेस ने 232 सीटों पर विजय प्राप्त की थी। इसके बाद नरसिम्हा राव को कांग्रेस संसदीय दल का नेतृत्व प्रदान किया गया। उन्होंने सरकार बनाने का दावा पेश किया। सरकार अल्पमत में थी लेकिन कांग्रेस ने बहुमत साबित करने के लायक संख्या जुटा ली और उसने पूरे पांच वर्ष का कार्यकाल सफलतापूर्वक पूर्ण किया। नरसिंहा राव ने आर्थिक उदारीकरण की दिशा में बड़ा काम किया। तब उनके मंत्रिमंडल में सदन से बाहरी व्यक्ति के रूप में मनमोहन सिंह को वित्त मंत्रालय संभालने के लिए लाया गया।

देवगौड़ा भी अप्रत्याशित पीएम

1996 के आम चुनावों में पीवी नरसिम्हा राव की अध्यक्षता वाली कांग्रेस पार्टी की हार हुई। लेकिन कोई अन्य पार्टी भी सरकार बनाने के लिए पर्याप्त सीटें नहीं जुटा पाई। जब संयुक्त मोर्चा (गैर कांग्रेस और गैर भाजपा क्षेत्रीय पार्टियों का एक समूह) ने कांग्रेस के समर्थन से केंद्र में सरकार बनाने का फैसला किया। तब देवगौड़ा को अप्रत्याशित रूप से सरकार का नेतृत्व करने के लिए चुना गया। वह भारत के 11 वें प्रधानमंत्री बने। 1 जून 1996 को भारत के प्रधानमंत्री के रूप में पदभार ग्रहण किया और 11 अप्रैल 1997 तक ही वह पद पर रहे।

संयोग से बने हेड ऑफ स्टेट

सिर्फ भारत ही नहीं बल्कि विदेशों में भी कई ऐसे उदाहरण हैं जिसमें एक शख्स सक्रिय सियासत से नाता न होते हुए भी अचानक सत्ता के केंद्र में आता है और हेड ऑफ स्टेट बन जाता है।

यू हित क्रों : म्यांमार में 2016 में प्रचंड बहुमत से चुनाव जीतने वाली नेशनल लीग ऑफ डेमोक्रेसी की सुप्रीमो आंग साग सूकी को प्रेसीडेंट पोस्ट नहीं मिली। क्योंकि उनके पति के पास दोहरी नागरिकता थी। ऐसे में सूकी ने अपने विश्वासपात्र यू हित क्रों को प्रेसीडेंट नियुक्त किया। वह पहले सूकी के ड्राइवर भी थे और सूकी चेरिटेबल ट्रस्ट का कामकाज संभालते थे। उनकी नियुक्ति अप्रत्याशित थी क्योंकि म्यांमार में सेना के पास सत्ता का नियंत्रण था और सूकी व सेना के बीच प्रेसीडेंशियल पोस्ट को लेकर सहमति नहीं बन पाई। इसके बाद उन्होंने यह फैसला लिया।

शाहिद खाकन अब्बासी : पाकिस्तान की पॉलिटिकल पार्टी पीएमएल-एन के लीडर शाहिद खाकन अब्बासी का पीएम बनना भी इत्तेफाक ही तो था। अब्बासी ने अगस्त 2017 को पाकिस्तान में पीएम के तौर पर कमान संभाली और ऐसा उन्हें तब करना पड़ा जब तत्कालीन पीएम नवाज शरीफ पनामा पेपर्स सहित कई घोटालों में फंसे। अब्बासी ने 2018 तक सत्ता संभाली।

बशर अल असद : सीरिया के प्रेसीडेंट बशर अल असद भी सत्ता में इत्तेफाक से ही आए। पेशे से ऑप्थल्मोलॉजिस्ट असद के पिता और सीरिया के प्रेसीडेंट रहे हाफेज असद की 11 सन्तानों में बशर तीसरे नंबर पर थे। उनके बड़े भाई आर्मी ऑफिसर व लीडर रहे बासेल उनके पिता की पहली पसंद थे। 2000 में हाफेज की मौत के बाद बशर सीरिया में सत्तासीन हुए।

जिमी मोरेल्स : ग्वाटेमाला के जिम्मी मोरेल्स को पॉलिटिक्स से नफरत थी और वह एक यू-ट्यूब से जो कि मोरोजोलास नाम की सीरिज के जरिए सियासत को निशाना बनाते थे। मगर 2015 में यहां सत्ता के खिलाफ लोग सडकों पर उतर आए और इसमें मोरेल्स के वीडियोज की बड़ी भूमिका रही। इसे भुनाने का मन बनाकर उन्होंने न केवल सत्ता के मैदान में उतरने का ऐलान किया बल्कि चुनाव भी जीता और 2016 से वह देश की कमान सभालें हुए है।

अलविदा हरफनमौला किरदार

क्या एक्टिंग और क्या राइटिंग, हिंदी सिनेमा में किसी भी किरदार में रच- बस जाने वाले और अपनी तेजधार कलम से शानदार संवाद लिखने वाले बेहतरीन अदाकार कादर खान दुनिया से हुए रुखसत

बॉलीवुड के दिग्गज और हरफनमौला किरदार कादर खान का 81 साल की उम्र में कनाडा में 31 दिसंबर 18 को इंतकाल हो गया। उनको सांस लेने में दिक्कत होने के बाद कनाडा के टोरंटो हॉस्पीटल में वेंटिलेटर पर रखा गया था। वे आखिरी बार 2015 में बनी फिल्म 'हो गया दिमाग का दही' में नजर आए थे। वे प्रोगेसिव सुप्रान्यूक्लीयर पाल्सी डिसऑर्डर से पीड़ित थे। जिसके चलते उनके दिमाग ने काम करना बंद कर दिया था। वे मृत्यु से पूर्व ही कोमा में चले गए थे। कनाडा में ही उन्हें सुपुर्द-ए-खाक किया गया। उनका परिवार वर्षों से वहीं रह रहा था। उनके किरदार में जितनी संजीदगी थी उससे कई ज्यादा उनकी लेखनी में धार थी। वे अपने जमाने के बेहतर स्क्रिप्ट राइटर थे। कादर खान ने धरम वीर, गंगा जमुना सरस्वती, कुली, देशप्रेमी, सुहाग, अमर अकबर एंथोनी, शराबी, लावारिस और मुकद्दर का सिकंदर जैसी 300 फिल्मों में स्क्रिप्ट लिखी और कुली नंबर-1, सल्तनत जैसी 250 फिल्मों में जान फूंकने वाले डायलॉग लिखे। उनके लिखे अधिकतर संवादों में ज़िंदगी का फलसफा था।

दूध में पानी से मिलते कादर

एक सीधा साधा सा दिखने वाला आदमी अपनी आवाज अपनी अदाकारी और लेखनी के साथ साथ अपने व्यवहार से जिस तरह दुनिया भर में सराहा जाता रहा यह मौका कम ही लोगों को मिलता है। कह सकते हैं कि, कादर जैसा बनना आसान नहीं है। चकाचौंध से भरी पूरी फिल्म इंडस्ट्री में कादर खान ने खुद को आखिरी तक अपने को जिस जिम्मेदाराना तरीके से स्थिर रखा यह बात सिने प्रेमियों को आजीवन याद रहेगी। सादा जीवन जीने के आदी कादर भाई हिंदी सिनेमा के मशहूर नायक, खलनायक, कॉमेडियन और इन सबसे इतर एक जिंदादिल इंसान थे। उनको हिंदी सिनेमा से जुड़े लोग हास्य रस को अप्रतिम ऊंचाइयों तक पहुंचाने के लिए भी याद रखेंगे। अमिताभ बच्चन हो या फिर गोविन्दा उनकी सभी के साथ ऐसी रंगत मिलती थी जैसे दूध में पानी।

कब्रिस्तान में करते थे रियाज

बॉम्बे में कादर खान के घर के पास एक यहूदी कब्रिस्तान था, जहां बैठकर अक्सर वे संवाद अदायगी का रियाज करते थे। मां नमाज पढ़ने के लिए मस्जिद भेजती थी लेकिन वे कब्रिस्तान चले जाते थे। एक रात रियाज के दौरान उन्हें थियेटर आर्टिस्ट अशरफ खान मिले जिन्होंने उनको नाटक में काम करने के लिए राजी किया। इसके बाद उनके कदम थिएटर की ओर बढ़े। कहा जाता है कि कब्रिस्तान से ही उनके कॅरियर की शुरुआत हुई। कॉलेज की एक नाटक प्रतियोगिता में उन्हें दिलीप कुमार ने देखा। इस प्रतियोगिता में कादर खान को बेस्ट राइटर का पुरस्कार मिला। दिलीप उनसे इतने प्रभावित हुए कि अपनी फिल्म 'सगीना' व 'बैराग' के लिए उन्हें साइन किया। वैसे कादर खान ने 1973 में राजेश खन्ना के साथ फिल्म 'दाग' से अपने फिल्मी कॅरियर की शुरुआत की। अभिनेता बनने से पहले 1972 में उन्होंने रणधीर कपूर-जया बच्चन अभिनीत फिल्म 'जवानी दीवानी' के लिए संवाद लिखे।

काबुल में जन्मे और भारत में पले-बढ़े

अफगानिस्तान के काबुल शहर में कादर खान का जन्म हुआ। उनके तीन भाइयों की मौत के बाद माता-पिता भारत आ गए। तब उनकी उम्र केवल एक साल की थी। यहां आते ही माता-पिता इकबाल बेगम व अब्दुल रहमान खान के बीच तलाक हो गया। सौतले पिता के साथ उनका बचपन गरीबी में कटा। वे सिविल इंजिनियर का डिप्लोमा कर मुंबई में एक कॉलेज में पढ़ाने लगे। उनके जीवन में बड़ा मोड़ तब आया जब 1974 में मनमोहन देसाई और राजेश खन्ना के साथ उन्हें फिल्म 'रोटी' में काम करने का मौका मिला। कहते हैं कि शुरुआत में देसाई ने कादर खान पर तंज कसते हुए कहा कि तुम क्या डॉयलाग लिखोगे, हमें ऐसे डायलॉग चाहिए जो सुनते ही लोगों की जहन में अनायास ही उतर जाएं। इस तंज के बाद उन्होंने जो डायलॉग लिखे वे देसाई को इतने पंसद आए कि वे घर के अंदर गए और तोशिबा टीवी, 21000 हजार रुपए के साथ अपना ब्रेसलेट भी उनको तोहफे में दे दिया।

बॉलीवुड हुआ दुःखी

कादर खान के निधन पर अमिताभ बच्चन सहित कई फिल्मी सितारों ने दुख जताया। पुत्र सरफराज ने कहा कि हमारे पिता भाग्यशाली थे। उनके तीनों बेटों ने उनका बराबर ध्यान रखा। कादर खान के साथ गोविंदा ने करीब 41 फिल्मों में काम किया। दोनों की जोड़ी ने दर्शकों को खूब हंसाया और रुलाया। कादर खान कभी गोविंदा के पिता बने तो कभी ससुर। ये जोड़ी हमेशा नंबर वन रही। कादर खान के निधन के बाद गोविंदा ने ट्वीट किया था कि 'वे मेरे उस्ताद ही नहीं बल्कि पिता के समान थे। उनके जाने से मैं बहुत दुखी हूं और फिल्म जगत का हर शख्स दुखी है।' अमिताभ बच्चन ने भी अपने ट्वीट में कादर खान के जाने का दुख जाहिर किया। अमिताभ ने लिखा कि वे प्रतिभा के धनी और फिल्मों के लिए समर्पित कलाकार थे। वे गजब के लेखक थे और मेरी ज्यादातर कामयाब फिल्में उन्हीं ने लिखीं।

– रमेश गोस्वामी

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. महावीर सिंह परिहार
एम.एस. (आर्थो)
अस्थि रोग विशेषज्ञ
मो. 94141 62139

S H
R C

डॉ. श्रीमती सुमन परिहार
एम.एस. (सर्जरी)
महिला शल्य चिकित्सक
मो. 98297 91760

श्रीनाथ हॉस्पीटल एण्ड रिसर्च सेन्टर

उपलब्ध सुविधाएं

- आर्म (टेलिविजन) द्वारा आधुनिकतम तरीके से हड्डी के फ्रेक्चर की ऑपरेशन सुविधा।
- स्तन सम्बन्धी रोगों (गाठ, केंसर) का इलाज व निदान।
- एपेन्डिक्स, हर्निया एवं पथरी, बच्चेदानी का ऑपरेशन।
- हड्डी के सभी प्रकार के आधुनिक ऑपरेशन।
- नेलिंग-प्लेटिंग, प्रोस्थेसिस इत्यादि।
- जन्मजात विकलांगता एवं पोलियो के ऑपरेशन।
- प्लास्टर
- एक्स-रे

ऑपरेशन एवं भर्ती की सुविधा उपलब्ध

9, फतहपुरा चौराहा, उदयपुर- 313004 (राज.)

Rupi's Resort

UDAIPUR - INDIA

Rupi's Resort is located adjoining Maharana Pratap Airport, Dabok also known as the Udaipur Airport. The hotel offers two star facilities and is near the main tourist attractions of Udaipur, the city of lakes and palaces. The rooms at the hotel are clean and spacious. The hotel is near many crafts bazaars where you can shop for souvenirs to take back home with you. It is well known for its personalized services and cozy environment. It is a peaceful place to unwind.

The Resort's convenient location, exceptional and personalized services has made it a popular choice among the guests. The Resort is a pleasant place with a cozy atmosphere and top level services. It is popular among both the business and leisure travelers for its excellent accommodation facilities, business facilities and fine dining. Hotel is an excellent value for money.

Facilities offers like Gym, Free WiFi, Swimming Pool, Travel Desk, Cyber Cafe, Money Exchange, Safe, Health Center Laundry, Car Rental, Indoor Games, Parking, Doctor on Call, Children Park with Swings, Garden, Laundry and 24 hours Room Service. It also provides a Conference Hall for meetings, conventions and gatherings. The indoor venue includes an air-conditioned auditorium with perfect ambiance to highlight the occasion.

RUPI'S RESORTS (I) PVT. LTD.

Adjoining Airport, Dabok, Udaipur (Rajasthan) INDIA
Phone No.: +91-294-656141-43, Fax: +91-294-2655984
Mobile No.: +91-76655543280
e-mail: info@rupisresort.com
Website: www.rupisresort.com

हसीना की दमदार वापसी

बांग्लादेश में शेख हसीना की सत्ता फिर कायम, अवामी लीग ने किया क्लीन स्वीप, 288 सीटों पर जमाया कब्जा, विपक्ष के खाते में आई महज सात सीटें

– रेणु शर्मा

साल 1971 का वक्त था जब भारतीय सेना की मदद से बांग्लादेश (पूर्वी पाकिस्तान) पाकिस्तान से एक हिंसक संघर्ष कर रहा था। वहां आम लोगों की एक बड़ी तादाद शरणार्थियों में तब्दील हो चुकी थी। इस युद्ध के बाद बांग्लादेश नए राष्ट्र के रूप में अस्तित्व में आया। इसी स्वतंत्रता संग्राम ने भारत से उसके संबंधों की नींव रखी। 15 साल के सैन्य शासन के बाद 1990 में वहां लोकतंत्र स्थापित हुआ लेकिन फिर भी राजनीतिक स्थिति नाजुक बनी रही। मौजूदा दौर में बांग्लादेश की सियासत दो महिलाओं के इर्द-गिर्द ही घूमती रही है। पहली 1971 के स्वतंत्रता संग्राम के नायक शेख मुजीबुर्रहमान की बेटी शेख हसीना और दूसरी इसी संग्राम में सेना के जनरल रहे जिया-उर रहमान की विधवा खालिदा जिया। खालिदा एक मामले में जेल में हैं और शेख हसीना लगातार तीसरी बार प्रधानमंत्री की कुर्सी हासिल करने में कामयाब रही हैं।

उनकी सत्ताधारी पार्टी अवामी लीग और उसके सहयोगियों ने चुनावों में एकतरफा जीत दर्ज करते हुए 300 में से 288 सीटें अपने नाम की। जबकि खालिदा जिया की बांग्लादेश नेशनलिस्ट पार्टी की अगुवाई वाले विपक्षी गठबंधन को महज सात सीटें हासिल हुई। बांग्लादेश के चुनाव में इस दफा पहली बार ईवीएम का इस्तेमाल हुआ। इधर, विपक्षी दलों ने फिर से मतदान कराने की मांग कर डाली। बांग्लादेश की संसद को जातीय संसद कहा जाता है। इसमें तीन सौ पचास सदस्य होते हैं जिनमें से तीन सौ सांसद चुनाव के जरिये जबकि बची हुई पचास सीटें महिलाओं के लिए आरक्षित होती हैं। जिनका चयन सत्ताधारी दल या गठबंधन करता है। माना जाता है कि बांग्लादेश में गरीबी की जड़ें गहरी और व्यापक रही लेकिन शेख हसीना के कार्यकाल में आबादी की रफ्तार घटी है और स्वास्थ-शिक्षा के क्षेत्र में भी सुधार हुए हैं। भारत की राजदूत रही वीना सीकरी का कहना है कि बांग्लादेश ने पिछले दस साल में अच्छी आर्थिक तरक्की की है। भारत के लिए हसीना की जीत सकारात्मक है। चार हजार किमी की सीमा के साथ भारत और बांग्लादेश बहुत कुछ साझा करते हैं। बांग्ला भाषा की वजह से दोनों देशों में सांस्कृतिक समानता भी है, जहां खालिदा की बीएनपी को कुछ मामलों में भारत विरोधी माना जाता है। वहीं अवामी लीग का रुख भारत समर्थक रहा है। अवामी लीग की विचारधारा 1971 पर आधारित अर्थात वह बांग्ला भाषा और बांग्ला राष्ट्रवाद को अहमियत देती है। लीग इस्लाम के खिलाफ नहीं हैं लेकिन बीएनपी इस्लाम को अधिक महत्व देती है और कहा जाता है कि उसकी विचारधारा 1947 जैसी है। जिसका एक पहलू ये है कि हिंदू और मुसलमान एक साथ नहीं रह सकते। इसका एक नतीजा ये होता है कि भारत के साथ अच्छे संबंधों में उनकी इतनी रुचि नहीं होती और वे खुद को पाकिस्तान के ज्यादा करीब देखते हैं। बांग्लादेश की 16 करोड़ की आबादी में 10 फीसदी आबादी अल्पसंख्यकों की है। इनमें 8 से 9 फीसदी हिंदू समुदाय है। बड़ी बात ये है कि इस बार भारत ने और दोनों प्रमुख पार्टियों ने अपने चुनाव प्रचार में एक दूसरे से दूरी बनाई रखी। लेकिन हसीना की जीत भारत के लिए एक सकारात्मक घटना है।

राजनीतिक खतरा टला

बांग्लादेश में एक मजबूत राजनीतिक ताकत का होना भारत के लिए अच्छा है। खासकर उस वक्त जब इसकी कमान एक ऐसे व्यक्ति के हाथों में हो जो आतंकवाद के मुकाबले और उग्रवाद एवं सीमा पार नापाक गतिविधियों के मुद्दों पर भारत के साथ सहयोग के लिए प्रतिबद्ध हो। 2001 से 2006 के बीच बीएनपी शासन के दौरान उग्रवाद के खतरों का सामना करने के लिए भारत की आंतरिक सुरक्षा एजेंसियों को अतिरिक्त प्रयास करने पड़े थे। ढाका में शेख़ हसीना की अवामी लीग के सत्ता में बने रहने को बांग्लादेश सीमा अपेक्षाकृत शांत और सुरक्षित मानी जाती है। बांग्लादेश चीन की 'वन बेल्ट वन रोड' परियोजना का हिस्सा है।

उसने चटगांव-कुनमिंग सडक़ संपर्क जैसी नई परियोजनाओं के लिए भी चीन से मदद मांगी है। द्विपक्षीय समझौतों के अलावा चीन 9.45 अरब डॉलर की लागत से बांग्लादेश को 8 परियोजनाएं दे रहा है। इनमें पद्मा नदी पुल, पायरा बिजली संयंत्र और चटगांव में खुले समुद्र वाली आर्थिक परियोजनाएं शामिल हैं। 1999 की कुनमिंग पहलकदमी जिसे बाद में चीन-बांग्लादेश-भारत-म्यांमार आर्थिक गलियारे का रूप दे दिया गया था, अब 'वन बेल्ट वन रोड' और चीन की आर्थिक सहायता से संबद्ध बड़ी परियोजनाओं के मुकाबले उतनी महत्वपूर्ण नहीं रह गई है। चीन द्वारा बांग्लादेश को दो मिंग-क्लास पनडुब्बी बेचे जाने तथा सामरिक साझेदारी के तहत अन्य सैनिक सहयोगों के कारण दोनों देशों के बीच आर्थिक संबंधों में एक सैन्य पहलू जुड़ गया है। भारत ने 2010 से 2014 के बीच आसान शर्तों पर बांग्लादेश को एक अरब डॉलर का ऋण दिया था। 2017 में मोदी सरकार ने 5 अरब डॉलर की सहायता की घोषणा की जिनमें से 500 मिलियन डॉलर रक्षा उपकरणों की खरीद पर खर्च होंगे। क्षेत्र में शक्ति संतुलन के लिए जारी प्रतिस्पर्द्धा में भारत बांग्लादेश में अपनी रणनीतिक जमीन गंवाने का जोखिम मोल नहीं ले सकता। यहां वे चीन से सीधे मुकाबले में है और सहयोग पर बातचीत कर रहा है। श्रीलंका की तरह ही बांग्लादेश के भू-सामरिक महत्व के मद्देनजर भारत के लिए जरूरत चुनौतियों को अवसरों में बदलने की तथा वाणिज्य, सुरक्षा और सामरिक क्षेत्रों में व्यापक पहलकदमियों के जरिए अपना प्रभाव क्षेत्र बढ़ाने की है। हिंद महासागर का द्वार होने के अलावा बांग्लादेश प्रधानमंत्री मोदी की 'लुक ईस्ट, एक्ट ईस्ट' नीति की सफलता की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है।

वनडे कप्तान अब एमपी मुर्तजा

पीएम हसीना ने दक्षिण पश्चिमी गोपालगंज सीट से चुनाव लड़ा था। 229539 वोट पाकर विजेता बनीं। प्रतिद्वंदी बीएनपी उम्मीदवार को महज 123 मत मिले। इस दौरान कई जगहों पर हुई हिंसा में एक सुरक्षाकर्मी सहित 18 लोग मारे गए और 200 से ज्यादा घायल हुए। बांग्लादेश के स्टार क्रिकेटर और वनडे टीम के कप्तान मशरफे मुर्तजा ने भी इस चुनाव के जरिये राजनीति में अपना शानदार डेब्यू किया है। बांग्लोदश के 11 वें आम चुनाव में मुर्तजा ने नरैल सीट से बड़े वोट अंतर से जीत हासिल की। आवामी लीग ने नरैल-2 निर्वाचन क्षेत्र से प्रत्याशी बनाया था। वे कुल 2 लाख 74 हजार 418 वोट मिले। जबकि उनके करीबी प्रतिद्वंद्वी को सिर्फ आठ हजार वोट ही मिले।

Pushkar Chandaliya

With Best Compliments

MOTOROLA
WIRELESS SYSTEM

PYROSON ELECTRONICS

Industrial Electronic & Wireless System

72, Main Road Ayad, Udaipur (Raj.)
Telefax: 0294-2422633/9414167533
Email: pyrosonudaipur@rediffmail.com
Website: www.pyroson.com

जमीन के नीचे बसा शहर कूबर पेडी

दक्षिणी आस्ट्रेलिया में बसा शहर केपीटल ऑफ द वर्ल्ड कहलाता है

– रक्षा नागदा

दक्षिणी ऑस्ट्रेलिया में एक छोटा सा शहर है कूबर पेडी। यहां बिताया एक दिन भी जन्नत सा अहसास करवाता है। ये शहर आम शहरों की तरह जमीन पर नहीं बल्कि जमीन तल से नीचे है अर्थात यहां लोग अंडरग्राउंड घरों में रहते हैं। ओपल की खाली खदानें होने के बाद लोगों ने यहां अपने घर बनाने शुरू कर दिए थे। बाहर से देखने पर ये शहर साधारण दिखता है लेकिन अंदर से सर्व सुविधायुक्त है। इस क्षेत्र में ओपल की प्रचूर मात्रा होने से शहर को ओपल केपिटल ऑफ द वर्ल्ड के नाम से भी जाना जाता है। ओपल एक दूधिया रंग का कीमती पत्थर है। कूबर पेडी को पहली बार देखने पर लगता है जैसे किसी फिल्म का सेट हो वह। सैंडस्टोन (बलुआ पत्थर) से घिरी जमीन में दूर-दूर तक हरियाली का नामो-निशां नहीं है। जमीन भूरी और लाल रंग की है। यहां लोगों का बसना फरवरी 1915 से शुरू हुआ। उसी के बाद अस्तित्व में आया यह गांव। इस भूतल के ऊपर कोई निर्माण ही नहीं है, फिर भी अधिकतर लोग जमीन के नीचे ही रहना पसंद करते हैं।

विपरीत रहता है मौसम

कूबर पेडी में हमेशा बहुत गर्मी रहती है। सालाना एवरेज तापमान यहां का 27.5 डिग्री सेल्सियस रहता है। दुनिया के अधिकतर हिस्सों में दिसंबर से फरवरी के बीच सर्दियां पड़ती हैं लेकिन कूबर पेडी में ये निष्ठुर गर्मी का मौसम होता है। तापमान 47 डिग्री पार कर जाता है। ऐसे समय में लोगों के अंडरग्राउंड घर काम आते हैं। हालांकि, शेड में भी तापमान 35 डिग्री तक रहता है, लेकिन फिर भी ये काफी गर्म है और यहां के लोगों के लिए रात का समय ज्यादा बेहतर समय होता है। इस इलाके में बारिश काफी कम होती है। औसत बारिश सालाना 130 मिमी के आसपास होती है। इसलिए जमीन के नीचे बने घरों को कोई दिक्कत नहीं होती है लेकिन 1929, 1973 और 2014 में यहां 24 घंटे में ही इतनी बारिश हुई थी कि बाढ़ जैसे हालात बन गए थे।

जमीन के नीचे जिंदगी

कूबर पेडी में लोगों की जिंदगी बेहद सरल है। खेलकूद और पार्टियों जैसे काम रात में ज्यादा होते हैं। यहां की अर्थव्यवस्था ओपल की खदानों और सैलानियों पर निर्भर है। यहां की जनसंख्या बेहद कम है। यहां बने 1500 घरों मे करीब साढ़े 3 हजार लोग रहते हैं। डिस्ट्रिक्ट काउंसिल के मुताबिक इनमें से करीब 60 प्रतिशत लोग यूरोपीय हैं। इतने कम लोगों में भी

करीब 45 देशों के लोग मिल जाएंगे। लोकल गोल्फ कोर्स यहां बहुत लोकप्रिय है। इसे अधिकतर रात में ही खेला जाता है। लेकिन कभी-कभी ठंडे दिनों में भी लोग इसका मजा लेते हैं। क्योंकि यहां पेड़-पौधों का जीवन बहुत कम है इसलिए यहां गोल्फ कोर्स में सिर्फ बंजर जमीन ही है। रात में गोल्फ चमकदार बॉल से खेला जाता है।

पेड़ लगाने की चलाई थी मुहिम

यहां तो घास भी रॉयल्टी की तरह है। कूबर पेडी में गोल्फ खेलने के लिए घास के चौकोर गत्ते दिए जाते हैं। कुछ समय पहले यहां के बाशिंदों ने पेड़ लगाने की मुहिम चलाई थी और उसका नतीजा है कि यहां अब कुछ पेड़ दिखने लगे हैं।

ऑस्ट्रेलिया के सुदूर रेगिस्तान में बसे इस शहर में लोग अपनी पूरी जिंदगी जमीन के नीचे ही गुजारना पंसद करते हैं

इससे पहले शहर का सबसे बड़ा पेड़ था मेटल का बना एक स्टैचू। ये शहर ओपल माइनिंग के लिए दुनिया की सबसे अच्छी जगह मानी जाती है। दुनिया में दूधिया पत्थर की 70 प्रतिशत खेप यहीं से पहुंचाई जाती है। यहां का आम आदमी इन्हीं खदानों से कमाई करता है। यहां दूधिया पत्थरों से बने मोती भी पाए जाते हैं।

सैलानियों को आकर्षित करता कूबर

यहां सिर्फ अंडरग्राउंड घर नहीं बल्कि अंडरग्राउंड होटल भी हैं जो सैलानियों को काफी आकर्षित करते हैं। अलग-अलग बिल्डिंग और घरों के अंदर सभी सुविधाएं मौजूद हैं। आलम ये है कि लोगों ने अलमारियां भी अपने हिसाब से डिजाइन की हैं।

ऐसे बनाया जाता है घर

अंडरग्राउंड घर बनाते समय सबसे पहले सुरक्षा का सवाल उठता है। ऊपर चलने वाले लोग, गाडियां या पास ही होने वाली माइनिंग गतिविधियों से घर की छत के गिरने का बड़ा खतरा रहता है। इन्हें बनाने के लिए न सिर्फ इंजीनियरिंग बल्कि पुराने जमाने में बने शहरों से प्रेरणा ली गई। घरों को बनाने के लिए सैंड स्टोन में धमाका कर गड्ढा बनाया जाता है। फिर हर कमरा गोलाकार डिजाइन में बनाया जाता है। इसमें चर्च से लेकर दुकानों तक सभी कुछ है। इस शहर को टूरिस्ट स्पॉट की तरह अभी भी सही हालत में रखा गया है। पहले सुदूर इलाका होने के कारण कूबर पेडी में बिजली की समस्या रहती थी लेकिन अब उस शहर के लिए अपनी विंड मिल और सोलर प्रोजेक्ट है। इसलिए उसकी समस्या भी नहीं बची है। अंडरग्राउंड होने के कारण यहां के लोगों को एयरकंडीशन या किसी भी तरह के क्लाइमेट कंट्रोल की जरूरत नहीं रहती है।

Vinod Jain
9414158354

Mahaveer Lal Jain
9460794827

With Best Compliments

Navkar Metal

Navkar Steel

Deals In :
Steel Brass Copper,
Aluminium Utensils, Gift Artices
& Cooker Parts

7, Bhang Gali, Inside, Surajpole
Udaipur (Raj.) Ph. : 0294-2417354

Deals In :
Steel Brass Copper,
Aluminium Utensils, Gift Artices
& Cooker Parts

6, Chkla Bazar, Under Chittora Temple
Bhupalwadi
Udaipur (Raj.) Ph : 0294-2420579

सरकारी वसंत

– डॉ. देवेन्द्र इन्द्रेश

लो, आ गया वसंत। इस बार वसंत 'बनन में, बागन' में नहीं, बल्कि सरकारी दफ्तर, सरकारी कोठी, सरकारी अफसर, सरकारी चपरासी तथा मंत्री से लेकर संतरी तक मुखरित है। छोटे सरकार से लेकर बड़े सरकार तक वह मधु सौरभ लुटा रहा है। सत्ता के इस वसंत में सभी बौराये हैं।

गज सी मदमस्त चाल से चलते वसंत ने हर मोबाइल पर अपने आगमन का मैसेज दे दिया है। लो भैया, मैं आ गया। अब पीयो, खेलो और खाओ। डकार लो देश की मुद्रा और विदेश का टिकट कटवा लो।

सरकारी वसंत हाय! हैलो के बाद पहुंच गया संत जी की सीखचों वाली कुटिया पर। वह मुस्कराया और संत से बोला – यहाँ आ रहा है परम आनन्द? संत जी तुमको वसंत वैसे भी खूब भाता है और उसी की कृपा से यहीं मोक्ष भी मिल जाएगा।

सरकारी वसंत की सुवासित वायु गैस घोटाले के रूप में सर्वत्र फैल गयी है। सरकारी वसंत फिर भी खुश। उसकी आनन्द दायिनी सुवासित बयार को क्या कोई रोक सकता है। सरकारी वसंत की सुवासित गंध पहुंच गयी उस निर्वाण स्थली में जहां भगवान बुद्ध ने ज्ञान प्राप्त किया। वहां सरकारी वसंत ने अपने अलौकिक ज्ञान को विकीर्ण किया कि पशुओं के खाद्य-पदार्थ को भी हजम कर जाओ और अपना तन-मन भी पशु सा पुष्ट कर लो।

सरकारी कोठियों पर वसंत ऐसा छाया कि तमाम वासंती रंग में रंग गयी। सरकारी वसंत के आने का सबको पता तो चलना चाहिए न। रंग-बिरंगे देशी-विदेशी गुलाबों तथा वृक्षों से कोठियों को वसंतमय कर दिया गया। लगता है कि सरकारी वसंत इस सुसज्जित लॉन में अपनी पीतवर्णा तन्वंगी वासंती के साथ शेम्पेन का चषक लिए केलि-क्रीड़ाएं कर रहा है।

सत्ता वसंत से पहले बड़ा सरकारी ठेका देकर पेड़ भले ही कटवा दिए गए हों और जंगल को बंजर में परिवर्तित कर दिया गया हो, लेकिन सरकारी वसंत विहार के लिए सरकारी कोठियों के लॉन में मादक गंध वाले पुष्पों की कतार सजा दी गई है। जिससे सरकारी वसंत अठखेलियाँ करता पर्यावरण बचाने का राग भी अलाप सके।

सरकारी वसंत जैसे ही सरकारी दफ्तर के दरवाजे पर पहुँचा कि संतरी उसकी फुहार से मदमस्त हो गया। हथेली पर रखी सुरती अधिक जोर से मसलने लगा। सुरती की एक चुटकी मुँह में दबाकर उसने वसंत के सामने पिच्च कर दिया। संतरी के इस स्वागत से वसंत गद्‌गद् हो गया। मुँह टेढ़ा कर संतरी बोला – 'भैया वसंत हमको भी कुछ देउ ना'। वसंत ने उसकी मुट्‌ठी गर्म की और चलता बना।

दफ्तर का बाबू चाय की चुस्की लगा कर लोगों के भाग्य की जंत्री अपनी फाइल में बांधे आ धमका। संतरी से बोला – 'क्यों खींसें निपोर रहा है?'

संतरी बोला – दफ्तर में वसंत आ गया है। जल्दी पहुंचो अपनी टेबल पर।

'कौन वसंत?' सरकारी बाबू बोला।

संतरी ने कहा – 'सरकारी वसंत'।

तब तक सरकारी वसंत बाबू की जेब भी गर्म कर गया। वसंत जहाँ जहाँ गया वहाँ अपना मधुरस लुटाता गया।

अचानक सरकारी वसंत की दृष्टि एक कृशकाय बुढ़िया पर पड़ी। वह सहसा रूक गया। वह बुढ़िया उस सरकारी वसंत को मधुरस लुटाते देख रही थी। उसने कहा – बेटा, 'मैं भारत माता हूँ। मेरी यह हालत इन्हीं सरकारियों ने बनाई है। तूने इन्हीं को अपना सारा मधुरस लुटा दिया? तू इनको ही निरंतर मालामाल कर रहा है। कब तक इनको राग-रंग लुटाता रहेगा?'

सरकारी वसंत ने कहा – 'माई तू चिन्ता मत कर। इनका भी 'बस अन्त' आने ही वाला है। यह कह वह लोप हो गया।'

'जीत' का सु वर्ण आरक्षण

गरीब सवर्णों को मिलेगा आरक्षण का लाभ, मोदी का कदम बजंर होती सियासी जमीन पर करेगा उर्वरक का काम, समाज में आएंगे कई बदलाव

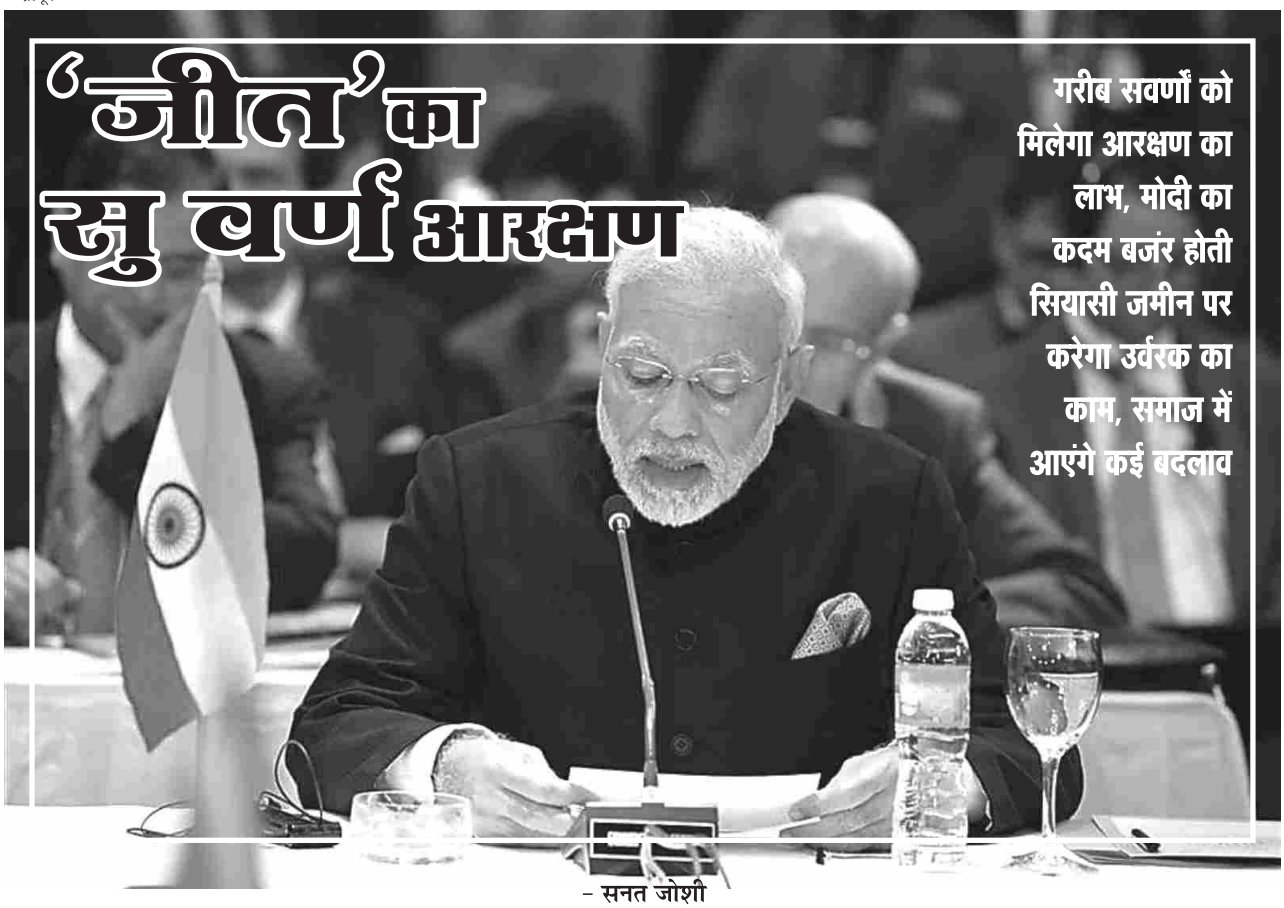

– सनत जोशी

सरकार के सवर्ण आरक्षण का प्रकटीकरण भी नोटबंदी वाले अंदाज में हुआ। इसलिए क्योंकि नोटबंदी की ही तरह ज्यादातर मंत्रियों को इस आरक्षण की पहले से कोई जानकारी नहीं थी। आर्थिक रूप से पिछड़े सवर्णों को 10 फीसदी आरक्षण देने के संविधान संशोधन विधेयक का प्रपोजल सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्रालय द्वारा महज एक दिन में तैयार करना और राज्य सभा सत्र को एक दिन आगे बढ़ाना निश्चय ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का मास्टरस्ट्रोक है। राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ विधानसभा चुनाव में भाजपा की हार के नासूर से लगातार खून रिस रहा था। रिस इसलिए रहा था क्योंकि भाजपा को लगातार जीत का चस्का लगा था और उसे अब हार नसीब हो रही थी। लोकसभा के फाइनल मुकाबले से पूर्व पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव में हार का मतलब ये भी निकाला जा रहा था कि भाजपा का जनाधार खिसक रहा है और मोदी के नाम की हवाएं रूख बदल रही हैं। ऐसे में भाजपा इसकी काट निकालने के लिए बिना मुंडेर के कुएं में उलझी रस्सी का मुंह ढूंढ रही थी। ऊपर से राम मंदिर मामले में चौतरफा घेराव और राफेल पर विपक्ष के लगातार आरोपों की बौछारों का सामना करने के लिए कुछ तो सनसनीखेज करना ही था। लोकसभा की बैठक भी अपने अंतिम चरण में थी।

8 जनवरी को लोकसभा की अंतिम बैठक में केंद्रीय कैबिनेट ने गरीब सवर्णों के लिए 10 फीसदी आरक्षण का फैसला लेकर राजनीतिक गलियारों में तूफान ला दिया। कहा जाता है कि बिहार विधानसभा चुनाव के समय मोहन भागवत के आरक्षण वाले बयान ने बिहार में मतदाताओं का उर्ध्वाधर विभाजन कर दिया था। वैसे आरक्षण के मसले को तकरीबन हर चुनाव से पहले आंच दी जाती है लेकिन इस बार भाजपा ने इसकी आंच को न केवल तेज किया बल्कि खिचड़ी पकाकर गरीब सवर्णों की थाली में 10 प्रतिशत आरक्षण के रूप में परोस भी दी। इस फैसले का एक कारण यह भी माना जा रहा है कि सवर्णों के दरवाजे पर दस्तक देते वक्त भाजपा को कई दिनों से लग रहा था कि दलित उत्पीड़न कानून के समर्थन से उसके परंपरागत सवर्ण वोट बैंक के दरवाजे एक-एक कर के बंद होने लगे है। मध्यप्रदेश में शिवराज के 'कोई माई का लाल आरक्षण खत्म नहीं कर सकता' वाले बयान के बाद सवर्णों के संगठन सामान्य, पिछड़ावर्ग अल्पसंख्यक कल्याण समाज (सपाक्स) ने आंदोलन की राह अख्तियार ली थी। हालांकि एमपी विधानसभा चुनाव में सपाक्स की सियासी जमीन पूरी तरह से उजड़ चुकी थी लेकिन उसकी चेतावनी ने भाजपा के पसीने जरूर छुड़वा दिए। इन कारणों से मोदी सरकार के लिए सवर्णों को साधना जरूरी हो गया था। राजनीतिक विशेषज्ञ इसे चुनावी पैंतरा बताते हैं। वे कहते हैं कि ऐसा ही तीर यूपीए सरकार ने भी चलाया था जब उसने अल्पसंख्यकों को 4.5 फीसदी आरक्षण देने का ऐलान किया था। लेकिन वह फैसला अदालत में जाकर अटक गया। कोर्ट में नहीं टिकने की वजह ठोस आंकड़ों और ताजा सर्वे का अभाव था। वैसे पिछड़ेपन की पैमाइश के लिए जातिगत सर्वेक्षण जरूरी है जो 1932 के बाद नहीं हुआ। बहरहाल मोदी का यह कदम राजनीति बदलाव वाला कदम है। इस बहाने गरीब और सवर्ण भी राजनीतिक विमर्श के केंद्र में आ गए हैं। इसी के साथ निजी क्षेत्र में भी आरक्षण की मांग पुन: जोर पकड़ने लगी है। आगे चलकर आरक्षण की यह डगर क्या मोड़ लेती है कोई नहीं बता सकता। लेकिन यह न भूलें कि आरक्षण व्यवस्था का प्रावधान कुछ वर्षों के लिए किया गया था और माना गया था कि इससे समतामूलक समाज का निर्माण होगा। लेकिन यह भी लगने लगा है कि अब 'स्थायी' रूप से भारतीय समाज में आरक्षण स्थापित हो जाएगा।

अड़ंगों के आरक्षण में नहीं लगा अड़ंगा

संसदीय राजनीति में ऐसे अवसर कम ही आते हैं जब सत्तारूढ़ दल संविधान संशोधन जैसा कदम उठाए और उसके विरोधियों के पास समर्थन के अलावा कोई विकल्प नहीं हो। 124 वां संविधान संशोधन विधेयक पारित कराने के लिए सरकार को किसी विपक्षी दल को मनाने की जरूरत नहीं पड़ी। कई विशेषज्ञ ये भी मान रहे हैं कि मोदी का यह कदम केवल राजनीतिक रूप से ही उनकी पार्टी के लिए फायदेमंद नहीं होगा, बल्कि यह समाज में भी बड़ा बदलाव लाएगा।

ऐसे हुई आरक्षण की शुरुआत

देश की आजादी से पूर्व वर्ष 1932 में पुणे समझौते के तहत 148 सीटें दबे-कुचले समाज के लिए प्रांतीय सभा में और 18 फीसदी सीटें केंद्रीय कानून बनाने वाली सभा में आरक्षित की गई। 1937 में बने कानून में 'अनुसूचित जाति' के लिए सीट आरक्षण को शामिल किया। 1942 में बाबा साहब आंबेडकर ने ब्रिटिश सरकार को शिक्षा और नौकरियों में आरक्षण देने पर राजी किया। 1950 में भारतीय संविधान में अनुसूचित जाति और जनजाति के अधिकारों की रक्षा की गई और 1953 में पिछड़ी जातियों की पहचान के लिए आयोग की स्थापना की गई। 1978 में मंडल आयोग ने पिछड़ी जातियों के लिए 27 फीसदी आरक्षण की सिफारिश की। जिसे 11 वर्ष बाद वीपी सिंह सरकार ने मंजूर कर राजनीति में भूचाल ला दिया। 1955 में संविधान में 77 वां संशोधन हुआ, जिससे पदोन्नति में भी अनुसूचित जाति व जनजाति के लिए आरक्षण का प्रावधान हो गया। 1997 में खाली रह गई आरक्षित नियुक्तियों को पचास प्रतिशत आरक्षण से अलग कर अलग श्रेणियों में मानने का प्रावधान स्वीकार हुआ।

क्या है सर्वण आरक्षण का फैसला

केंद्रीय कैबिनेट के फैसले के अनुसार सर्वणों को 10 फीसदी आरक्षण आर्थिक आधार पर मिलेगा। जिनकी सालाना आय 8 लाख रुपए से कम होगी वे इस आरक्षण के दायरे में आएंगे।

फैसले के पीछे की पटकथा

1. दलित उत्पीड़न कानून पर सुप्रीम कोर्ट ने जांच होने तक किसी की गिरफ्तारी न करने का फैसला दिया था। इस फैसले पर जमकर राजनीति हुई और देशभर में बवाल मचा। 2 अप्रैल 2018 को मोदी सरकार के खिलाफ दलितों ने प्रदर्शन किया था। अलग-अलग जगह 9 दलितों की मौत हो गई। मोदी सरकार ने इस फैसले के खिलाफ अध्यादेश जारी किया। इसमें एक्ट के प्रावधानों में सख्ती लाने और दलित उत्पीड़न कानून के मूल तत्व से छेड़छाड़ न करने की बात कही। दलित विरोध के बाद मोदी सरकार के झुकने से सवर्ण नाराज हो गए।
2. बीजेपी को दलितों से एक और संघर्ष प्रमोशन में आरक्षण के मामले को लेकर झेलना पड़ा। मध्यप्रदेश की जबलपुर हाईकोर्ट ने जब सरकारी नौकरियों में प्रमोशन में आरक्षण को समानता के कानून का हवाला देकर दरकिनार किया तो शिवराज सिंह चौहान की तत्कालीन सरकार इसके खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में हलफनामा दायर कर आई। सरकार के इस कदम से नाराज राज्य के सवर्ण अफसर और कर्मचारियों ने विरोध का बिगुल फूंक दिया। विधानसभा चुनाव से पहले सपाक्स नाम का संगठन खड़ा किया। जिसने भाजपा को नाकों चने चबवाए। हद से आगे जाकर दलितों का पक्ष लेने वाली भाजपा सरकार से नाराज सवर्णों ने चुनाव में नोटा का भी खूब इस्तेमाल किया।
3. पारंपरिक रूप से सवर्णों का वोट हासिल करने वाली भाजपा को महसूस होने लगा था कि 2019 के चुनाव में अगड़ों का वोट उनसे छिटक सकता है। दलितों की शुभचिंतक बनने की कोशिश में बीजेपी को नजर आया कि इससे दलित खुश नहीं हैं और सवर्ण भी नाराज हो रहे हैं। बीजेपी के नीति निर्धारकों को साफ-साफ दिखे लगा कि दो नावों की सवारी खतरनाक हो सकती है।
4. हिंदू वोट खासकर ब्राह्मण और क्षत्रीय वोटों को साधने के लिए राम मंदिर एक बड़ा मुद्दा हो सकता था। यदि मोदी सरकार उस पर कोई ठोस पहल कर पाती। लेकिन पूर्ण बहुमत वाली इस सरकार ने इस मामले को पूरी तरह सुप्रीम कोर्ट पर छोड़े रखा। अयोध्या विवाद में सुप्रीम कोर्ट की धीमी गति से नाराज हिंदू सवर्ण भी बीजेपी को कोस रहे थे।
5. मोदी सरकार ने सवर्णों को आर्थिक आधार पर आरक्षण देने का ऐसा पासा फेंका जिसका विरोध करना हर पार्टी के लिए मुश्किल हो गया। ये वैसा ही है जैसे दलितों के लिए जातिगत आरक्षण का विरोध करना।

आरक्षण की आग से उपजी चुनौतियां

1. दलितों और पिछड़ी जातियों को आरक्षण देने के साथ-साथ देश में अलग-अलग जातियां अपने लिए आरक्षण की मांग करती रही हैं। महाराष्ट्र सरकार ने हाल ही में मराठा आरक्षण को मंजूरी दी है। इसके अलावा पाटीदार, गुर्जर और जाट आरक्षण का मामला गुजरात, राजस्थान, हरियाणा और यूपी में प्रमुखता से छाया रहा है। सवर्णों को आरक्षण देने का मोदी सरकार का फैसला आने के बाद इन जातियों से आरक्षण की मांग फिर जोर पकड़ सकती है।
2. लोकसभा चुनाव से ठीक पहले लिए गए इस फैसले को अन्य राजनीतिक पार्टियां आसानी से पचा नहीं पाएंगी। बीजेपी को सवर्ण आरक्षण का राजनीतिक फायदा न मिले इसके लिए वे एड़ी-चोटी का जोर लगाएंगी।

हमारे राज में फ्रंटफुट पर खेलेगा किसान

कांग्रेस अध्यक्ष रहुल गांधी की जयपुर में घोषणा

- प्रत्यूष/जयपुर ब्यूरो

जयपुर। कांग्रेस अध्यक्ष राहुल गांधी ने कहा कि राजस्थान, मध्यप्रदेश और छत्तीसगढ़ की हमारी सरकारों ने किसानों का कर्जा दस दिन में माफ करने का वादा सरकार बनने के दो दिन बाद ही पूरा कर दिखाया। इन तीनों राज्यों की जनता ने जो संदेश दिया है उसकी गूंज आज देश में सुनाई दे रही है। केंद्र सरकार ने कर्जा माफ नहीं किया तो 2019 में बनने वाली सरकार किसानों का कर्जा माफ करेगी। हमारी सरकार के दरवाजे जनता के लिए हमेशा खुले रहेंगे। यह बात उन्होंने 9 जनवरी को जयपुर के विद्याधरनगर स्टेडियम में प्रदेश के कोने-कोने से आए किसानों की रैली को संबोधित करते हुए कही। कांग्रेस को जनादेश देने के लिए राजस्थान की जनता का आभार जताते हुए उन्होंने कहा कि जब मोदी देश के 15 बड़े लोगों का साढ़े तीन लाख करोड़ का कर्जा माफ कर सकते हैं तो साढ़े चार साल में गरीब किसानों का कर्जा माफ क्यों नहीं कर पाए? कर्ज माफी किसानों को खुशहाल बनाने के हमारे संकल्प का पहला कदम है। हम किसानों को सशक्त बनाने के लिए नई हरित क्रांति लाएंगे और मेगा फूड पार्क, फूड प्रोसेसिंग यूनिट्स, कोल्ड चैन के विकास तथा आधुनिक तकनीक के माध्यम से किसानों का जीवन स्तर उठाएंगे। किसान देश का महत्वपूर्ण घटक है। केंद्र में हमारी सरकार बनने पर देश का किसान बैकफुट पर नहीं फ्रंटफुट पर खेलेगा और देश की प्रगति में बराबर का भागीदार बनेगा।

असली मालिक जनता : कांग्रेस अध्यक्ष ने राफेल मामले में प्रधानमंत्री को घेरते हुए कहा कि जनता की अदालत में मोदी जवाब देने से बचकर भाग रहे हैं। 56 इंच की छाती वाले मोदी बच निकले और रक्षामंत्री को आगे कर दिया। हम वादे कर सरकार में आए हैं तो निश्चित रूप से पूरा भी करेंगे। लोकतंत्र में न प्रधानमंत्री, न मुख्यमंत्री और न मंत्री बल्कि असली मालिक जनता है। इस मौके पर सीएम अशोक गहलोत ने कहा कि पांच साल तक किसानों के लिए बिजली दरें नहीं बढ़ाई जाएंगी। उनकी समस्याओं को दूर करने के लिए किसान आयोग का गठन होगा। जो किसानों की भावनाओं को समझकर उनके हित में सिफारिशें करेगा।

किसानों को नहीं करना होगा भू-रूपांतरण : गहलोत ने कहा कि किसान अपनी उपज का मूल्य संवर्द्धन कर अधिक से अधिक लाभ कमा सकें इसके लिए वे खाद्य प्रसंस्करण इकाइयां लगा सकेंगे। दस हैक्टेयर तक जमीन पर ऐसी इकाइयां स्थापित करने के लिए किसानों को भू उपयोग परिवर्तन नहीं करना होगा। लघु और सीमांत वृद्ध किसानों को भी पेंशन योजना में शामिल किया जाएगा। उन्होंने कहा कि जून तक एक लाख किसानों को लंबित कृषि कनेक्शन जारी करेंगे। राज्य सरकार राजफैड के माध्यम से कर्ज लेकर एक हजार करोड़ रुपए उपलब्ध करवाएगी। चना और सरसों की समर्थन मूल्य पर खरीद की तैयारी शुरू हो चुकी है। रैली को उपमुख्यमंत्री सचिन पालयट व पार्टी के महासचिव एवं प्रदेश प्रभारी अविनाथ पांडे ने भी संबोधित किया।

2422758 (S)
2410683 (R)
With Best Compliments
T-JEWELLERS
Gold and Silver
Ornaments & Silver utensil
233 A, Bapu Bazar, Udaipur-313001

With Best Compliments
Ashok Jain 921443927
Sanjay Jain 9414263666
Bright Home
"A" Class Govt. Contractor & Supplier
33-11KV Overhead Line Material, Industrial Lighting, HT & LT Cables,
Cable Joint Kits, Control Panels, Transformers, Switchegers, G.O.D.O. Set
247/3, Bapu Bazar, Udaipur - 313001, Ph.: 0294-2422147, E-mail : bright_home@yahoo.com

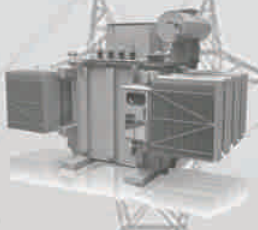

मांसपेशियों में कमज़ोरी का नतीजा है - हर्निया

– डॉ. ऋषि नायर

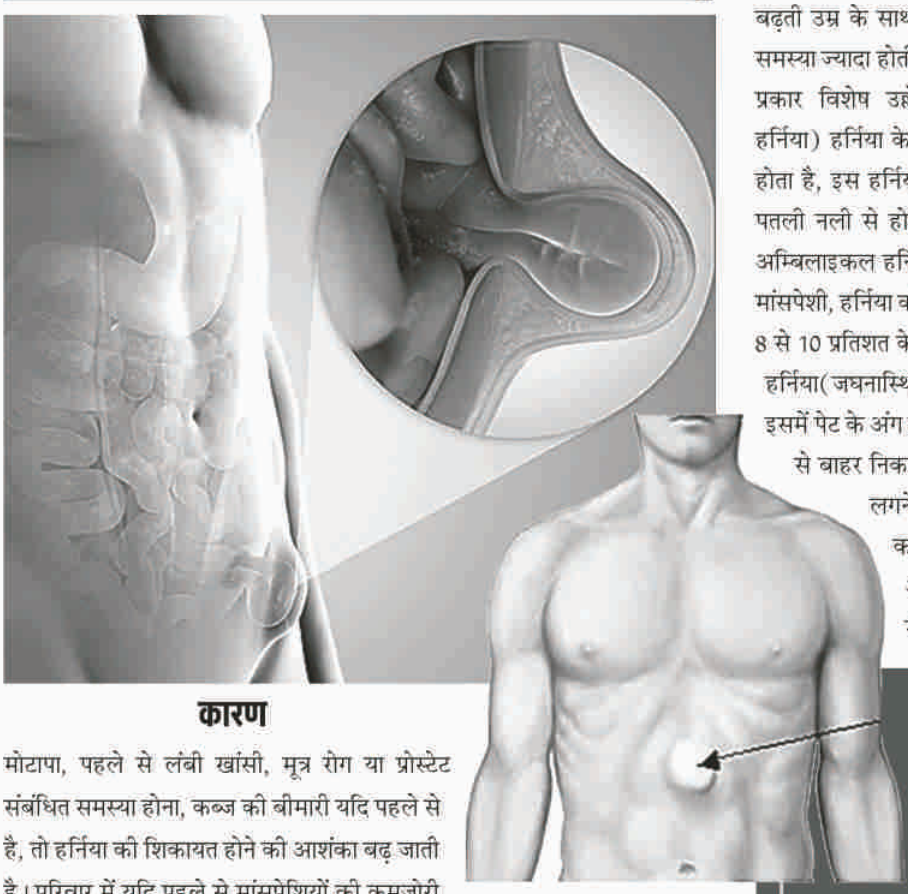

बढ़ती उम्र के साथ मांसपेशियों के कमजोर होने से हर्निया की समस्या ज्यादा होती है। हर्निया कई प्रकार के होते हैं लेकिन तीन प्रकार विशेष उल्लेखित होते हैं। इंग्वाइनल हर्निया(विक्षण हर्निया) हर्निया के लगभग 70 प्रतिशत रोगियों को यही हर्निया होता है, इस हर्निया में पेट में से आंतें या अन्य अंग, जांघ की पतली नली से होते हुए अण्डकोष में खिसक जाते हैं। दूसरा अम्बिलाइकल हर्निया(नाभि हर्निया) में पेट की सबसे कमजोर मांसपेशी, हर्निया की थैली नाभि से बाहर निकल जाती है, लगभग 8 से 10 प्रतिशत केस में यह हर्निया होता है। तीसरा इनसीजनल हर्निया(जघनास्थिक हर्निया) 10 प्रतिशत लोगों को होता है, इसमें पेट के अंग जांघ की पैर में जाने वाली धमनी में मौजूद मुंह से बाहर निकल आते हैं। सर्जरी कराने के बाद पेट में टांक लगने से मांसपेशियों के कमजोर हो जाने के कारण कई बार यह हर्निया हो जाता है। इसमें पेट के अंग कमजोर या फैली हुई मांसपेशियों में मौजूद मुंह से बाहर की ओर निकल आते हैं।

शरीर के आंतरिक अंगों का विकास बाहरी तरफ शरीर की दीवार की ओर होना ही हर्निया की समस्या है। यह मांसपेशियों में कमज़ोरी के कारण होता है। हर्निया एक ऐसी समस्या है, जिसका उपचार केवल शल्य चिकित्सा(सर्जरी) है।

कारण

मोटापा, पहले से लंबी खांसी, मूत्र रोग या प्रोस्टेट संबंधित समस्या होना, कब्ज की बीमारी यदि पहले से है, तो हर्निया की शिकायत होने की आशंका बढ़ जाती है। परिवार में यदि पहले से मांसपेशियों की कमजोरी की शिकायत हो तो यह होने की आशंका ज्यादा रहती है। कॉन्गिकल हर्निया जन्म के साथ ही नसों की कमजोरी के कारण हो जाता है। ज्यादा वजन उठाने के कारण यह समस्या हो सकती है जैसे वेट लिफ्टर्स, बोझा मजदूर को यह समस्या होने की आशंका ज्यादा रहती है।

लक्षण

जांघ, नाभि या पिछले ऑपरेशन के चीरे के निशान के पास होने वाली सूजन हर्निया का लक्षण हो सकती है। ज्यादातर इसमें कोई दर्द नहीं होता और लेटने या दबाने से यह सूजन कम भी हो जाती है। कई बार इसके लक्षण दिखाई व समझ नहीं आते। अगर आंत हर्निया की थैली में फँस जाए तो यह सूजन दबाने से भी कम नहीं होती और ऐसे में इलाज की देरी करने पर आंतों में खून की धमनियां दबाव के कारण बंद हो जाती है। ऐसे मामलों में इसकी अनदेखी जानलेवा हो सकती है।

उपचार

सामान्यत: छोटे हर्निया के मामले में चीरा लगाया जाता है। इसके अलावा उभर वाले भाग को अंदर कर क्षतिग्रस्त हिस्से को ठीक कर दिया जाता है तथा जाली लगा दी जाती है। मरीज के घाव भरने में 10 से 15 दिन का वक्त लगता है। मरीज को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि वह कम से कम दो से तीन महीने तक कोई भी भारी काम न करें। ऑपरेशन के बाद शरीर कमजोर हो जाता है। इसके दुरुस्त होने में कम से कम दो से तीन महीना लगता है।

बचाव के उपाय

- क्षमता से अधिक वजन नहीं उठाना चाहिए।
- मूत्र रोग, कब्ज या अन्य कोई पेट संबंधी समस्या या कोई भी स्वास्थ्य संबंधी समस्या होने पर समय रहते डॉक्टर को दिखाना चाहिए।
- कब्ज की समस्या को हल्के में न लेकर समय रहते इलाज कराना चाहिए।
- फाइबर युक्त आहार जैसे दाल में तुअर, चना, राजमा, फलों, सब्जियों आदि का सेवन करना फायदेमंद है।
- सही फिटिंग के आरामदायक अंतर्वस्त्रों को पहनना चाहिए।

ੴ "एक आँकार सत् गुरू परसाद"
घलै आवे नानका सदे उठी जावे

पांचवीं पुण्यतिथि

स्वर्गवास- 5 दिसम्बर, 2013

स्व. सरदार जोगिन्दर सिंह सोनी

सुपुत्र स्व. सरदार अमरीक सिंह सोनी

"आपकी यादें, आपका आभास, आपका विश्वास,
सबकुछ है हमारे पास, आपके अहसासों में।
आप तो हर पल बसे हुए हैं दिल की धड़कन में,
भीगी पलकों में.... परिवार की सासों में।।"

श्रद्धावनत्: स. गुरूप्रीत सिंह सोनी-सोनिया **(पुत्र-पुत्रवधू)**, सूरज, सागर **(पौत्र)**, चान्दनी **(पौत्री)**, स्वीटी-आर.एस. बग्गा, प्रेटी-खुशबीर सिंह, फेरी-आज्ञापाल सिंह, रीना-जसपाल सिंह **(पुत्री-दामाद)**, स. परमजीत सिंह-कमलजीत कौर **(साला-सलहज)** एवं **समस्त सोनी परिवार।**

वसंत में वासंती व्यंजन

वसंत का मौसम है। खेतों में पीली सरसों फूली है। स्कूलों में बच्चे और बाज़ारों में स्त्री-पुरुष वासंती परिधान में दिखाई दे रहे हैं। मंदिरों में कीर्तन की धूम है। लाल-पीली गुलाल उड़ रही है। ऐसे मौसम में घर में भी ऐसे व्यंजन क्यों न बनें, जो वासंती हों? इन्हें बनाना भी बहुत आसान है।

- कमला गौड़

केसरी गुझिया

सामग्री : खोल के लिए मैदा : 200 ग्राम, मोयन के लिए घी : 50 मिलीलीटर

भरावन के लिए- खोया : 100 ग्राम, पिसी चीनी : 40 ग्राम, नारियल चूरा : आधा कप, बारीक कटे बादाम : आधा कप, चिरौंजी : एक चौथाई कप, चाशनी के लिए चीनी : 1 कप, केसर की पत्ती : 8-10

सजावट के लिए-पिस्ता चूरा : 1 छोटा चम्मच, चांदी के वर्क 3-4

विधि: मैदे में मोयन डालकर मसलें। आवश्यकतानुसार पानी डालकर कड़ा गूंथ लें। भरावन सामग्री तैयार करने के लिए खोया भून लें। ठंडा होने पर शेष सामग्री मिला लें। चीनी में आवश्यकतानुसार पानी डालकर दो तार की चाशनी बनाएं। चाशनी पकाते समय केसर की पत्तियां भी डाल दें। गुझिया बनाने के लिए तैयार आटे की छोटी-छोटी लोई बनाएं। लोइयों की पतली-पतली पूरियां बना लें। पूरी पर भरावन सामग्री रखें। उसके ऊपर दूसरी पूरी रखें। दोनों पूरियों के किनारों को आपस में जोड़ते हुए किनारे बनाएं। कड़ाही में तेल गर्म करें। मंदी आंच पर गुझिया तलकर चाशनी में डालें। जब गुझिया भीग जाए, तब चाशनी से निकालकर अलग प्लेट में रखें। चांदी के वर्क लगाकर पिस्ता चूरा बुरक दें। केसरी गुझिया तैयार हैं।

पाइन एप्पल पेठा कंचे

सामग्री : पेठा : 250 ग्राम, चीनी : 250 ग्राम, खाने वाला चूना : 1 छोटा चम्मच, फिटकरी : आधा छोटा चम्मच, पीला रंग : 2-3 बूंद, पाइन एप्पल एसेंस 2 बूंद, बादाम-पिस्ता चूरा : 1 छोटा चम्मच

विधि : पेठे को छीलकर कड़ा भाग निकाल लें। कटर से उसके गोले काट लें। हर गोले को काटें द्वारा चारों ओर से गोद लें। चूना मिले पानी में उन्हें 10-12 घंटे के लिए भिगो दें। अब साफ पानी से धोकर फिटकरी के पानी में गलने तक पकाएं। ठंडे पानी से अच्छी तरह धो लें।

अब बराबर के पानी में चीनी मिलाकर पकाएं। पीला रंग और पेठे के गोले भी इसमें डाल दें। एक तार की चाशनी बनने तक पकाएं। पेठा कंचे तैयार हैं। चाशनी से निकालकर ठंडा करें। बादाम-पिस्ता चूरा डालकर सर्व करें।

केसर बादाम : कोकोनट पेड़े

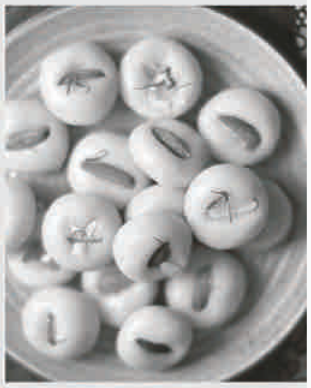

सामग्री : खोया : 200 ग्राम, नारियल बूरा : 1 बड़ा चम्मच, बादाम चूरा : एक चौथाई कप, कटे बादाम : 15-20, पिस्ता चूरा : 1 बड़ा चम्मच, चीनी : 50 ग्राम, केसर के धागे : 8-10, खाने वाला पीला रंग : 2 बूंद

विधि : केसर के धागे दूध में भिगोकर मसल लें। खोए को कसकर मंदी आंच पर भून लें। आंच से उतारकर मसले हुए केसर धागे, नारियल बूरा, पीला रंग, बादाम चूरा और पिसी चीनी मिलाएं। थोड़ा ठंडा होने पर मनचाहे आकार के पेड़े बनाएं। छुरी से दबाकर धारियां बनाएं और कटे बादाम-पिस्ता चूरे से सजाएं।

पपीते का हलवा

पका हुआ पपीता : 800 ग्राम, पिसी चीनी : 800 ग्राम, बारीक इलायची पावडर : 1 छोटा चम्मच, बारीक कटा बादाम : 1 चम्मच, कटा पिस्ता : चम्मच, मक्खन : 2 बड़े चम्मच

विधि : पपीते को काटकर छीलें और बीज निकाल दें। फिर इसके छोटे-छोटे टुकड़े करके मिक्सी में डालें और ग्राइंड करके पेस्ट बना लें। इस पेस्ट को कड़ाही में डालकर हल्की आंच पर भूनना शुरू कर दें। थोड़ा पकने पर मक्खन डालें और लगातार चलाते हुए तब तक भूनें, जब तक पेस्ट कड़ाही न छोड़ने लगे। पिसी चीनी मिलाकर आंच से उतार लें। इलायची पाउडर, कटे बादाम और पिस्ता डालकर सर्व करें।

एन. एल. मीना बने जनसम्पर्क आयुक्त

जयपुर। आईएएस नारायण लाल मीना के आयुक्त एवं शासन सचिव, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग का पदभार ग्रहण करने पर पिछले दिनों विभागीय अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने पुष्प गुच्छ देकर स्वागत किया। उन्होंने अधिकारियों से विभाग की गतिविधियों की जानकारी ली। इस अवसर पर विभाग के अतिरिक्त निदेशक पी. पी. त्रिपाठी, संयुक्त निदेशक अरूण जोशी, गोविन्द पारीक, अलका सक्सेना, उपनिदेशक शिवचन्द मीणा एवं अन्य प्रकोष्ठों के अधिकारी तथा कर्मचारी उपस्थित थे।

सीएम के तीन ओएसडी नियुक्त

जयपुर। लोकेश शर्मा, शशिकांत शर्मा, फारूख आफरीदी को सीएम का ओएसडी (विशेषाधिकारी) नियुक्त किया गया है। आफरीदी पूर्व में गहलोत के विशेषाधिकारी रह चुके है। शशिकांत पूर्व में कांग्रेस के सचिव थे।

लोकेश शर्मा

शिक्षा में नैतिक मूल्य महत्वपूर्ण

जेआर नागर विश्वविद्यालय स्थापना दिवस समारोह

उदयपुर। भारतीय संस्कृति सर्वश्रेष्ठ मानी जाती है, क्योंकि इसमें नैतिक एवं मानवीय मूल्यों का महत्व है। यह बात दिल्ली के पूर्व विधानसभा अध्यक्ष डॉ. योगानन्द शास्त्री ने राजस्थान विद्यापीठ के जनार्दनराय नागर(डीम्ड) विश्वविद्यालय के 32वें स्थापना दिवस पर कही। उन्होंने कहा कि संस्कारों से ही श्रेष्ठ संस्कृति का निर्माण होता है।

प्रारम्भ में कुलपति प्रो. एस. एस. सारंगदेवोत ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि राष्ट्र की शैक्षिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक चेतना में विद्यापीठ अपनी भूमिका को निरंतर सक्रिय बनाए हुए है। आज का दिन हमारे लिए अपने सामाजिक दायित्वों को पूर्ण रूप से भाषित करने का है। जिन मूल्यों और उद्देश्यों के लिए विद्यापीठ की पं. जनार्दनराय नागर ने स्थापना की, उनकी रक्षा ही नहीं संवर्द्धन भी किया जाएगा। केन्द्रीय विश्वविद्यालय हरियाणा के संस्थापक कुलपति प्रो. मूलचन्द शर्मा ने कहा कि नैतिक मूल्यों को जीवन में धारण करने की प्रेरणा देना आज की बड़ी आवश्यकता है। हमारे मूल्य हमारी विरासत हैं। इन्हीं की वजह से दुनिया में हमारी पहचान है। कुलप्रमुख भंवरलाल गुर्जर ने कहा कि विद्यापीठ समग्र ग्रामीण समुदाय के उत्थान के लिए कार्य कर रही है। समारोह को दिल्ली के पूर्व विधायक विनय शर्मा ने भी सम्बोधित किया। संचालन डॉ. अमि राठौड़ ने किया।

आनन्दी कलेक्टर, विश्नोई एसपी

उदयपुर। जिला कलेक्टर का पदभार आनन्दी द्वारा संभालने के बाद जिला प्रशासन में चुस्ती और फुर्ती देखी जा रही है। यह कितने दिन रहेगी, यह तो समय ही बताएगा किन्तु उन्होंने अधिकारियों की बैठकें लेकर और ग्रामीण क्षेत्रों का दौरा कर जो संकेत दिए हैं, उनसे तो यही लगता है कि वे एक तेज-तर्रार आईएएस हैं और उनसे जनता को काफी राहत मिलने वाली है। उनके पदभार संभालने पर आम नागरिकों और विभिन्न संगठनों ने दफ्तर पहुंच कर उनका स्वागत किया। वे पूर्ववर्ती बिष्णु चरण मल्लिक की जगह नियुक्त हुई हैं।

जिला कलेक्टर की बदली के साथ ही उदयपुर में कुंवर राष्ट्रदीप की जगह कैलाश चन्द्र विश्नोई एसपी बनकर आए हैं। कुंवर राष्ट्रदीप को अजमेर भेजा गया है। विश्नोई से उम्मीद है कि वे जिले के थानों के हालात में बदलाव लाएंगे। पिछले कुछ अर्से से उदयपुर में अपराधों का ग्राफ बढ़ता गया है। उन्होंने अधिकारियों की एक बैठक में अपराधियों पर कड़ी नज़र रखने, आम आदमी को तंग न करने तथा महिला अपराधों पर नकेल कसने के आदेश दिए हैं।

शिक्षा में ज्यादा शोध और नवाचार जरूरी

बदलते वैश्विक परिदृश्य में भारत को अग्रणी बनाने के लिए युवाओं को शोध क्षेत्र में सक्रिय भूमिका निभाते हुए। अनुसंधान की गति बढ़ानी होगी। जिस प्रकार आर्टिफिशियल इंटेलीजेन्स, ब्लॉक चेन टेक्नोलॉजी, बिग डेटा एनालिटिक्स और मशीन लर्निंग मानव जीवन को प्रभावित कर रहे हैं, निकट भविष्य में नौकरियों का स्वरूप पूर्ण रूप से बदल जाएगा। ऐसे में भारत को इसके लिए तैयार रहना होगा। यह बात पिछले दिनों गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोएडा के कुलपति प्रो. बी. पी. शर्मा ने पेसिफिक विश्वविद्यालय एवं एसोसिएशन ऑफ इण्डियन यूनिवर्सिटीज (एआईयू) द्वारा आयोजित रिसर्च कन्वेंशन 'अन्वेषण' के उद्घाटन पर कही। दो दिवसीय आयोजन में वेस्ट जोन के 37 विश्वविद्यालयों के 150 प्रतिभागियों ने भाग लिया। एआईयू के निदेशक डॉ. अमरेन्द्र पाणि ने कहा कि भारत में शिक्षा के क्षेत्र में कुछ नया करने की जरूरत है। फेक्ल्टी ऑफ मैनेजमेन्ट की प्रो. महिमा बिरला ने कहा कि शोधकर्ताओं को लीक से हटकर नवाचार युक्त विचारों एवं अनुसंधान को बढ़ावा देने के लिए यह मंच पूरी कोशिश करेगा।

रिपोर्ट : नितेश

सभ्यता, संस्कृति और संस्कार

मकर संक्रांति पर पहले शाही स्नान के साथ 2019 के महाकुंभ का अलौकिक आगाज, साधु-संतों सहित 2 करोड़ लोगों ने गंगा-जमुना व सरस्वती के संगम पर किया स्नान

13 अखाड़ों ने संक्रांति पर अलग-अलग समय पर किया पवित्र स्नान

40 मिनट हर अखाड़े को मिले स्नान के लिए, फिर भक्तों ने छती से लगाई गंगा मैया

49 दिन चलेगा मेला

15 करोड़ श्रद्धालु लगाएंगे डुबकी

3200 हैक्टेयर में फैला मेला क्षेत्र

90 लाख लोगों ने पौष पूर्णिमा पर किया स्नान

- सुनील पंडित

पौराणिक प्रसंग है कि माटी खा रहे कान्हा को मां यशोदा ने मुंह खोलने को कहा तो कान्हा के मुख खोलने पर उसमें पूरा ब्रह्मांड समाया दिखा। कान्हा के नन्हे से मुख में मां यशोदा को ब्रह्मांड में मौजूद नर-नारी, गंधर्व, किन्नर, नदियां, जलाशय, सागर, पेड़-पौधे, पशु-पक्षी, धरती, अंबर, अंतरिक्ष, सूर्य, चंद्र, ग्रह, आकाश-गंगा और अनंत...के दिव्य दर्शन हुए। यशोदा अचरज में पड़ गई कि क्या देखें और क्या छोड़ें? कहते है कि श्री हरि के अवतार कान्हा के श्रीमुख में एक अजब अलौकिक वातावरण की साक्षी और उसका दिव्यतम अनुभव सिर्फ और सिर्फ मां यशोदा को ही मिला है। इसके बाद जिसने भी मनुष्य रूप में जन्म लिया उसे यह कहानियां वेद-पुराण और महात्माओं के जरिये ही सुनने को मिली। इस कहानी को बीते करोड़ों साल हो गए लेकिन आज भी दिव्य घटना को सुनते है तो भाव-विभोर व आत्मतृप्त हो जाते हैं। इसके अलावा पुरातन काल से इसे अनुभव भी किया जा रहा है तो जीया भी जा रहा है। मेरी दृष्टि में कुंभ भी कुछ ऐसा ही अनुभव है। करोड़ों लोग, अनंत आस्थाएं, वैविध्य से परिपूर्ण परंपराएं, वेशभूषा, खान-पान, नियम व दिनचर्या, बोली-भाषा, सांस्कृतिक संपन्नता और भिन्न विचारधाराएं तदपि एकरूपता, एकभाव और करोड़ों की भीड़ में भी एकांत का अहसास होता है। ठीक वैसे ही जैसे श्रीहरि के मुख में दिखने वाला दिव्य ब्रह्मांड। एक मुख के अंदर सबकुछ समेटे। इस अद्भुत, अलौकिक, अकल्पनीय और विहंगम माने जाने वाले एवं संस्कृति और सभ्यता के वाहक कुंभ का आगाज मकर संक्राति पर 15 जनवरी को हुआ। सनातन संस्कृति में सैकड़ों वर्षों पुरानी अखाड़ों की परंपरा के दिव्य नजारे ने देश-विदेश से आस्था की डुबकी लगाने आए करीब 2 करोड़ लोगों को अभिभूत कर दिया। इसीलिए यूनेस्को ने इसे अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर की सूची में शामिल किया है। कुंभ के पहले दिन मुख्य आकर्षण सेक्टर-16 रहा, जहां संन्यासी परंपरा, वैरागी परंपरा और उदासीन परंपरा का निर्वहन करते हुए साधु-संत शाही स्नान के लिए निकले। पहले शाही स्नान में 15 अखाड़ों के साथ करीब 2 करोड़ लोगों ने संगम तट पर आस्था की पवित्र डुबकी लगाई।

गूंजा हर-हर महादेव का जयघोष

संन्यासी परंपरा के अंतर्गत आने वाली श्री पंचायती अखाड़ा निरंजनी, श्री पंचायती अखाड़ा आनंद, श्री पंचायती अखाड़ा महानिर्वाणी, श्री पंचायती अखाड़ा अटल, श्री पंच दशनाम जूना अखाड़ा, श्री पंच दशनाम आवाहन अखाड़ा व शंभू पंचअग्नि अखाड़ा की छावनी में भोर 4 बजे से ही हर-हर महादेव का उद्घोष होने लगा। सभी 15 अखाड़ों को संन्यासी, वैरागी और उदासीन अखाड़े में बांटा गया। सबसे पहले संन्यासी अखाड़े, फिर वैरागी और इसके बाद उदासीन अखाड़ों के साधु-संतों ने स्नान किया। हर अखाड़े को स्नान के लिए करीब 40 मिनट का समय मिला।

पहली बार किन्नर अखाड़े ने किया शाही स्नान

कुंभ के इतिहास में पहली बार मकर संक्राति पर महाकाल के उपासक किन्नर अखाड़े ने शाही स्नान किया। इससे पहले जूना अखाड़े के साथ भव्य पेशवाई निकाली गई। रथ, बग्घी पर सवार होकर आचार्य महामंडलेश्वर लक्ष्मी नारायण त्रिपाठी व अन्य महामंडलेश्वर, मंडलेश्वर त्रिवेणी तट पहुंचे। जहां जूना अखाड़े के संतों के साथ संगम में मोक्ष की कामना के लिए डुबकी लगाई और भगवान सूर्य की उपासना की। किन्नर अखाड़े को देश के सबसे बड़े अखाड़ा जूना अखाड़े में शामिल किया। यह पहला मौका जिसमें पहली बार नागा महिला संन्यासियों का समूह भी भाग ले रहा है।

ये सुविधाएं पहली बार

बच्चों के लिए : कुंभ में 14 साल से कम उम्र के बच्चों को 'रेडियो फ्रीक्वेंसी पहचान' (आरएफआईडी) टैग लगाई ताकि भीड़ में बच्चे खोन जाए। राज्य के पुलिस विभाग ने वोडाफोन से सहयोग लिया है और 40 हजार आरएफआईडी टैग लगाए। आरएफआईडी बेतार (वायरलेस) संचार का एक रूप है। इसके तहत किसी वस्तु या व्यक्ति का पता लगाने के लिए इलेक्ट्रो-मैग्नेटिक स्पेक्ट्रम के रेडियो फ्रीक्वेंसी हिस्से में विद्युत चुंबकीय (इलेक्ट्रो मैग्नेटिक) या 'इलेक्ट्रोस्टेटिक कपलिंग' का इस्तेमाल किया जाता है।

मौसम के लिए : कुंभ मेले में आने वाले लोगों को जानकारी देने के लिए प्रयागराज में चार अलग-अलग स्थानों पर स्वचालित मौसम केन्द्र स्थापित किए गए। ये प्रेक्षण केन्द्र 5-10 किमी. के व्यास में सभी चार दिशाओं में स्थापित किए गए हैं। इन केन्द्रों से तापमान, आद्रता, वर्षा और पवन संबंधी ताजा सूचना का प्रसार करने के लिए कुंभ मेला मौसम सेवा नामक एक मोबाइल एप भी विकसित किया गया है।

खोने-पाने के लिए : कुंभ मेले में लाखों की भीड़ के बीच बिछड़े किसी अपने की तलाश के लिए अब कई किलोमीटर भटकना नहीं पड़े इसके लिए खोया-पाया केंद्र स्थापित किया गया है। स्मार्ट फोन के जरिये ही लोग किसी के लापता होने की जानकारी कुंभ मेला पुलिस के खोया पाया केंद्र को दे सकें और उन्हें केंद्र को मिले बिछड़े लोगों की जानकारी भी आसानी से उपलब्ध हो सके। प्रयागराज स्टेशन व बस अड्डा समेत मेला क्षेत्र में कुल 15 डिजिटल खोया- पाया केंद्र स्थापित किए गए है। बाहर लगी बड़ी डिजिटल स्क्रीन पर सूचनाएं व तस्वीरें आसानी से देखी जा सकती हैं।

चलो कुंभ नहानी

15 जनवरी से हुई शुरुआत

6 स्नान पर्व में से दो संपन्न

15 जनवरी : मकर संक्राति (पहला शाही स्नान) संपन्न

21 जनवरी : पौष पूर्णिमा पर संपन्न

4 फरवरी : मौनी अमावस्या (दूसरा शाही स्नान)

10 फरवरी : बसंत पंचमी (तीसरा शाही स्नान)

19 फरवरी : माघी पूर्णिमा

4 मार्च : महाशिवरात्रि

हेल्पलाइन सुविधा

- कुंभ मेले के दौरान असुविधा होने पर हेल्पलाइन नंबर 1920 पर संपर्क कर सकते है।
- किसी अप्रिय घटना होने पर 100 और 101 नंबर पर कॉल करें।
- स्वास्थ्य सेवाओं के लिए 108 और अग्नि समस्याओं पर 1912 हेल्पलाइन नंबर पर संपर्क करें।

कुंभ एप में यह सुविधाएं

- सफर या स्टेशन पर हादसे की स्थिति में तत्काल आपीएफ अधिकारी को कॉल कर सकते है।
- मेला क्षेत्र में रेलवे कैंप, कुंभ स्नान, पर्व, तिथियां, स्टेशनों का मैप देख सकते है।
- फूड सर्विस और सफाई को लेकर कंप्लेन के लिए हेल्पलाइन नंबर की सुविधा उपलब्ध है।
- मेला स्पेशल ट्रेनों की टाइमिंग और लिस्ट, टिकट बुकिंग सिस्टम आदि भी।
- एप में लोकेशन और डेस्टिनेशन सेलेक्ट कर आप कुंभ मेले में अपनी मनचाही जगह पहुंच सकते है।

ऐसे पहुंचे कुंभ

- श्रद्धालु प्रयागराज पहुंचकर इलाहाबाद, नैनी जंक्शन, छिवकी जंक्शन, इलाहाबाद सिटी रेलवे स्टेशन, झूंसी रेलवे स्टेशन, प्रयाग जंक्शन व फाफामऊ जंक्शन पर उतरकर ई-रिक्शा, ऑटो और शटल बस से कुंभ मेला पहुंच सकते है।
- लखनऊ व अमौसी एयपोर्ट, वाराणसी के बावतापुर एयरपोर्ट व प्रयागराज बम रौली एयरपोर्ट पर उतरकर बस या ट्रेन से कुंभ मेले में पहुंच सकते है।
- एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन और बस स्टैंड से सटल बस सेवा मिलेगी। सटल बस जहां ड्रॉप करेगी वहां से ई-रिक्शा मिलेगा। ध्यान रखें स्नान पर्व के दिन सिर्फ सटल बस की सुविधा रहेगी।

टेंट सिटी में ऐसे करें बुकिंग

- टेंट सिटी की वेबसाइट पर जाकर टेंट की बुकिंग करा सकते है। इंद्रप्रस्थम, वैदिक टेंट सिटी और कल्पवृक्ष टेंट के अलावा अन्य ऑप्शन भी यहां मिलेंगे।
- मेले में 650 रुपए प्रति रात से लेकर 15 हजार प्रति रात के टेंट उपलब्ध है।

मनमोहक एवं सुगन्धित खुशबू जो आपके जीवन में लाये खुशहाली

250 Products Available

चेतक घोड़ा CHETAK HORSE ®

ISO 9001:2008 CERTIFIED

Archana®
Agarbatti

EXPORT QUALITY Since 1947 AGARBATTI

Registered Office :

ARCHANA AGARBATTI
NAVBHARAT INDUSTRIES

N.H. 76, Airport Road, Glass Factory Choraha,
UDAIPUR - 313001 (Rajasthan)
Customer Care Number : 0294-2492161, 2490899

E-mail : sales@archanaagarbatti.com
Website : www.archanaagarbatti.com
www.facebook.com/Archana Agarbatti

कुम्भ : परंपरा, इतिहास और आज

- पं. दयानन्द शास्त्री

परम्पराएं और संस्कृति आसानी से खत्म नहीं होती, बल्कि समय के साथ खुद को ढालकर नए ढंग से जीवन का हिस्सा बन जाती हैं। भारत के विश्व प्रसिद्ध कुंभ मेले इस बात की पुष्टी करते हुए, परम्परा में आधुनिकता का अद्भुत संगम हैं। यह एक सर्वमान्य तथ्य है कि संस्कृतियों के पनपने में मेलों और विभिन्न पर्वों का विशेष योगदान है। यदि हम यह कहें कि तीज-त्यौहारों और मेलों आदि ने ही सच्चे अर्थों में हमारे सांस्कृतिक विकास में मदद दी है और उसे हर पल जीवंत बनाये रखा है तो इसमें कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। एक ऐसा ही पर्व प्रयागराज में कुम्भ हमारे सामने है जो सिर्फ हिन्दू संस्कृति ही नहीं वरन पूरे भारतवर्ष की समस्त संस्कृतियों के उन्नयन का प्रबल प्रतीक है। इस बार यह पर्व कुछ विशिष्टताएं लिये हुये है।

प्रयागराज में 2019 का कुंभ श्रद्धालुओं के स्वागत के लिए पूरे तामझाम के साथ 15 जनवरी से उपस्थित है। पचपन दिन चलने वाले इस महापर्व के पहले दिन 15 जनवरी मकर संक्रांति के दिन संगम तट पर लाखों श्रद्धालुओं ने डुबकी लगाई। सारे अखाड़ों ने शाही स्नान भी परम्परागत शोभायात्राओं के साथ इसी दिन अपने-अपने निर्धारित समय पर किया।

'कुम्भ' शब्द का अर्थ है 'कलश'। ज्ञान का सदुपयोग भारत आदिकाल से कर रहा है। भारत भूमि संतों, ऋषियों और मुनियों के ज्ञान से परिपूर्ण भूमि है। जिसने कालिदास जैसे अज्ञानी को भी ज्ञानी बनाया। भारत राष्ट्र पूरे विश्व को अज्ञानता के अंधकार से ज्ञानरुपी प्रकाश की ओर ला रहा है। विश्व गुरू के रूप में यह राष्ट्र पहले से ही विभूषित है। जिस समय यूरोप वासी निर्वस्त्र जंगलों में भ्रमण करते हुए कच्चा मांस खाते थे। उस समय इस देश में गंगा सिन्धु के तटों पर बच्चे वेद-पुराणों का उच्चारण करते थे।

स्कंध पुराण और रुद्रयामल तंत्र और अन्य अनेक ग्रंथो में वर्णित है कि किसी समय देश के 12 स्थानों पर कुम्भ का आयोजन होता था. वैदिक युग में सिमरिया (बिहार), गुवाहाटी (असम), कुरुक्षेत्र (हरियाणा), पुरी (ओडिशा), गंगा सागर (बंगाल), द्वारिका (गुजरात), कुम्भकोणम् (तमिलनाडु), रामेश्वरम (तमिलनाडु), हरिद्वार (उत्तराखंड), प्रयाग (उत्तर प्रदेश), उज्जैन (मध्य प्रदेश) और नासिक (महाराष्ट्र) में कुंभ के मेले लगते थे। लेकिन विदेशी कुचक्रों और भारतीयों की उदासीनता के कारण देश के सबसे बड़े इन आध्यात्मिक आयोजनों में से मात्र चार (हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन एंव नासिक) को ही हम बचा पाए और 8 स्थानों पर लगने वाले कुम्भ पर्वों का लगभग लोप हो गया।

मूल संकल्पना की बात करें तो ज्योतिष में कुम्भ एक योग है। जिसमें खगोलीय रूप से जब सूर्य, चंद्रमा और बृहस्पति एक राशि में आते हैं तो कुम्भ योग बनता है, दरअसल मानव जीवन पर इन दोनों ग्रहों और चंद्रमा का विशेष प्रभाव रहता है और इस विशेष खगोलीय अवशता में गंगा में स्नान का महत्व 12 साल तक स्नान के बराबर माना गया है। इन्ही बातों के आधार पर प्रत्येक वर्ष के 12 मास में भारत की एकता और अखंडता को ध्यान में रखते हुए देश के 12 स्थानों पर नदियों के किनारे कुम्भ का संकल्प लिया गया। वर्ष के 12 मास में, 12 राशियाँ जिनमे से प्रत्येक 12 वर्ष पर बृहस्पति का शुभागमन होने से 12 -12 साल के बाद महाकुम्भ का आयोजन होने लगा। इस हिसाब से एक स्थान पर 12 साल के बाद महाकुम्भ का योग होने लगा और हर साल कहीं न कहीं महाकुम्भ का योग बनता रहा। 12 मास में एक कार्तिक मास भी है जिसमें तुला संक्रांति में

बृहस्पति का योग होने से महाकुम्भ उद्घोषित हुआ।

यह ऐतिहासिक स्वरूप उपलब्ध अभिलेखों व प्रमाणों की दृष्टि से कहीं अधिक सार्थक है। 'प्रयागदीप' के लेखक महाराज हर्षवर्धन और समकालीन चीनी यात्री ह्वेनसांग, जो सन् 629 से 645 तक भारत भ्रमण पर रहा, से सम्बद्ध एक उल्लेख ऐसा है जिसे कुम्भ की प्राचीनता के बारे में प्रस्तुत किया जाता है। हर्षवर्धन सन् 606 में कान्य-कुब्जेश्वर के महाराजा बने थे। इसी दौरान सन् 634 में ह्वेनसांग प्रयाग पहुँचा। इस वर्ष प्रयाग में त्रिवेणी के तट पर उसने एक स्नान पर्व के दौरान महाराज हर्षवर्धन को अपना सर्वस्व दान करते हुये देखा। इस घटना को ह्वेनसांग ने अपने अनुभव में विस्तृत रूप से लिखा। हालाँकि इतिहासकारों में उक्त स्नान पर्व को 'कुम्भ पर्व' मानने के बारे में मतैक्य नहीं है। फिर भी कुम्भ के इतिहास में ह्वेनसांग के उक्त संस्मरण का प्राय: उल्लेख किया जाता है। इसके पश्चात कुम्भ सम्बन्धी एक प्रमाण 13वीं सदी का मिलता है। यह उल्लेख नागा सन्यासियों और वैष्णव वैरागियों के बीच कुम्भ मेले पर हुये व्यापक संघर्ष के सम्बन्ध में है। इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने अपनी पुस्तक- 'नागा सन्यासियों का इतिहास' में इस घटना का वर्णन करते हुये उक्त कुम्भ पर्व का आयोजन वर्ष सन 1235 बताया है। इस संघर्ष में नागा सन्यासियों ने वैरागियों पर महत्वपूर्ण जीत दर्ज की थी।

कुम्भ सम्बन्धी एक विशुद्ध ऐतिहासिक प्रमाण यह है कि कुम्भ के महत्व को देखते हुये मुगल बादशाह अकबर ने हिन्दुओं की भावनाओं का आदर करते हुये सन 1564 में जजिया कर समाप्त कर दिया था। हालाँकि इस घटना के 110 वर्ष बाद दिल्ली की गद्दी पर बैठे मुगल शासक औरंगजेब ने 1678-79 में कुम्भ मेले से कुछ ही समय पूर्व जजिया कर पुन: लागू कर दिया।

कुछ धार्मिक पुस्तकों में भी कुम्भ सम्बन्धी पर्याप्त प्रमाण मिलते हैं। जैसे- 17वीं शताब्दी के दौरान फारसी भाषा की एक धार्मिक पुस्तक – 'दबिस्तान-ए-मुजाहिब' में एक कुम्भ मेले पर हुये संघर्ष का उल्लेख मिलता है। इसके अनुसार 1640 में कुम्भ पर्व पर हरिद्वार में नागा सन्यासियों और वैष्णव वैरागियों के मध्य पुन: युद्ध हुआ। इसी प्रकार मराठी भाषा की एक पुस्तक- 'गुरुचरित्र' में भी 15वीं सदी में नासिक के कुम्भ पर्व का वर्णन किया गया है। नासिक में खुदाई के दौरान एक ताम्रपत्र भी मिला था जिसके अनुसार सन् 1690 में अज्ञात कारण से पारस्परिक संघर्ष से हजारों की संख्या में वैरागी सम्प्रदाय के साधु मारे गये थे। हरिद्वार में कुम्भ मेले का एक प्रमाण सन 1678 की एक घटना का उल्लेख करता है। इस प्रमाण के अनुसार गुजरात के प्रमाणी संत महामति प्राणनाथ यहाँ के कुम्भ मेले में अपने तमाम शिष्यों सहित सम्मिलित हुये और विद्वानों से शास्त्रार्थ करके उन्होंने 'निष्कलंक बुद्ध' की पदवी प्राप्त की।

भारत अगर आज कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी और गुजरात से लेकर गुवाहाटी तक एक राष्ट्र है तो ये राजनीतिक एंव प्रशासनिक व्यवस्था एवं इस देश की धर्म प्राण संस्कृति के कारण है। इस धर्म प्राण देश की तासीर को समझने वाले कहते हैं कि कुम्भपर्व की परंपरा का लोप होना भारत की सबसे बड़ी हानि है। सिर्फ यही नहीं देश के अन्दर और बाहर के प्रत्यक्ष और परोक्ष कई आघातों ने धर्म से जुड़े हमारे मूल्यों और परम्पराओं को प्रभावित करने की कोशिशें की और किसी रूप में ये आज भी जारी है। इतिहास साक्षी है कि इस धर्म ध्वजा को उखाड़ने की कोशिशों को हर बार नाकामी ही मिली है।

वर्तमान में चार कुम्भों के बाद सबसे सटीक कुम्भ परंपरा कहीं बची है तो वो तमिलनाडु का कुम्भकोणम है। कुम्भ के कारण ही इस जगह का नाम कुम्भकोणम् पड़ा। यहां होने वाले कुम्भ को महामहम भी कहा जाता है।

महामहम कुम्भ का निर्धारण भी मुख्य चारों कुम्भों की तरह खगोलीय घटनाओं के आधार पर ही होता है। महामहम पर्व के दौरान लाखों हिन्दू कुम्भकोणम में आते हैं। इस पर्व की शुरुआत पवित्र महामहम कुंड में स्नान से शुरू होती है. जिसके पश्चात् तीर्थयात्री पवित्र कावेरी के घाटों पर जा कर डुबकी लगाते हैं। इस पर्व के दौरान कुम्भकोणम के प्राचीन मंदिरों से देवताओं की पालकियों को निकाला जाता है एवं पुरी की तरह ही एक विशाल रथयात्रा निकाली जाती है। धार्मिक ग्रंथो में कुम्भाकोणम को काशी के समान ही पवित्र बताया गया है।

पौराणिक महत्व

पर्व जितना पुरातन माना जाएगा, उसकी आधार गाथाएँ भी उतनी ही प्राचीन ठहरेंगी। यही कारण है कि इस प्राचीन पर्व-कुम्भ की मान्यताओं की बेल वेद-पुराणों तक पहुँचती है। ऋग्वेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में 'कुम्भ' शब्द की व्याख्या में कुछ ऐसे मन्त्र मिलते हैं जिन्हें परोक्षत: कुम्भ पर्व से जोड़ा जाता है। अथर्ववेद के काण्ड-19, सूक्त-53 के तीसरे मन्त्र में कुम्भ के बारे में कहा गया है-

पूर्ण कुम्भोऽधि कालं आहितस्तं, वै पश्यामो बहुधानु संतः।
स इमा विश्वास भुवनानि प्रत्यंड, कालं तमाहुः परमे व्योमन्॥

अर्थात काल यानी समय के ऊपर भरा हुआ कुम्भ रखा है और हम उसे विविध दृष्टियों से देखते हैं। ऐसे में वह अर्थात समय सभी सत्ता वालों के सम्मुख चलता है। उस काल को लोग अति उच्च रक्षा स्थान में बताते हैं।

वेदों में कुम्भ सम्बन्धी जो भी उल्लेख हैं वे प्राय: सांकेतिक ही हैं और उनसे कुम्भ पर्व की स्पष्ट व्याख्या नहीं मिलती। ऐसे में पुराण सामने आते हैं। पुराणों में विभिन्न कथाओं के माध्यम से कुम्भ पर्व की मान्यताएँ स्थापित की गई हैं। पुराणों की कथाएँ कुंभ पर्व की परम्परा को स्पष्ट करती हैं। इन कथाओं में 'श्रीमद्भागवतपुराण', व 'स्कंध पुराण' के कुम्भ प्रसंग उल्लेखनीय हैं। श्रीमद्भागवतपुराण में सागर-मंथन की जो कथा मिलती है वह प्राय: सभी पुराणों में समान रूप से थोड़े-बहुत फेर बदल के साथ विद्यमान है। कथा के अनुसार देवासुर संग्राम के मध्य अमृत प्राप्ति के ध्येय को लेकर सागर मंथन की प्रक्रिया सम्पन्न हुई। जिसके फलस्वरूप जो चौदह रत्न क्रमश: कालकूट विष, कामधेनु गाय, कल्पवृक्ष, पारिजात वृक्ष, कौस्तुभ मणि, उच्चैश्रवा अश्व, ऐरावत हाथी, अप्सरा, रंभा, वारुणि, लक्ष्मी, चंद्रमा, शंख, वैद्यराज धन्वंतरि एवं अमृत निकले, उनमें पहले ही रत्न अर्थात विष ने समस्त ब्रह्मांड में हाहाकार मचा दिया।

तब भगवान शंकर ने उसे अपने कंठ में स्थान दिया और संसार को उससे होने वाली हानि से बचा लिया। शेष अन्य रत्नों पर तो नहीं किन्तु अमृत की प्राप्ति को लेकर देवताओं और असुरों में एक बार पुन: विवाद उत्पन्न हो गया। इस अमृत कुम्भ से अमृत देवलोक और भूलोक के कुल बारह स्थानों पर कैसे छलक कर गिरा, इस सन्दर्भ में दो-तीन पुराण कथाएँ प्रचलित हैं। इनमें से एक कथानुसार आचार्य बृहस्पति का संकेत पाकर इन्द्र-पुत्र जयंत अमृत-घट छीनने में सफल रहा और उसे लेकर चतुर्दिक ब्रह्मांड में दौड़ता रहा। दैत्य भी उसके पीछे भागे। बारह दिनों तक उनमें परस्पर संघर्ष होता रहा। इसी दौरान आकाश यानी देवलोक के आठ स्थानों और भूलोक के चार स्थानों- हरिद्वार, प्रयाग, उज्जैन और नासिक में अमृत की कुछ बूँदें छलक कर गिर पड़ी। जिन घट-पलों में ये अमृतकण इन स्थानों पर गिरे, उन घड़ियों और नक्षत्र-योगों में ये चारों स्थान अमृत-तुल्य कुम्भ-तीर्थ बन गये और यहाँ कुम्भ पर्व मनाने की परम्परा विकसित हो गई। सागर मंथन की कथा का उल्लेख 'स्कंध पुराण' में भी है।

खगोलशास्त्रीय मान्यताएँ

यह तो स्पष्ट है कि अमृत की बूँदें गिरने के कारण ही उक्त चारों स्थान कुम्भ तीर्थ कहलाए लेकिन यहाँ कुम्भ पर्व कब मनाया जाए- इसकी अनेक खगोलशास्त्रीय मान्यताएँ हैं। अलग-अलग स्थानों पर विविध नक्षत्र योग ही यह बताते हैं कि किस अवधि अथवा किस दिन कुम्भ पर्व मनाया जाए। हरिद्वार में कुम्भ पर्व का योग तब पड़ता है जब बृहस्पति कुम्भ राशि में हो तथा सूर्य मेषस्थ हों। 'स्कंध पुराण' भी इस मान्यता को पुष्ट करता है-

पद्मिनी नायके मेषे कुम्भ राशि गते गुरो।
गंगा द्वारे भवेद्योग कुम्भनाम्नातदोत्तमः॥

अर्थात सूर्य मेष राशि में हो और बृहस्पति कुम्भ राशि में प्रविष्ट हो चुका हो तभी हरिद्वार में पूर्ण कुम्भ का सुयोग बनता है।

प्रयाग में यह पर्व तब पड़ता है जब सूर्य मकर राशि में और बृहस्पति वृष राशि में तथा माघ मास हो जबकि उज्जैन में इस पर्व की अवधारणा तब साकार होती है जब सूर्य मेष राशि में तथा बृहस्पति सिंह राशि में हो। उज्जैन में कुम्भ पर्व के लिये दस अन्य योग होना भी अनिवार्य है। बृहस्पति के सिंह राशि में होने से यहाँ का पर्व 'सिंहस्थ पर्व' कहलाता है। उधर नासिक में कुम्भ पर्व तब होता है जब सूर्य और बृहस्पति दोनों ही सिंह राशि में हों। इसके अतिरिक्त पूर्णिमा की तिथि और दिन बृहस्पतिवार होना भी यहाँ के पर्व की एक अनिवार्य शर्त है।

यहाँ एक ओर तथ्य उल्लेखनीय है कि चारों स्थानों पर कुम्भ पर्व के लिये जो नक्षत्र-योग निर्धारित किये गये हैं उनमें सर्वप्रमुख भूमिका बृहस्पति की है। इसे यूँ भी कह सकते हैं कि समस्त योग बृहस्पति की चाल और राशियों में उसकी स्थिति पर निर्भर करते हैं। अब चूँकि बृहस्पति 4332.5 दिनों अर्थात 11 वर्ष 11 महीने और 27 दिनों में सभी 12 राशियों में अपनी परिक्रमा पूरी करता है अत: इस वजह से सामान्यत: 48 कुम्भ पर्वों की अवधि में इसकी परिक्रमा 6 वर्ष पहले पूरी हो जाती है। इस कारण प्रत्येक शताब्दी में कोई एक कुम्भ, सामान्यत: हर आठवाँ कुम्भ बारह वर्ष के स्थान पर ग्यारह वर्ष में ही पड़ जाता है।

अखाड़ा परम्परा

महानिर्वाणी अखाड़ा वैदिक हिंदू परंपराओं के आधार पर स्थापित अखाड़ों में तीसरा सबसे बड़ा अखाड़ा है। यह एक शैव अखाड़ा है. इस अखाड़े के पूज्य साधुओं में कपिल मुनि प्रमुख थे। उन्हें ही नागा परंपरा को शुरू करने वाला भी माना जाता है। इसे अखाड़ों में सबसे पुराना माना जाता है, कहा जाता है यह अखाड़ा पहले से ही स्थापित था और आदि शंकराचार्य ने अपने जीवनकाल में पुनर्संगठित किया। महाकालेश्वर ज्योतिर्लिंग की पूजा का जिम्मा इसी अखाड़े के पास है. यह परंपरा पिछले कई साल से चली आ रही है. प्रयाग और वाराणसी इस अखाड़े के प्रमुख केंद्र रहे हैं. इसके बाद हरिद्वार को इसके संतों ने अपना प्रमुख केंद्र बनाया. ओंकारेश्वर और नासिक भी इनके प्रमुख केंद्र हैं।

अखाड़े में ये हैं प्रमुख

महानिर्वाणी अखाड़े का प्रमुख आचार्य महामंडलेश्वर की उपाधि से विभूषित होता है। उनका चुनाव अखाड़े के ही महामंडलेश्वर करते हैं. और एक बार चुने जाने के बाद साधु इस पद पर जीवनभर बने रहते हैं. फिलहाल इस अखाड़े में करीब 46 महामंडलेश्वर हैं. इसके अलावा अखाड़े में सचिव, श्रीमहंत, महंत, कारोबारी/ कोठारी और थानापति/थानेदार. अखाड़े के पांच प्रमुख साधुओं को पंचेश्वर भी कहा जाता है, जिन्हें हर कुंभ में चुना जाता है। महामण्डलेश्वर लक्ष्मीनारायण त्रिपाठी के नेतृत्व में किन्नर अखाड़ा भी पहली बार प्रयागराज कुम्भ में शामिल हुआ है।

महानिर्वाणी अखाड़े की पेशवाई

जब महानिर्वाणी अखाड़े की पेशवाई निकाली जाती है तो सबसे आगे अखाड़े का ध्वज होता है। उसके पीछे नागा सन्यासियों का समूह करतब दिखाते आगे बढ़ता है। रथ पर आरूढ़ आराध्य कपिल मुनि की मूर्ति होती है जिसपर महात्मा चंवर डुलाते हैं. बीच-बीच में रथ पर सवार साधु-महात्मा दर्शन के लिए कतार में खड़े श्रद्धालुओं पर जल में डुबोकर फूल बरसाते हैं। नागा साधु अपने अस्त्र-शस्त्र के साथ पेशवाई के बीच में जगह-जगह रुककर शस्त्र कौशल का भी प्रदर्शन करते हैं. सड़क के दोनों किनारों पर दो घोड़ों पर सवार दो नागा सन्यासी नगाड़ा बजाते हुए चलते हैं। इनके बीच साधु, महात्मा, सन्यासी, नागा चलते हैं।

पाठकपीठ

चुनाव परिणाम की समीक्षा सटीक

प्रत्यूष के जनवरी अंक में पांच राज्यों के चुनाव परिणाम पर राज्यवार रिपोर्ट काफी रोचक व तथ्यपरक थी। मप्र, छत्तीसगढ़, राजस्थान व दक्षिण में तेलंगाना व पूर्वोत्तर में मिजोरम पर हार-जीत की समीक्षा जितनी पाठकों के अंतरमन पर छाप छोड़ने वाली थी उतनी ही सराहनीय भी थी।

बी. प्रसाद, डायरेक्टर एंड वी.पी

दखलअंदाजी ठीक नहीं

अमेरिकी नागरिक की हत्या के बाद सुर्खियों में आए अंडमान-निकोबार का सेंटिनल द्वीप दुनिया की सबसे खतरनाक जगह है। संरक्षित श्रेणी में आने वाली जाति को बाहरी हस्तक्षेप पंसद नहीं है, सरकार की भी नहीं। ऐसे में किसी और को भी इनके जीवन में दखल नहीं देना चाहिए।

डॉ. देव कोठारी, समाजसेवी

जन समर्थन बनाम गुस्सा

विधानसभा चुनाव कांग्रेस के लिए संजीवनी साबित हुआ जबकि इसके झटके से भाजपा की मूर्छा टूट गई। यह चुनाव कांग्रेस को मिला जनादेश और भाजपा के प्रति लोगों के गुस्से के प्रकटीकरण का एक अवसर है। निश्चित ही इस हार-जीत के मायने लोकसभा चुनाव को प्रभावित करेंगे।

भीम सिंह चुंडावत, उद्यमी

आध्यात्म का महापर्व कुंभ

जैसी कल्पना की जाती है उससे भी भव्य होता जाता है कुंभ का आयोजन। वाकई कुंभ आध्यात्म का अनूठा महापर्व है। गंगा-जमुना और सरस्वती के संगम पर होने वाला यह आयोजन जल के प्रवाह के साथ हमारी सांस्कृतिक विरासत को भी आगे बढ़ाता है। इस संबंध में दी गई जानकारी के लिए आभार।

दिलीप सिंह यादव, शिक्षाविद्

नाथद्वारा में हिन्दी पुरोधा
बाबू भगवती प्रसाद स्मृति समारोह

हिन्दी पुरोधा, राष्ट्रभाषा सेनानी एवं साहित्य वाचस्पति बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा द्वारा संस्थापित देश की अग्रणी साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं शैक्षिक संस्था साहित्य मण्डल, श्रीनाथद्वारा के तत्वावधान में त्रिदिवसीय बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह 5-7 जनवरी 2019 को संस्था के प्रेक्षागार में विविध साहित्यिक आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। उनका निधन 14 जनवरी 2014 को हुआ था। उन्होंने राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को उसका आधिकारिक स्थान दिलाने की मांग को लेकर न केवल सार्थक भूमिका का निर्वाह किया अपितु देशभर के हिन्दी सेवियों को साहित्य मण्डल के रूप में एक सशक्त मंच भी उपलब्ध कराया। प्रतिवर्ष श्रीनाथद्वारा में पाटोत्सव-ब्रजभाषा समारोह का आयोजन कर विभिन्न भारतीय भाषाओं के सृजनधर्मा साहित्यकारों को सम्मानित कर भाषाई भावात्मक एकता की दिशा में भी बड़ा काम किया।

स्मृति समारोह का उद्घाटन 5 जनवरी को साहित्य मंडल विद्यालय के बालक-बालिकाओं द्वारा सांस्कृतिक, प्रस्तुतियों, संस्था प्रकाशनों की प्रदर्शनी एवं भारतेन्दु हरिश्चन्द्र प्रणीत नाटक 'अंधेरी नगरी चौपट राजा' के मंचन से हुआ। पांचवें सत्र में साहित्यार्चन-काव्यार्चन कार्यक्रम हुआ। प्रथम दिन कुल नौ सत्र हुए। अन्तिम सत्र अ.भा. कवि सम्मेलन था। देवपुरा जी के पुत्र श्याम प्रकाश देवपुरा ने देश के विभिन्न राज्यों से बाबूजी को श्रद्धासुमन अर्पित करने आए साहित्यकारों व कवियों का स्वागत-अभिनन्दन किया। दूसरे दिन 6 जनवरी को कुल आठ सत्र हुए जिसमें साहित्य सम्मान, साहित्य मंडल एवं आसाम के पार्थ मंडल की कृष्ण-भक्ति पर आधारित नृत्य नाटिकाएं भी शामिल थीं।

'साहित्यार्चन' सत्र दोपहर 2 बजे से आरंभ होकर रात्रि आठ बजे तक चला। मुख्य अतिथि कोटा से पधारे गोस्वामी विवेक बाबा थे। अध्यक्षता केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा की कुल सचिव प्रो. बीना शर्मा ने की। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ पत्रकार एवं 'प्रत्यूष' के प्रधान सम्पादक विष्णु शर्मा हितैषी, विनोद बब्बर दिल्ली, श्रीनाथ मंदिर के अधिकारी सुधाकर शास्त्री थे। हितैषी ने हिन्दी सेवी बाबू भगवती प्रसाद देवपुरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, विनोद बब्बर ने देवपुरा की सम्पादकीय दृष्टि, डॉ. हेमराज मीणा, आगरा ने पुष्टिमार्गीय भक्ति साहित्य को देवपुरा का योगदान तथा डॉ. हीरालाल साहनी दरभंगा ने देवपुरा के समग्र व्यक्तित्व पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री रामेश्वर शर्मा कोटा, विट्ठल पारीक जयपुर और अंजीव अंजुम दौसा ने देवपुरा को काव्यांजलि अर्पित की। तीसरे और अन्तिम दिन चर्चा-परिचर्चा, सम्मान समारोह, कवि सम्मेलन और मंडल की महत्वपूर्ण पत्रिका 'हरसिंगार' के 'आत्म प्रेरणांक' व 'हिन्दी लाओ देश बचाओ' अंक के लोकार्पण के साथ साहित्यार्चन का समापन हुआ। साहित्य मंडल के प्रधान मंत्री श्याम प्रकाश देवपुरा, उनकी धर्मपत्नी ललिता जी सहित सम्पूर्ण परिवार ने देश भर से बड़ी संख्या में आए साहित्यकारों को जो स्नेह और सम्मान दिया उसकी समवेत स्वरों में प्रशंसा हुई। इस त्रिदिवसीय समारोह का श्री विट्ठल पारीक व श्याम देवपुरा ने सुरूचिपूर्ण संचालन किया।

- रिपोर्ट : उमेश शर्मा

एक दोस्त 'मॉनिटर' तो दूसरा 'तीसरी आंख'

राजस्थान में अशोक गहलोत सरकार में मंत्रिमंडल में जगह नहीं मिलने से नाराज डॉ. सीपी जोशी के समर्थकों में उस वक्त खुशी लौट आई जब सत्तापक्ष की ओर से विधानसभा अध्यक्ष के लिए डॉ. जोशी के नाम की घोषणा हुई। यह खुशी मेवाड़ के राजनैतिक गलियारों में दोगुनी रफ्तार से दौड़ी। क्योंकि एक तरफ सीपी जोशी को विधानसभा अध्यक्ष बनाया गया तो दूसरी ओर उनके मित्र भाजपा के गुलाबंचद कटारिया को पार्टी आलाकमान ने विपक्ष का नेता बनाया। कटारिया, सीपी से पहले प्रोटेम स्पीकर बने। इस बार मेवाड़ से बहुमत पाने का मिथक भले ही टूटा लेकिन राजनीति में मेवाड़ की धाक बरकरार है। कांग्रेस ने मेवाड़ से मंत्री के रूप में उदयलाल आंजना (निम्बाहेड़ा) व अर्जुनलाल बामणिया (बांसवाड़ा) को ही प्रतिनिधित्व दिया है। उदयपुर, राजसमंद, प्रतापगढ़ व डूंगरपुर से किसी को भी मौका नहीं मिला। अपने समय में मुख्यमंत्री पद के प्रबल दावेदार रहे कांग्रेस के कद्दावर नेता रामनिवास मिर्धा और परसराम मदेरणा की तरह ही सीपी को भी विधानसभा अध्यक्ष का पद देकर आलाकमान ने डेमेज कंट्रोल करने की कोशिश की है। मिर्धा 1957-1967 और मदेरणा 1999-2004 में स्पीकर रहे थे। 1999 में मदेरणा को पछाड़ कर अशोक गहलोत सीएम बने थे। नाथद्वारा विधानसभा सीट से इस बार करीब 16940 वोटों से जीतने वाले सीपी जोशी वर्ष 2008 में सीएम पद के प्रबल दावेदार थे लेकिन वे यहीं से केवल एक वोट से हार गए थे। मेवाड़ से विधानसभा अध्यक्ष बनने वाले सीपी जोशी छठे नेता होंगे। इनसे पहले मेवाड़ से निरंजन नाथ आचार्य, महारावल लक्ष्मण सिंह डूंगरपुर, हीरालाल देवपुरा, शांतिलाल चपलोत और कैलाश मेघवाल विधानसभा अध्यक्ष रह चुके हैं। 28 में से 10 सीटों पर कांग्रेस की जीत के कारण मेवाड़ को सत्ता से दूर रखने से कार्यकर्ताओं में नाराजगी थी। सीपी समर्थकों ने तो खुलकर विरोध भी जताया था। उनके विधानसभा अध्यक्ष बनने से सत्ता और उसके बाहर भी मेवाड़ का दबदबा बढ़ा है।

मेवाड़ के कद्दावर नेता सीपी जोशी बने विधानसभा अध्यक्ष, भाजपा ने गुलाबचंद कटारिया को बनाया नेता प्रतिपक्ष

सीपी और मेवाड़ के लिए इस पद के मायने

जोशी की टीम में ऊर्जा तो आई है लेकिन समर्थक इसे डेमेज कंट्रोल ही मान रहे हैं। संवैधानिक पद होने से जोशी सीधे तौर पर तो राजनीतिक कार्यक्रमों में शामिल नहीं हो सकेंगे लेकिन कद बड़ा होने से मेवाड़ के विकास को गति मिलेगी। सत्ता में इस बार कम भागीदारी की मेवाड़ को भरपाई की एक कोशिश की गई है।

गजब का संयोग : नेता प्रतिपक्ष गुलाबचंद कटारिया और विधानसभा अध्यक्ष सीपी जोशी दोनों मेवाड़ से हैं। दोनों की विचारधारा भले ही अलग हो मगर दोनों में घनिष्ठता है और दोनों जनता के मुद्दों पर राजनीति और खरा-खरा

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

Nalwaya Mineral Industries Pvt. Ltd.

:: Head Office ::

7-A, Bapu Bazar, Udaipur-313 001 INDIA

Ph. : 91-294-2416301, 2422054, 2422947, Fax : 91-294-2524182

:: Residence ::

33, Pologround, Udaipur-313 001 (Raj.) Ph. : 91-294-2560628, 2521387

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

ओम प्रकाश टांक

S/o श्री लाल टांक

गाँव- बरार- तहसील- भीम- जिला- राजसमंद

मो. नं. 9414406275

फर्म :

- होटल विजयदीप, भीम
- होटल श्री विजयदीप, सदारन
- टांक गैस पम्प, सदारन
- भारत पेट्रोल पम्प, भीम

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

डॉ. अजय सिंह चुण्डावत
M.B.B.S., M.D.
एनेस्थिसियोलोजिस्ट

डॉ. (श्रीमती) कौशल चुण्डावत
M.B.B.S., DGO
स्त्री एवं प्रसूति रोग विशेषज्ञ
गायनिक, सोनोलोजिस्ट

संजीवनी हॉस्पीटल

50 बेड का मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पीटल आधुनिक मोड्यूलर ऑपरेशन थियेटर एवं सभी आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित प्रसूति कक्ष

साधारण, हाई रिस्क डिलीवरी, गर्भाशय का ऑपरेशन, सिजेरियन डिलीवरी, निसंतानता का निवारण, गर्भवती एवं समस्त प्रकार के स्त्री रोगों की नियमित जांच व इलाज

पाठों की मगरी, सेवाश्रम चौराहा, उदयपुर (राजस्थान)

फोन :- 0294-2418575, 9899934770, 9829229350, 9571327528

Email:sanjivanihospitaludaipur@gmail.com
Website : www.sanjivanihospitaludaipur.org

सास-बहू में सामंजस्य ज़रूरी

सास-बहू में अनबन का किस्सा आम बात है। नई-नवेली दुल्हन कितने अरमान लेकर ससुराल में बहू बनकर आती है लेकिन जब आपसी तालमेल के अभाव में सास-बहू के बीच खटपट शुरू हो जाती है तो घर में अशांति और कलह का वातावरण पैदा हो जाता है जिससे परिवार पर बुरा असर पड़ता है। बहू की शिकायत होती है कि सास मुझे समझने की कोशिश ही नहीं करती और सास कहती है कि बहू को मेरी फिक्र ही नहीं। वह अपनी मनमानी करती है। बहू को यह सोचना चाहिए कि सुसराल ही अब उसका अपना घर है। इस घर की सुख-शांति, दुख-दर्द, मान-अपमान सब उसके अपने हैं अगर वह सुसराल के तौर-तरीके सीखे और उन्हें अपनाने की कोशिश करे। शुरू-शुरू में कुछ असुविधा जरूर हो सकती है और कुछ बातें अजीब भी लग सकती हैं, लेकिन धैर्य और सहनशक्ति का दामन थामकर उस माहौल में ढलने की कोशिश करती रहें अगर आप सास को प्यार देंगी, तो बदले में उनका प्यार भी पाएंगी। चूंकि सास बुजुर्ग और अनुभवी होती है, इसलिए जहां तक संभव हो, उन्हें धैर्य, संतोष और सहनशीलता से काम लेना चाहिए। बहू से बहस में पड़ने की बजाय उन्हें शांत हो जाना चाहिए। इसी में उनकी गरिमा भी है। सास का व्यवहार उदार व मृदु रहेगा तो बहू का रवैया भी मधुर होगा। बहू को भी चाहिए कि वह बात का बतंगड़ न बनाए और शांति से काम ले, सहनशक्ति और धैर्य बनाए रखे। कभी किसी बात के लिए जिद लेकर न बैठ जाए। कई बार बोलने से अधिक चुप रहना श्रेष्ठ होता है। आप सास हैं तो बहू को बात-बात में यह न जताएं कि आप घर की मालकिन हैं और इस पर आपका ही राज चलेगा बल्कि यह कहें कि बहू, इस घर पर तुम्हारा भी उतना ही अधिकार है। तुम भी इस घर की जिम्मेदार सदस्य हो, अपने हिसाब से इस घर को सजाओ-संवारों। बहू पर अपनी बातों को थोपने की कोशिश न करें। कोई मशविरा देना हो तो ऐसे दें कि बहू को बुरा न लगे। इससे बहू के दिल में आपके प्रति मान बढ़ेगा। अगर बहू थकी-मांदी घर आए तो उसे थोड़ा आराम करने दें। यह न सोचें कि आते ही वह काम में जुट जाएगी। बहू के अच्छे काम और अच्छे भोजन की प्रशंसा अवश्य करें। अगर कोई काम हो या किसी चीज की जरूरत हो तो बेटे के बजाय सीधा बहू से संपर्क करें। इससे बहू को आंतरिक प्रसन्नता होगी और उसे महसूस होगा कि वह भी इस घर की महत्वपूर्ण सदस्य है। बहू को कभी ममता की छांव दीजिए तो कभी सहेली सदृश उसकी हमराज बन जाएं। अगर सास-बहू को बेटी की तरह समझेगी तो बहू भी सास में अपनी मां की छवि देखेगी और मान देगी।

अगर कभी आपस में अनबन हो भी जाए तो अपना आपा न खोएं। गुस्से में कभी भी अपशब्द न बोलें। पीठ पीछे या दूसरों के सामने एक-दूसरे की शिकायत न करें और न ही अपने मनमुटाव या झगड़े को घर से बाहर जाने दें। सास-बहू कभी भी एक-दूसरे को प्रतिद्वंद्वी ने समझें और न ही खुद को श्रेष्ठ साबित करने में लगी रहें। छोटी-छोटी बातों को दिल से न लगाएं। अपनी गलतियों को स्वीकारें और जल्द से जल्द एक-दूसरे की नाराजगी को खत्म कर दें। सास-बहू अगर एक-दूसरे को समझने और आपस में तालमेल बिठाकर रखें तो यह रिश्ता मां-बेटी से भी ज्यादा मधुर हो जाएगा। यह रिश्ता अनुराग भरा, ममता भरा, मनुहार भरा और सम्मान भरा होगा तो आपस में तनातनी की समस्या ही नहीं रहेगी।

– पुष्पा जांगिड़

समाजवाद का 'माया' मोह

यूपी की राजनीति फिर रचेगी इतिहास, सपा और बसपा में नई साझेदारी, 38-38 सीटों पर भागीदारी

- जगदीश सालवी

'प्रधानमंत्री बनने का रास्ता प्रायः उत्तर प्रदेश से होकर ही गुजरता है। भारतीय राजनीति में इस बात को भरोसे के साथ कहा जा सकता है। वजह यह है कि जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, इंदिरा गांधी, चौधरी चरण सिंह, राजीव गांधी, विश्वनाथ प्रताप सिंह, चंद्रशेखर, अटल बिहारी वाजपेयी और गुजरात के नरेंद्र मोदी भी प्रधानमंत्री बनने के लिए वाया उत्तर प्रदेश (वाराणसी) से ही आए। दूसरी वजह 2014 में नरेंद्र मोदी को प्रधानमंत्री बनाने के लिए इस राज्य ने कुल 80 में से 73 सीटों पर भाजपा प्रत्याशियों को जिताया। ऐसे में सबसे बड़ा सवाल यही है कि 2019 में क्या होगा? सवालों की इस गठरी को उस वक्त ही नाव में लाद दिया गया था जब पिछले साल हुए गोरखपुर, फूलपुर और कैराना के उपचुनाव में विपक्ष के महागठबंधन ने बीजेपी की ठंड उड़ा दी थी। लेकिन 10 जनवरी को समाजवादी पार्टी के अध्यक्ष अखिलेश यादव और बहुजन समाज पार्टी की अध्यक्ष मायावती की मुलाकात ने नई दिल्ली की कड़ाके की सर्दी में राजनीतिक सरगर्मियों का तड़का लगा दिया है। इसके अगले दिन 11 जनवरी को अखिलेश की साइकिल पर आगे हाथी सवार हुआ और पीछे बैठीं मायावती। राजधानी से निकली साइकिल पर हाथी की यह अनोखी सवारी जब यूपी की सडकों पर दौड़ी तो कांग्रेस और भाजपा की नींद उड़ना स्वाभाविक था। सोचने पर मजबूर कर दिया। वैसे चुनावी दौर में राजनैतिक दलों के बीच गठबंधन होता रहता है लेकिन ये दोस्ती इसलिए रोचक थी क्योंकि गठबंधन करने वाले दोनों दलों के बीच ढाई दशक से दुश्मनी थी। सपा और बसपा के गठबंधन का आधिकारिक ऐलान होते ही राजनैतिक गलियारों में इसे ऐतिहासिक लम्हा करार दिया गया। गठबंधन के नियमों व शर्तों के मुताबिक बसपा और सपा 38-38 सीटों पर अपने प्रत्याशी उतारेंगे। दो सीटें बाकी दलों के लिए छोड़ी गई जबकि रायबेरली व अमेठी में गठबंधन का कोई भी प्रत्याशी नहीं उतारा जाएगा। जिससे भाजपा कांग्रेस को इन दो सीटों पर फंसा कर न रख सके और सोनिया-राहुल आराम से चुनाव जीत सकें। मायावती का कहना है कि गठबंधन गुरु-चेला (नरेंद्र मोदी-अमित शाह) की पलक झपकना ही बंद कर देगा। उनका कहना है कि गठबंधन ने एक नई राजनीतिक क्रांति का उदय किया है जिसकी किरणों से भाजपा के अहंकार का अंत होगा। दूसरी ओर अखिलेश यादव का कहना है कि मायावती का अपमान मेरा अपमान है। सपा को बराबर की सीटें देकर हमने उन्हें बराबर का सम्मान दिया है। इस गठबंधन के दो निहितार्थ हैं, पहला-वोट बैंक की राजनीति और दूसरा-राज्य में बीते विधानसभा में सपा को कांग्रेस से दोस्ती से लाभ नहीं मिलना। नतीजतन इस बार उसने लोकसभा चुनाव में कांग्रेस से दूर रहना ही बेहतर समझा। इस बार के चुनाव में गठबंधन अग्नि परीक्षा में भाग्य आजमायेगा। हाल ही में पांच राज्यों के विधानसभा चुनाव और उससे पहले भी कई बार यह साबित हो चुका है कि हर साल वोट पैटर्न एक सा रहना संयोग की बात है। असल में हर साल वोटर का मूड और मोड बदलता है। फिर चाहे सपा-बसपा का गठबंधन हो या भाजपा की गणित, चुनावी वैतरणी पार करने से पहले लोगों तक पहुंचना, उसका समस्याएं समझना और उन्हें हितैषी होने का विश्वास दिलाना ज्यादा जरूरी होगा।

संभावना : भाजपा की सीटें कम होगी

सपा और बसपा ने पिछली बार 1993 का विधानसभा चुनाव मिलकर लड़ा था। तब सदन में कुल 425 सीटें थी। बसपा को 67 और सपा को 109 सीटें मिली। भाजपा को 177 लेकिन सरकार मुलायम सिंह के नेतृत्व में बनी। वह सरकार जून 1995 के गेस्ट हाउस कांड के बाद गिर गई थी और दोनों के बीच गलाकाट रंजिश का लंबा दौर चला और दूरियां बढ़ने के साथ यूपी के सियासी मैदान में सत्ता के लिए घमासान मचता गया। रहा। 2014 के लोकसभा चुनाव में भाजपा को उत्तर प्रदेश में कुल 42.30 प्रतिशत वोट मिले थे। जिनके सहारे उसे 73 सीटें मिली। कांग्रेस, सपा और बसपा को मिले वोटों को जोड़ा जाए तो उन्हें 49.3 फीसदी वोट मिले। 2017 के विधानसभा चुनाव में भाजपा के वोट 39.7 फीसदी रह गए जबकि सपा, बसपा और कांग्रेस के सकल वोट 50.2 फीसदी हो गए। इस स्थिति में बेशक भाजपा की सीटें कम हो सकती हैं। हालांकि सपा और बसपा के विरोधी वोट छिटक सकते हैं।

कांग्रेस से किनारा, मुकाबला त्रिकोणीय

लोकसभा चुनाव में यूपी, बिहार, बंगाल, महाराष्ट्र के अलावा दक्षिण के पांचों राज्यों में गठबंधन महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। उत्तरप्रदेश पहला राज्य माना जा रहा है जहां गठबंधन की योजना सामने आई है। सपा-बसपा ने कांग्रेस से दूरी बनाकर यह संकेत भी दिया है कि उनकी दिलचस्पी के. चंद्रशेखर राव के प्रस्तावित फेडरल फ्रंट में है। केसीआर ने हाल में इस सिलसिले में नवीन पटनायक और ममता बनर्जी से मुलाकात की योजना बनाई थी। संभावना जताई जा रही है कि वे जल्द ही हैदराबाद जाने वाले हैं पर यदि सपा-बसपा उसके घटक बने तो त्रिशंकु संसद बनने पर यह फ्रंट प्रभावशाली हो जाएगा क्योंकि वह ताकतवर क्षेत्रीय दलों वाला गठबंधन होगा। परिणाम इसकी आशा के अनुरूप आए तो 2019 के चुनाव में एनडीए के बाद यह दूसरा सबसे बड़ा मोर्चा होगा। यूपीए से निश्चित रूप से बड़ा। गत 4 जनवरी को दिल्ली मे सपा-बसपा गठबंधन की रूपरेखा तय हो गई थी तभी पता लग गया था कि दोनों ने कांग्रेस को त्यागने का फैसला कर लिया है। इस अनदेखी का परिणाम यह है कि न केवल भाजपा बल्कि कांग्रेस भी चिंतित है। इसे गठबंधन के कारण यूपी में अनायास ही मुकाबला त्रिकोणीय हो जाएगा।

बगिया की असली रौनक - गुड़हल

बात अगर बागवानी की हो और गुड़हल का जिक्र न आए तो यह गलत होगा। गुड़हल उन पुष्पों में से एक है जिनसे बगिया की असली रौनक आती है। गुड़हल को अंग्रेजी में हिबिस्कस कहा जाता है। कुछ लोग इसे जवाकुसुम एवं चाइनारोज के नाम से भी जानते है। यह पौधा अपने अंदर कई खूबियां समेटे हुए हैं। इसकी सबसे प्रमुख खूबी तो यही है कि मूलरूप से उष्ण कटिबंधीय पौधा होने के बावजूद इसे लगभग हर तरह की जलवायु में सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है। यह पौधा बहुवर्षीय है।

गुड़हल का पुष्प है तो बहुत सुन्दर पर इसकी सबसे बड़ी कमजोरी है इसमें खुशबू का न होना। आमतौर पर लोग किसी भी फूल से खुशबू की उम्मीद करते हैं। इस मामले में गुड़हल लोगों को निराश करता है। लेकिन यह कमी इसकी खूबसूरती पूरा कर देती है। इस झाड़ीनुमा पौधे पर कई रंगों के खूबसूरत फूल लगते हैं। लाल, गुलाबी, सफेद, पीले, नीले एवं मिश्रित रंगों के लहराते फूल वातावरण को मदहोश कर देते हैं। तने के साथ जहां पर पत्तिया जुड़ती हैं वहीं पर फूल भी निकलते हैं। फूल सिंगल, डबल एवं फुल डबल चक्र में होते हैं। सिंगल चक्र के फूल में पांच पंखुड़ियां होती हैं जबकि डबल चक्र का फूल गुंथा हुआ होता है। फुल डबल चक्र के फूल में काफी सारी पंखुड़ियां होती हैं। फूलों के तमाम तरह के चक्रों की अपनी एक विशेषता होती है और ये आकर्षित करते हैं। फूलों के आकर्षण का एक हिस्सा इनके अंदर से निकलने वाली मुलायम डंडी होती है। यह डंडी कटावदार फूल के अंदर से निकलती है। डंडी के अंतिम सिरे पर लगभग एक सेमी हिस्से पर छोटी-छोटी बुंदियां लगी होती हैं। हवा के दबाव से यह डंडी जब नृत्य करती है तो उस वक्त का नजारा बेहद आकर्षक होता है।

दो सौ से अधिक प्रजातियां

फूलों के रंग, पत्तियों के आकार इत्यादि के अनुसार गुड़हल की दो सौ से ज्यादा प्रजातियां हैं। भारत में आमतौर पर मनीहोत, अरचेरी, रोजा, साइनैसिस, कैमरनी, सीरयेकस, डाइवसीफीलियम आदि प्रजातियों के गुड़हल उगाए जाते हैं। इन तमाम प्रजातियों के फूल बेहद आकर्षक होते हैं। पत्तियां, गहरी हरी, हलके लाल रंग की चिकनी और चौड़ी होती है। पौधों को क्यारियों के साथ ही गमलों में भी लगाये जा सकते हैं। तमाम पौधों पर काफी मात्रा में फूल लगते हैं।

जिस पर फूल नहीं आते

सिर्फ गुड़हल मिर्च प्रजातियां ही ऐसी होती हैं जिन पर फूल नहीं खिलते। इन पर लगने वाली कली अंत तक उसी अवस्था में ही बनी रहती है। गुड़हल की तमाम प्रजातियों में बीज नहीं बनते, इसलिए इन्हें उगाने के लिए कटिंग एवं गुट्टी का इस्तेमाल किया जाता है। दोनों ही विधियों द्वारा गुड़हल से नये गुड़हल आसानी से प्राप्त किए जा सकते हैं।

कैसे उगाएं

कटिंग द्वारा गुड़हल का नया पौधा प्राप्त करने के लिए लगभग 10 इंच लंबी एवं एक से डेढ़ सेमी मोटी टहनी काट लेनी चाहिए। इस टहनी को एक दिन तक पानी में भिगोकर रख दें। इसके बाद टहनी को गमले में मिट्टी में लगभग पांच सेमी गहराई तक गाड़ दें। महीनों बाद टहनी अंकुरित होने पर इसे दूसरे गमले में एक-तिहाई हिस्से की गोबर खाद मिली मिट्टी में रोपाई कर दें। गुट्टी के लिए पत्ते के चार-पांच सेमी नीचे तने को छील लें। उस जगह पर सड़ी हुई गोबर खाद एवं जल्दी जड़ पैदा करने वाले हारमोन लगाकर उसके ऊपर गीला मौस लपेट दें। उसके ऊपर पॉलीथिन बांध दें। इतनी जगह जरूर रखें जहां से मौस में पानी पहुंचाया जाता रहे। लगभग 45 दिन में जड़ निकल आयेगी। जड़ वाले स्थान से टहनी को काटकर तैयार की गई मिट्टी में लगा दें।

देखभाल : नियमित रूप से हल्के पानी की सिंचाई एवं समय-समय पर सूखी टहनियों और पत्तों को हटाने भर से इसके फूलों की खूबसूरती शबाब पर रहती है। हर पांच-छह महीने बाद हल्की खाद देते रहिए। इससे पौधे की आयु एवं फूलों की गुणवत्ता बढ़ती है।

- विष्णु माथुर

हार्दिक शुभकामनाओं सहित

शान्तिलाल चौहान

पूर्व संगठक, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस सेवादल एवं
सचिव, राजस्थान प्रदेश कांग्रेस कमेटी-अनुसूचित जाति विभाग

94141-04203

सुनील चौहान

94141-61607

सपनों की दुनिया बुनते मन की उड़ान

नवोदित कवयित्री शिल्पी कुमारी का प्रथम कविता संग्रह 'बच्चों की मुस्कान' राजस्थान साहित्य अकादमी के आर्थिक सहयोग से प्रकाशित हुआ है। जिसमें बालोपयोगी 37 कविताएं हैं। इस बाल कविता संग्रह का प्राक्कथन साहित्यकार तरुण कुमार दाधीच ने लिखा है, जिनके स्वयं के बालोपयोगी कथा-कहानी संग्रहों ने साहित्य जगत में एक पहचान कायम की है। शिल्पी की कविताओं में दया, करूणा, प्रेम, त्याग, कर्तव्य और राष्ट्रप्रेम की उत्कट भावना के साथ भारत की इन्द्रधनुषी सांस्कृतिक परम्पराएं और मानव जीवन को सार्थक करते संस्कारों पर अपने बाल मन के उदात्त भाव प्रकट हुए हैं। कविताओं में व्यक्ति और समाज को संदेश की गूंज भी सुनाई देती है। संग्रह की फौजी, अच्छे बच्चे, हिम्मत की कीमत, हरियाली का सुख, क्या होगा हाल, सयानी बेटी, मम्मी की सीख, गुरु की महिमा, घरौंदा, समय नहीं रूकता आदि कविताएं रोचक और मार्मिक होने के साथ संदेशपरक हैं। सन् 2019 में उन्नीस बरस की हो रही इस बाल कवयित्री से हिन्दी जगत को भविष्य में बड़ी आशाएं है। शुभाशीष। उनका पहला प्रयास सार्थक और स्वागत योग्य है। संग्रह का विमोचन पिछले दिनों प्रमुख उद्यमी डॉ. महेन्द्र सोजतिया ने किया। अध्यक्षता बाल साहित्यकार डॉ. विमला भण्डारी ने की। विशिष्ट अतिथि तरूण दाधीच, डॉ. कुंजन आचार्य व लालदास पर्जन्य थे।

पृष्ठ : 48 मूल्य 75 /-
प्रकाशक :
अनुविंद प्रकाशन, उदयपुर

- विष्णु शर्मा हितैषी

जीवन के इर्द-गिर्द घूमती कविताएं

डॉ. रेखा शर्मा के काव्य संग्रह 'कवितांकुर' में कुछ कविताएं तो ऐसी हैं, जो अंधेरी रात में चांद सी चमकती ध्यान आकृष्ट करती हैं। 'अहसास' कविता की ये पंक्तियां - *रात में पेड़ काले दिखाई देते हैं/फिर भी सब जानते हैं कि वे हरे हैं/यह हरेपन का अहसास ही तो है/जो तुमने दिया/* कवयित्री हिन्दी साहित्य की छात्रा तो नहीं किन्तु अध्येता अवश्य रही और प्रेरणास्रोत बने साहित्यकार पिता डॉ. कमलेश शर्मा। कवयित्री का विज्ञान और अर्थशास्त्र की छात्रा-शिक्षिका रहते हिन्दी में अध्ययन-लेखन भी साथ-साथ चलता रहा और परिणाम स्वरूप वे एक संस्मरण संग्रह के बाद कविताओं का यह बहुरंगी गुलदस्ता हिन्दी जगत को समर्पित कर सकीं। कविता तो कवि के मन में लगातार चलते रहने वाली प्रक्रिया है। कविता के गुणग्राही पाठक इस गुलदस्ते में से ज़रूर कुछ ऐसे पुष्प चुन पाएंगे, जिनका अपना-अलग शिल्प, मिज़ाज, रंग और ढंग है। 'इंसानियत' कविता की ये पंक्तियां देखिए - *आज इन्सान स्वयं में/इन्सानियत खोजने की/नाकाम कोशिश करता जी रहा है/आज क्रूर होते जा रहे समय में रिश्तों की टूटती डोर से* कवयित्री का भावुक मन विचलित है। 'रिश्ते' शीर्षक कविता में वे कहती हैं - *इज़हार, मनुहार और तकरार/समय के साथ सब हुए फरार/अपनी-अपनी थाली है।* ×××*अपना-अपना हिसाब/* संग्रह में उन्होंने बहुत गहराई से अपनी अनुभूति और सरोकारों की संपुंजित सृष्टि की है। कुछ कविताओं में तो शब्द-चित्र बहुत ही सुन्दर बन पड़े हैं। *हवाओं का रूख बदला हुआ है। बादलों ज़रा संभालो/तेवर इनके कुछ ठीक नज़र नहीं आते/* कुल मिलाकर अपनी पहली काव्यकृति में डॉ. रेखा ने भाव प्रणव सृजनात्मकता का परिचय दिया है। अतएव उन्हें साधुवाद देना तो बनता ही है। संग्रह के शीर्षक को सार्थक करता चेतन औदिच्य की कूची से उकेरा गया आवरण पृष्ठ भी काफी सुन्दर और प्रभावी बन पड़ा है।

पृष्ठ : 96 मूल्य : 225 /-
प्रकाशक :
अनुविंद प्रकाशन, उदयपुर

ज़रूरी थी सलमान की जीत

सलमान अली ने 23 दिसम्बर को 'इंडियन आइडल 2018' के खिताब के साथ ही ज़िन्दगी की एक बड़ी जंग को भी जीत लिया। पूरा देश 25 सप्ताह की इस स्पर्द्धा में उसके साथ खड़ा रहा और पुरस्कार राशि 25 लाख रु. के साथ एक चमचमाती कार का हक़दार बनने का साक्षी भी बना। सलमान की 'इंडियन आइडल' में जीत ने मुसलमानों का देश की असली आत्मा के यकीन को पुख्ता किया। उसके जीतने के बाद आँखों से बहती धाराओं को अपने गमछे से पोंछते हुए बस यही कहा - 'इस शो ने हर किसी को अच्छा इन्सान बनने की प्रेरणा ही नहीं बल्कि अच्छा इन्सान बनाया भी।' हरियाणा के एक मुस्लिम-बहुल इलाके में अत्यंत ही गरीब घर का उन्नीस साल का यह लड़का अपनी गायकी के जरिए संयुक्त परिवार के सोलह सदस्यों का पेट भरने का दायित्व उठाए था। दुर्घटना में पांव में फ्रेक्चर होने पर राड डाली गई थी। बावजूद इसके पैदल अथवा ऑटो पर लटककर घर से कई किमी दूर संगीत सिखाने के लिए आता-जाता था। इसका परिवार पीढ़ियों से शादियों वाले घरों में गाना-बजाना कर गुजर-बसर करता था। अब शायद इस परिवार की ज़िन्दगी बदल जाए। अंकुश भारद्वाज और नीलांजना के साथ कड़े मुकाबले में सलमान की आवाज़ के जादू ने बाजी मार ली। हालांकि इस स्पर्द्धा के आखिर मुकाबले के सलमान के साथ अन्य प्रतिस्पर्द्धी अंकुश, नीलांजना, नीतिन और विभोर ने भी देश का दिल जीत लिया। हालांकि सलमान को सर्वाधिक दो करोड़ लोगों ने वोट कर उसे संगीत की दुनिया का 'युवराज' घोषित कर दिया।

इंडियन आइडल 018

कैसा रहेगा आपके लिए यह माह ?

पं. शोभालाल शर्मा

मेष

यह माह आपके लिए उत्तम है। बौद्धिक शक्ति आपको हर कार्य सोच-समझ कर करने के लिए प्रेरित करेगी। ससुराल पक्ष में उत्सव संभव, सरकारी एवं गैर सरकारी जातकों के लिए तरक्की, स्थाई सम्पत्ति में निवेश लाभप्रद रहेगा।

वृषभ

माह सामान्य जान पड़ता है, पड़ौसियों का सहयोग प्राप्त होगा, इष्ट मित्रों से सावधान रहें। अनावश्यक खर्चे हो सकते हैं, संतान पक्ष से सुसमाचार, अचानक मिली कोई खबर उत्साहवर्द्धन करेगी। व्यापारिक एवं शासकीय कार्य में बाधाएं, बाहर घूमना-फिरना ज्यादा रहेगा, दाम्पत्य सामान्य।

मिथुन

न्यायिक मामलों में राहत मिलेगी। अनावश्यक व्यस्तता महसूस करेंगे। पारिवारिक रिश्तों में मधुरता आयेगी, तार्किक बातों से लोग प्रभावित होंगे। शत्रु सक्रिय होंगे, सावधान रहें, पेट सम्बन्धी समस्या उभर सकती है, आर्थिक पक्ष अच्छा है, व्यापार में निवेश से परहेज करे, दाम्पत्य जीवन उत्तम।

कर्क

जीवन साथी एवं साझेदार की मदद से कार्य रूकेगा नहीं। संतान पक्ष से परेशानी सम्भव, किसी नए कार्य के शुभारंभ से सफलता मिलने लगेगी तथा कुछ बड़े सौदे के अवसर बनेंगे। शत्रु पक्ष नुकसान पहुंचा सकता है, पीठ के दर्द से परेशान रह सकते हैं। नौकरीपेशा लोगों के लिए माह श्रेष्ठ रहेगा।

सिंह

इस माह आप धार्मिक यात्रा पर जा सकते हैं। घरेलू आवश्यकताओं की पूर्ति शनैः-शनैः होगी, दोस्तों का साथ राहत देगा। वाणी पर संयम रखें वरना प्रतिष्ठा धूमिल हो सकती है। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा, राजकीय एवं शासकीय मामलों में अड़चनें, नौकरीपेशा लोगों को व्यवहार और कार्य प्रणाली में परिवर्तन करना पड़ेगा।

कन्या

मित्रों से सम्बन्ध बनाये रखें यह माह पद एवं प्रतिष्ठा दिलाएगा, हालांकि संतान पक्ष से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। भाइयों व पिता के सहयोग से आर्थिक एवं पारिवारिक पक्ष सुदृढ़ होगा, व्यापार में उधार नुकसानदायक है। दाम्पत्य में अच्छा तालमेल रहेगा।

तुला

मानसिक शान्ति के लिए अध्यात्म का सहारा लेंगे। खर्चों की अधिकता आर्थिक संकट उत्पन्न करेगी, लोग आप में कमियां निकालेंगे, उन्हें नजरअन्दाज करें। रूके हुए धन की प्राप्ति होगी, गर्भवती महिलाएं स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखें, वैवाहिक जीवन में असंतोष, कार्य क्षेत्र में अड़चनें आएंगी।

माह के प्रमुख उत्सव

दिनांक	तिथि	पर्व/त्योहार
6 फरवरी	माघ शुक्ल द्वितीय	बाबा रामदेव जयंती
10 फरवरी	माघ शुक्ल पंचमी	बसंत पंचमी
11 फरवरी	माघ शुक्ल षष्टी	माही/मंदरा/शीतला छठ
12 फरवरी	माघ शुक्ल सप्तमी	देवनारायण जयंती
15 फरवरी	माघ शुक्ल दशमी	मुनि अजितनाथ जयंती
17 फरवरी	माघ शुक्ल द्वादशी/त्रयोदशी	गोरक्षनाथ जयंती
19 फरवरी	माघ शुक्ल पूर्णिमा	होलिका रोपण
25 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा सप्तमी	श्रीनाथजी पाटोत्सव
26 फरवरी	फाल्गुन कृष्णा अष्टमी	श्री सीताष्टमी

वृश्चिक

राजनीति से जुड़े लोगों को पद-प्रतिष्ठा मिलने से राहत मिलेगी, भौतिक सुखों में वृद्धि होगी। शिक्षा क्षेत्र में कार्यरत जातक सफलता पाएंगे, प्रतिभा निखारने का अच्छा समय है। यात्रा के अवसर प्राप्त होंगे, अपव्यय समस्या पैदा कर सकता है। आमदनी के नए स्रोत बनेंगे, स्वास्थ्य सामान्य, दाम्पत्य जीवन में सुधार। इस माह आप आत्मविश्वास से भरपूर रहेंगे।

धनु

परिवार में कहासुनी से माहौल बोझिल हो सकता है, स्वयं को शान्त रखें। परिवार के लिए बेहतर सोच रखें। अटके हुए धन एवं पैतृक मामले राहत प्रदान करेंगे, व्यवसाय में हर पहलू पर सोच कर निवेश करें। संतान पक्ष से मनोबल बढ़ेगा, दाम्पत्य जीवन सामान्य, पेट की समस्या उभर सकती है।

मकर

अपनी प्रतिभा का उपयोग संवेदनशील घरेलू मुद्दों को हल करने में करेंगे, बातचीत में कुशलता आपका मजबूत पक्ष है। कार्यक्षेत्र में सफलता के लिए यह माह विशेष अवसर देगा। अपनी ऊर्जा का प्रयोग सही दिशा में करें, आर्थिक पक्ष मजबूत बनेगा, कमर से नीचे के भाग में कोई समस्या हो सकती है, वैवाहिक जीवन सुखद्।

कुम्भ

सुनी-सुनाई बातों पर विश्वास न करें, परेशनियों का सबब बन सकती है। विद्यार्थियों के लिये नये अवसर प्राप्त होंगे, परिवार को पर्याप्त समय दें, मानसिक तनाव के कारण कार्य क्षेत्र पर प्रभाव पड़ेगा एवं आर्थिक पक्ष कमजोर हो सकता है। व्यापार में निवेश से परहेज करें। वैवाहिक जीवन सामान्य, स्वास्थ्य मध्यम।

मीन

आपकी आन्तरिक शक्ति कार्य क्षेत्र को बेहतर बनाने में मददगार सिद्ध होगी, धार्मिक कार्यों में रूचि बढ़ेगी एवं यात्रा में खर्च होगा। संतान पक्ष से शुभ समाचार, वाहन-मकान आदि खरीदने की कामना पूर्ण, लोगों से आर्थिक सम्बन्ध मजबूत होंगे। गैस सम्बन्धी समस्या कष्ट देगी, नौकरीपेशा लोगों का स्थान परिवर्तन सम्भव है।

भायंदर में फिजियोथेरेपी सेन्टर का लोकार्पण

मुम्बई। नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर एवं उमराव सिंह ओस्तवाल के संयुक्त तत्वावधान में महाराष्ट्र के भायंदर -ईस्ट(थाणे) स्थित ओसवाल बगीचा में पिछले दिनों कृत्रिम अंग वितरण शिविर व दिव्यांग टेलेंट शो संपन्न हुआ। इस अवसर पर नि:शुल्क फिजियोथेरेपी सेन्टर का उद्घाटन नारायण सेवा संस्थान के अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने किया। अध्यक्षता उमराव सिंह ओस्तवाल ने की।

डॉ. मुर्डिया व तलेसरा को पैटर्न फैलोशिप

उदयपुर। महावीर इंटरनेशनल की डायमंड पैटर्न फैलोशिप इंदिरा आईवीएफ के चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया को पूर्व अन्तरराष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र बापना ने प्रदान की। संभाग के अध्यक्ष चन्द्रेश बापना ने बताया कि पायरोटेक इलेक्ट्रोनिक्स के प्रबंध निदेशक प्रताप सिंह तलेसरा को गोल्ड फैलोशिप प्रदान की गई। दोनों को यह सम्मान संस्था के सेवा कार्यों में उल्लेखनीय योगदान के लिए दिया गया।

भण्डारी राष्ट्रीय संगठन मंत्री

उदयपुर। अखिल भारतवर्षीय स्थानकवासी जैन कॉन्फ्रेन्स नई दिल्ली के राष्ट्रीय संगठन मंत्री के रूप में उदयपुर के संजय भण्डारी को मनोनीत किया गया है। वीरेन्द्र डांगी ने बताया कि भण्डारी राजस्थान प्रान्त के दो बार युवाध्यक्ष रह चुके हैं।

खण्डेलवाल को 'डेयर टू ड्रीम अवार्ड'

उदयपुर। पिछले दिनों दिल्ली में 'जी बिजनेस डेयर टू ड्रीम अवार्ड' उदयपुर के प्रमुख उद्यमी कैलाश खण्डेलवाल सहित देश के 43 प्रमुख उद्यमियों को प्रदान किया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय लघु उद्योग मंत्री गिरिराज सिंह थे। इस अवार्ड समारोह का आयोजन जी बिजनेस हिन्दी चैनल ने सेप इण्डिया के साथ मिलकर किया था। समारोह को वित्त राज्यमंत्री शिव प्रताप शुक्ला व एमएसएमई सचिव अरूण कुमार ने भी सम्बोधित किया।

कुंजन के कविता संग्रह का विमोचन

उदयपुर। सुविवि में असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. कुंजन आचार्य के कविता संग्रह 'यह सदी निरुत्तर है' का विमोचन दिल्ली के प्रगति मैदान में विश्व पुस्तक मेले के दौरान हुआ। बोधि प्रकाशन के इस कार्यक्रम में विमोचन आकाशवाणी और ज्ञानपीठ के पूर्व महानिदेशक वरिष्ठ कवि लीलाधर मंडलोई और व्यंग्यकार प्रेम जनमेजय ने किया।

सोजतिया निर्विरोध अध्यक्ष

उदयपुर। सोजतिया ग्रुप के निदेशक प्रो. रणजीत सिंह सोजतिया वर्ष 2019-21 के लिये महावीर इन्टरनेशनल के निर्विरोध अध्यक्ष चुने गये। संचालक मण्डल में डॉ. बी एल बसेर, रमेशचन्द्र भटनागर, सुरेश सिसोदिया, जे एस पोखरना, स्नेहलता साबला, अशोक कुमार खुरदिया, पारसचन्द्र हिंगड़, सुशील कुमार सिंघवी, रवीन्द्र सुराणा, प्रकाशचन्द्र सामर, अशोक सिंघवी चुने गये।

बड़ाला महोत्सव
विद्यार्थियों, शिक्षकों का सम्मान

उदयपुर। बड़ाला महोत्सव 2018 का आयोजन भैरव बाग में हुआ। जिसमें कॉमर्स परीक्षाओं में शीर्ष पर रहे विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। निदेशक राहुल बड़ाला ने बताया कि संस्थापक हिम्मत बड़ाला, चतर बड़ाला ने अतिथियों का स्वागत किया। पारस सिंघवी, यशवंत आंचलिया, अरूण शाह, अरूण माण्डोत, अजय पोरवाल, आनंद गुप्ता, मनोज बिसारती, नरेश डांगी, भगवत सिंह हिंगड़ बतौर अतिथि मौजूद थे।

निदेशक सौरभ बड़ाला ने बताया कि कार्यक्रम के प्रथम भाग में 18 विद्यार्थियों का सम्मान किया गया। सीए इन्टर में अखिल भारतीय स्तर पर रैंक प्राप्त करने वाले 5 विद्यार्थियों को 25-25 हजार रुपए के नकद पुरस्कार दिए। निदेशक निशान्त बड़ाला ने बताया कि दूसरे भाग में शिक्षक शिरोमणि सम्मान डॉ. लोकेश जैन, डॉ. शैलेन्द्र सोमानी एवं सत्य प्रकाश मुन्दड़ा को प्रदान किया गया। संचालन डॉ. नीलू कौशल ने किया।

डॉ. कुमावत अध्यक्ष, भटनागर सचिव

डॉ. प्रदीप कुमावत

संजय भटनागर

उदयपुर। रोटरी क्लब उदयपुर की नई कार्यकारिणी में अध्यक्ष डॉ. प्रदीप कुमावत तथा सचिव संजय भटनागर चुने गए। कोषाध्यक्ष सुभाष सिंघवी के अलावा ओपी सहलोत, निर्मल सिंघवी, सज्जन सेठ, बीएच बाफना, गजेन्द्र जोधावत, नरेन्द्र धींग, उम्मेद सिंह चौहान, वीरेन्द्र सिरोया, हेमन्त मेहता, लक्ष्मीकांत वैष्णव, राकेश माहेश्वरी, राजेन्द्र सुखवाल, विवेक व्यास, महेन्द्र टाया, डॉ. यशवंत कोठारी, रमेश चौधरी, महादेव दमानी, निर्मल कुणावत, पी. एल. पुजारी, पदम दुग्गड़, नक्षत्र तलेसरा, एम एस सिंघवी व सुशील बांठिया को मनोनीत किया गया।

चौधरी(मेवाड़ा) कलाल समाज की प्रतिभाओं का सम्मान

उदयपुर। चौधरी(मेवाड़ा) कलाल समाज सेवा संस्थान का प्रतिभावान सम्मान-समारोह और युवक-युवती परिचय सम्मेलन गत दिनों समाज भवन में हुआ। प्रवक्ता दयालाल चौधरी ने बताया कि समारोह में समाज की प्रतिभाओं, छात्रों, खिलाड़ियों का सम्मान किया गया। भामाशाह भंवरलाल चौधरी आयड़, दिनेश चौधरी फिला और दीपक चौधरी सुभाषनगर का भी सम्मान किया गया। विवाह योग्य युवक-युवती परिचय सम्मेलन में विवाह योग्य 35 युवकों ने परिचय दिया। अध्यक्षता समाज अध्यक्ष लोकेश चौधरी ने की। मुख्य अतिथि संरक्षक मांगीलाल चौधरी थे।

सिंहानिया स्कूल में खेलकूद स्पर्द्धा

राजसमंद। जेके ग्राम स्थित लक्ष्मीपत सिंहानिया स्कूल की दो दिवसीय 33वीं वार्षिक स्पोर्ट्स एवं एथलेटिक मीट गत दिनों जेके मैदान पर रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रमों के साथ सम्पन्न हुई। समारोह का शुभारम्भ जेके टायर के वरिष्ठ महाप्रबंधक एवं विद्यालय प्रबंध समिति के प्रबंधक अनिल मिश्रा ने किया तथा अध्यक्षता प्राचार्य डॉ. संजय अभिषेक ने की। मिश्रा ने खेल भावना की प्रतीक मशाल प्रज्वलित की और श्वेत कपोत व गुब्बारे उड़ा कर मीट का उद्घाटन किया। उन्होंने खिलाड़ियों को खेल भावना से खेलने की शपथ भी दिलाई।

भटनागर सभा की स्वर्ण जयंती पर स्मारिका का विमोचन

उदयपुर। भटनागर सभा के स्वर्ण जयंती वर्ष पर 14 जनवरी को स्मारिका का विमोचन किया गया। अध्यक्ष मनोज भटनागर ने बताया कि स्मारिका में सभा के प्रारंभिक वर्ष 1968 से अब तक की उपलब्धियों के ब्योरे के साथ ही सभा के अध्यक्षों, महामंत्रियों का सचित्र विवरण है।

डॉ. डी. पी. सिंह अध्यक्ष मनोनीत

उदयपुर। अजमेर के मेयो कॉलेज में 22 व 23 दिसम्बर को हुए राजस्थान एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन कॉन्फ्रेंस (राज एपिकॉन 2018) में रविन्द्रनाथ टैगोर मेडिकल कॉलेज के डॉ. डी. पी. सिंह को राजस्थान एसोसिएशन ऑफ फिजिशियन का 2019 के लिए अध्यक्ष मनोनीत किया गया। डॉ. सिंह इसमें चेयरपर्सन भी रह चुके हैं। कांफ्रेंस में विभिन्न स्थानों से आए जाने-माने चिकित्सकों ने 20 से ज्यादा व्याख्यान दिए।

'अद्भुत भारत' को दर्शाया

उदयपुर। सेंट मैथ्यूस स्कूल में 94.3 एफएम रेडियो द्वारा चित्रकला प्रतियोगिता आयोजित की गई। जिसमें कक्षा छठी से आठवीं तक के विद्यार्थियों ने भाग लिया और अपनी रचनात्मक से अद्भुत भारत को दिखाया। इसमें चयनित विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया गया।

मनाली को केट-18 में सफलता

उदयपुर। इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेन्ट अहमदाबाद द्वारा नवम्बर 2018 में आयोजित कॉमन एडमिशन टेस्ट(केट-2018) में मनाली मूंदड़ा ने 99.63 प्रतिशत अंकों के साथ सफलता अर्जित की है। इस उपलब्धि का श्रेय वे अपने माता-पिता मधु-ओमप्रकाश मूंदड़ा को देती है।

सीआईआरसी में चुने गये देवेन्द्र सोमानी

उदयपुर। द इंस्टीट्यूट ऑफ चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स ऑफ इण्डिया के सेन्ट्रल इण्डिया रीजनल काउन्सिल(सीआईआरसी) के गत 8 दिसम्बर को हुए चुनाव में 61 वर्ष बाद उदयपुर के सीए देवेन्द्र कुमार सोमानी के चुने जाने पर शहर के सीए में हर्ष व्याप्त है। सीआईआरसी 7 राज्यों राजस्थान, उत्तरप्रदेश, बिहार, मध्यप्रदेश, छत्तीसगढ़, झारखण्ड एवं उत्तराखण्ड के 48588 चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट्स का प्रतिनिधित्व करती है।

उदयपुर से दो प्रत्याशी देवेन्द्र सोमानी एवं मनीष नलवाया मैदान में थे, जिनमें देवेन्द्र सोमानी ने 1660 वोट का निर्धारित कोटा प्राप्त कर अपना स्थान रीजनल काउन्सिल में सुनिश्चित किया। वे पांचवें स्थान पर रहे, जबकि मनीष नलवाया को 644 वोट प्राप्त हुए। उल्लेखनीय है कि 61 वर्ष पूर्व 1957 में उदयपुर से सीए केएम भण्डारी निर्वाचित हुए थे। उसके बाद से अब तक काउंसिल में उदयपुर से कोई भी सीए नहीं पहुंच पाया।

आरएमटीसीए : डॉ. मित्तल अध्यक्ष

उदयपुर। राजस्थान मेडिकल टीचर्स एसोसिएशन(आरएमसीटीए) साधारण सभा की बैठक आरएनटी मेडिकल कॉलेज में गत दिनों हुई। इस वर्ष चुनाव में वरिष्ठ चर्म रोग विशेषज्ञ डॉ. असित मित्तल को अध्यक्ष निर्वाचित किया गया। शिशु रोग विशेषज्ञ डॉ. बी. एल. मेघवाल उपाध्यक्ष, एनेस्थीसिया विशेषज्ञ डॉ. योगेन्द्र सिंघल सचिव, वरिष्ठ कैंसर रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेन्द्र राठौड़ कोषाध्यक्ष, बायोकेमिस्ट्री विशेषज्ञ डॉ. श्वेता बियानी और न्यूरोलॉजिस्ट डॉ. तरुण रेलोत को सर्वसम्मति से संयुक्त सचिव बनाया गया। नई कार्यकारिणी ने 26 जनवरी को शपथ ग्रहण की।

रोशन टीवीएस का बेस्ट परफोरमेन्स अवार्ड

उदयपुर। रोशन टीवीएस को बेस्ट परफॉरमेन्स के लिए मुंबई में पिछले दिनों 'स्टार्स ऑफ इंडिया' अवार्ड से नवाजा गया। होटल 'मेरियट' में आयोजित भव्य समारोह में रोशन टीवीएस, उदयपुर के डायरेक्टर रोशनलाल जैन को यह अवार्ड क्रिकेटर महेन्द्र सिंह धोनी ने प्रदान किया। जैन ने इस महत्वपूर्ण उपलब्धि का श्रेय रोशन के सब डीलर्स, ग्राहकों व अपनी पूरी टीम को दिया है। समारोह में टीवीएस मोटर्स कंपनी के प्रेसिडेंट यूबी पांडे, एनएसएम रविन्द्र चौहान, राजस्थान शिक्षक संघ(शेखावत) के प्रदेश उपाध्यक्ष भंवरलाल कस्वां एवं वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

डॉ. चुघ अध्यक्ष और डॉ. गुप्ता महासचिव

उदयपुर। भारतीय चिकित्सा संघ उदयपुर शाखा के चुनाव पिछले दिनों सम्पन्न हुए। चुनाव अधिकारी डॉ. एस एस गुप्ता ने बताया कि अध्यक्ष डॉ. सुनील चुघ, महासचिव डॉ. आनन्द गुप्ता, उपाध्यक्ष डॉ. अनुराग तलेसरा, डॉ. राहुल जैन, सहसचिव डॉ. प्रशांत अग्रवाल, कोषाध्यक्ष डॉ. दीपक शाह चुने गए। डॉ. संजीव अग्रवाल, डॉ. अमित खंडेलवाल, डॉ. कुशल गहलोत, डॉ. कपिल व्यास, डॉ. नेहा दुबे शर्मा कार्यकारिणी सदस्य बने। पूरी कार्यकारिणी निर्विरोध निर्वाचित हुई।

टूस डांगियान ने जीती ट्रॉफी

उदयपुर। नागदा ब्राह्मण समाज की 15वीं क्रिकेट प्रतियोगिता में टूस डांगियान की टीम ने पूर्व विजेता खरका को फाइनल में पराजित कर ट्रॉफी अपने नाम की। नागदा युवा मंच द्वारा भैंसड़ा खुर्द में आयोजित इस पांच दिवसीय प्रतियोगिता में मेवाड़, मगरा, मेवल और छप्पन की 12-13 टीमों ने भाग लिया था। समापन समारोह में मुख्य अतिथि विधायक(मावली) धर्मनारायण जोशी ने पुरस्कार वितरित किए। विशिष्ट अतिथि विष्णु शर्मा हितैषी, लक्ष्मणपुरी गोस्वामी, पं. हीरालाल नागदा, सरपंच नारायण लाल, श्रेणीदान चारण, डालचंद नागदा सहित सभी चौखलों के गणमान्य लोग मौजूद थे। स्वागत जगदीश नागदा, भगवान नागदा, रमेश नागदा, लालूराम नागदा, शंकरलाल नागदा, लेहरूलाल नागदा आदि ने किया। संचालन कमलेश एवं नीरज नागदा ने किया। मांगीलाल नागदा ने इस वर्ष दिसम्बर में प्रतियोगिता टूस डांगियान में कराने की घोषणा की।

मालवीय लोहार प्रतिभाओं का सम्मान

उदयपुर। मालवीय लोहार समाज कल्याण एवं विकास महासमिति, सोलह चौखला का प्रतिभावान सम्मान समारोह पिछले दिनों धूणीमाता परिसर डबोक में हुआ। प्रवक्ता धर्मेश मालवीय ने बताया समारोह में समाज की 353 प्रतिभाओं का सम्मान किया गया। इस मौके पर छात्रों ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी। मुख्य अतिथि मावली विधायक धर्मनारायण जोशी थे। अध्यक्षता यशवंत मालवीय ने की।

हिन्दुस्तान जिंक '5 एस' से सम्मानित

उदयपुर। 32वें राष्ट्रीय सम्मेलन में क्वालिटी कॉन्सेप्ट्स 2018 एनसीक्यूसी द्वारा हिन्दुस्तान जिंक की केन्द्रीय अनुसंधान एवं विकास प्रयोगशाला को 5 एस जापनिज साइंटिस्ट एवं इंजीनियर्स संघ(जूस) द्वारा प्रमाण पत्र से सम्मानित किया गया। मुख्य अतिथि केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के अध्यक्ष एचजे पण्ड्या और क्यूसीएफआई के अध्यक्ष-एसजे कालोखे द्वारा जिंक की ओर से यह पुरस्कार सीआरडीएल के अधिकारी हर्ष त्रिवेदी एवं सुमन कुमार ने ग्रहण किया।

नर्सिंग प्रशिक्षण हेतु सहयोग

उदयपुर। श्रीमती निशा भाटी चेरिटेबल ट्रस्ट-हरिदास जी की मगरी उदयपुर की ओर से पूजा मीणा को 15000/- रुपये नर्सिंग प्रशिक्षण प्राप्त करने हेतु प्रदान किए गये हैं। संस्थापक डॉ. जयप्रकाश भाटी ने बताया कि अशोक नगर मोक्षधाम, महाकालेश्वर मंदिर, हरिदासजी की मगरी के शिवपार्क तथा हनुमान मंदिर में ट्रस्ट की ओर से श्रद्धालुओं के बैठने के लिए बेंचे भी लगवाई गई हैं।

मानव का अभिनन्दन

उदयपुर। संस्थान संस्थापक **पद्मश्री कैलाश मानव के 73वें** वर्ष प्रवेश पर आयोजित कार्यक्रम में उनका बड़ी ग्राम स्थित सेवा महातीर्थ में अभिनंदन किया गया। संस्थान साधकों व देश के विभिन्न भागों से आए सेवा मनीषियों ने दिव्यांगजन की नि:शुल्क चिकित्सा एवं दीन-दुखियों की सेवा के लिए मानव की समर्पित सेवाओं का उल्लेख करते हुए उनका अभिनन्दन किया। समारोह के विशिष्ट अतिथि जे पी शर्मा लोनी, पं. उमेशानंद कोलकाता, कुसुम गुप्ता नई दिल्ली, सुरेश नुवाल भीलवाड़ा व प्रकाश मिश्रा ग्वालियर थे। सहसंस्थापिका कमला देवी ने कहा कि जो पर सेवा कर प्रसन्न रहता है वही सुखी है। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत अग्रवाल ने अतिथियों का स्वागत एवं मानव जी की 33 वर्षीय सेवा यात्रा का उल्लेख करते हुए कहा कि इनके जीवन का हर क्षण निर्धन, दरिद्र व असहाय लोगों की सहायता में बीता है। संस्थान निदेशक वंदना अग्रवाल, जगदीश आर्य व देवेन्द्र चौबीसा ने भी विचार व्यक्त किए। संचालन महिम जैन ने किया।

पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक

उदयपुर। आदिनाथ मानव कल्याण समिति, कविता धाम के तत्वावधान में पिछले दिनों जैन शासन के 23वें तीर्थंकर भगवान पार्श्वनाथ का जन्म/दीक्षा कल्याणक महोत्सव सुधर्म सागर महाराज की निश्रा में विविध आयोजनों के साथ सम्पन्न हुआ। साढ़े बारह हजार जाप्यानुष्ठान के साथ एकासना करने वाले श्रावक-श्राविकाओं को समिति की ओर से पावन नाकोड़ा तीर्थ की यात्रा भी करवाई गई। जिसका संचालन समणी आनंदी बाई ने किया।

अरबन कॉ-ऑपरेटिव बैंक चिकित्सा शिविर

चित्तौड़गढ़। चित्तौड़गढ़ अरबन को-ऑपरेटिव बैंक लि. एनसीएम सीटी व सहकार फाउण्डेशन द्वारा पिछले दिनों आयोजित चिकित्सा शिविर में 1950 रोगियों की चिकित्सा की गई। बैंक चेयरपर्सन विमला सेठिया एवं प्रबंन्ध निदेशक वन्दना वजीरानी के अनुसार 315 मोतियाबिन्द ऑपरेशन के साथ ही 1318 नेत्र परीक्षण, 579 चर्म व दन्त रोग तथा 61 केन्सर रोगियों की जांच के साथ उन्हें आवश्यक परामर्श व दवाएं नि:शुल्क दी गई। वजीरानी ने बैंक के प्रधान कार्यालय में डॉक्टरों की टीम का स्वागत किया। उपाध्यक्ष शिवनारायण मानधना, एनसीएम सीटी के अध्यक्ष डॉ. आई. एम. सेठिया के अनुसार निदेशक हस्तीमल चोरडिया, चांदमल नन्दावत, सुनीता सिसोदिया, एनसीएम सीटी के सोहन लाल तनवानी, सुरेश आदि सहित कई गणमान्य ने भी उल्लेखनीय सेवाएं प्रदान की।

जमशेदपुर में 54वां सेंटर

उदयपुर। इंदिरा आईवीएफ हॉस्पिटल प्रा. लि. ने जमशेदपुर के दयाल ट्रेंड सेन्टर, टाटा कान्द्रा रोड, आदित्यपुर में 54वें सेंटर की शुरुआत की। उद्घाटन कलक्टर छबि रंजन ने किया। नि:संतान दंपत्तियों को रियायती दरों पर इलाज उपलब्ध करवाने के लिए झारखंड में ग्रुप का रांची के बाद यह दूसरा और देश में 54वां सेंटर है। चेयरमैन डॉ. अजय मुर्डिया ने अपने बधाई संदेश में कहा कि इस क्षेत्र में सेंटर खुलने से झारखंड और करीबी राज्यों के लोगों को इलाज उपलब्ध होगा।

शोक समाचार

उदयपुर। महाराणा प्रताप कृषि एवं अभियांत्रिकी विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. के. एन. नाग की धर्मपत्नी **श्रीमती हेमलता** का 25 दिसम्बर को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पति, पुत्र हेमन्त, पुत्रियां माला और साधना तथा उनका वृहद एवं सम्पन्न परिवार छोड़ गई हैं। उनके निधन पर विश्वविद्यालयों के प्राध्यापकों व अनेक समाजसेवी संगठनों ने दु:ख व्यक्त किया है।

नाथद्वारा। स्वतंत्रता सेनानी एवं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता **पंडित रामचन्द्र बागोरा** का 26 दिसमबर 2018 को नया बाजार स्थित आवास पर निधन हो गया। वे 93 वर्ष के थे। राजकीय सम्मान के साथ उनका अन्तिम संस्कार सम्पन्न हुआ। पूर्व मंत्री गुलाबचंद कटारिया, किरण माहेश्वरी, सांसद हरिओम सिंह राठौड़, विधायक धर्मनारायण जोशी, डॉ. सी. पी. जोशी, सुरेन्द्र सिंह राठौड़ सहित विभिन्न राजनैतिक दलों के नेताओं ने उन्हें श्रद्धासुमन अर्पित किए। वे अपने पीछे शोकाकुल पुत्र शरद व हेमन्त बागोरा, पुत्री लक्ष्मी देवी सहित पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का विशाल परिवार छोड़ गए हैं।

उदयपुर। युवा उद्यमी-नाथद्वारा-कोशीवाड़ा निवासी **प्रद्युम्न जी पुरोहित** (श्रीजी प्लाईवुड, उदयपुर) का 21 दिसम्बर 2018 को आकस्मिक निधन हो गया। समाजसेवी व मृदु व्यवहार के धनी प्रद्युम्न जी अपने पीछे शोक संतप्त माता-पिता श्रीमती विजया-सोहनजी, व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती सीमा, भ्राता गोविन्द व परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर उदयपुर के उद्यमियों, औद्योगिक व समाजसेवी संगठनों ने गहरा दु:ख प्रकट किया है।

उदयपुर। **सुश्री करिश्मा तलदार** (चार्टर्ड अकाउन्टेन्ट) का 10 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल माता-पिता श्रीमती विभ-सुनील तलदार एवं भाई चमन सहित वृहद तलदार परिवार छोड़ गई है।

उदयपुर। सेवानिवृत्त संयुक्त निदेशक, माध्यमिक शिक्षा, राजस्थान एवं सीपीएस के संस्थापक-निदेशक **कस्तूरचंद जी शर्मा** का 31 दिसम्बर 2018 को देवलोकगमन हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय धर्मपत्नी श्रीमती शांतिदेवी, पुत्र डॉ. अरूण शर्मा, अशोक शर्मा व अनिल शर्मा तथा पुत्री आभा देवी एवं पौत्र-पौत्रियों तथा दोहित्र-दोहित्रियों का समृद्ध परिवार छोड़ गए हैं। उनके निधन पर विभिन्न शिक्षण संस्थाओं में शोक व्यक्त किया गया।

उदयपुर। **श्री मनफूल सिंह खेरालिया** (भूतपूर्व सैनिक) का 8 जनवरी को आकस्मिक निधन हो गया। वे अपने पीछे शोकाकुल धर्मपत्नी श्रीमती सोहन देवी, पुत्र सूरज भान, बहादुर सिंह, तीरथ सिंह खेरालिया (सचिव, उदयपुर जिला कांग्रेस कमेटी) सहित भरापूरा परिवार छोड़ गए हैं। उन्होंने 1965 व 1971 के भारत-पाक युद्ध में भाग लेकर वीरता पदक हासिल किए।

उदयपुर। काली बावड़ी निवासी **सुखलाल जी साहू** का 25 दिसम्बर 2018 को देहावसान हो गया। वे अपने पीछे व्यथित हृदय पुत्र रामचन्द्र व चन्द्रशेखर साहू पुत्रियां सुशीला देवी सोनावा व कंचन देवी आसरमा सहित भाई-भतीजों, पौत्र-पौत्रियों व दोहित्र-दोहित्रियों का सम्पन्न परिवार छोड़ गए हैं। वे धर्मपरायण व्यक्ति थे।

सूचना और प्रसारण मंत्रालय
भारत सरकार

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

अटल राह पर चलना है
न्यू इंडिया का सपना पूरा करना है

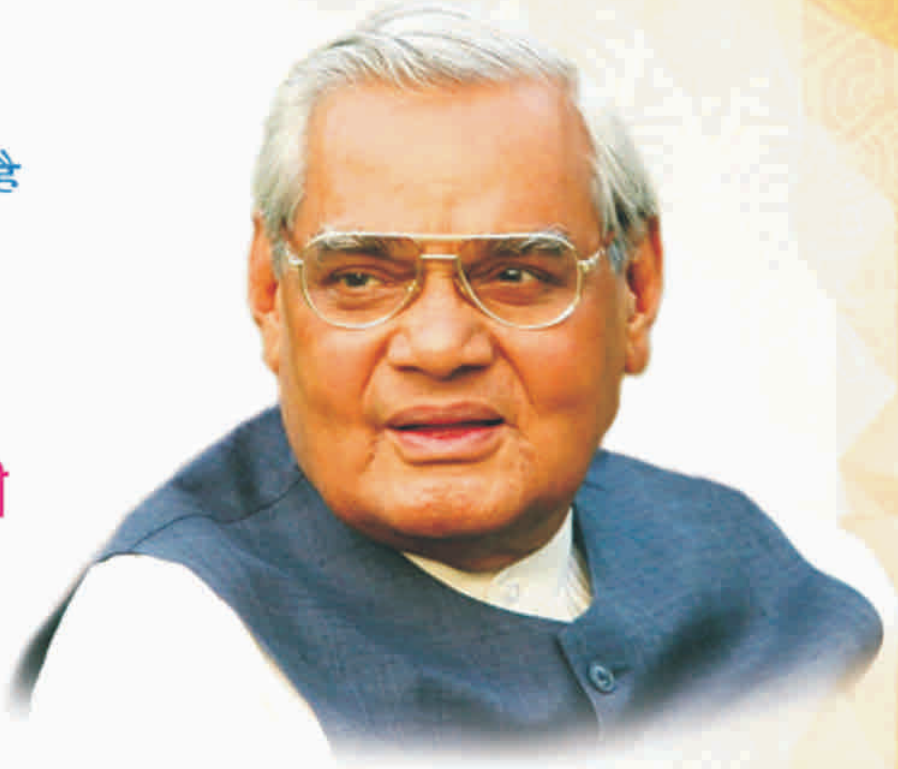

भारत रत्न

श्री अटल बिहारी वाजपेयी

(25 दिसम्बर, 1924 - 16 अगस्त, 2018)

के 94वें जन्मदिवस पर देश का नमन

हमारा संकल्प है बिना रुके बिना थके तेज विकास,
ताकि अंतिम व्यक्ति तक पहुंचे विकास का सीधा लाभ

davp 22112/13/0063/1819

दी बांसवाड़ा सेन्ट्रल को-ऑपरेटिव बैंक लि.

प्रधान कार्यालय, कॉलेज रोड, बांसवाड़ा – 327001

दूरभाषः 02962-242973, 243784 फैक्सः 02962-241375

वेबसाइटः– www.banswaraccb.com ई–मेलः– ccb_banswara@ymail.com

प्रगति के बढ़ते आयाम

(राशि लाखों में)

पूंजी एवं रक्षित कोष 5369.78	संग्रहित लाभ 549.72	जमाएं 41500.25	ऋण व्यवसाय 31975.74	कार्यशील पूंजी 62980.16

रिजर्व बैंक द्वारा जारी लाईसेंस धारक बैंक

सुरक्षित बचत एवं उत्पादकता

पूंजी पर्याप्तता अनुपात (CRAR) 11.29%

राज्य सरकार की भागीदारी से प्रायोजित बैंक

पूर्ण कम्प्यूटरीकृत बैंक

जमाएं डिपोजिट इंश्योरेन्स कॉरपोरेशन द्वारा बीमित

गणतंत्र दिवस की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

मेडिसेन्टर

सोनोग्राफी एण्ड क्लिनिकल लेब

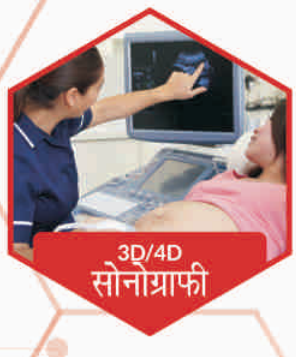

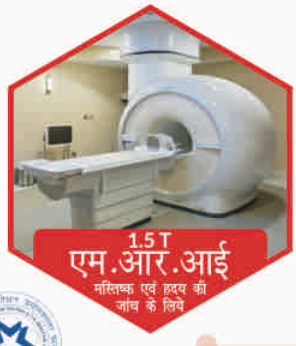

उदयपुर की प्रथम एवं एकमात्र NABL* प्रमाणित लैब

गोकुल-1, अलंकार ज्वैलर्स के पास, हॉस्पिटल रोड, कोर्ट चौराहा, उदयपुर
श्रीनाथ प्लाजा, M.B. हॉस्पिटल के सामने, उदयपुर

+91-76650-00234
www.medicentre.co.in

अलख

अलख नयन

आई हॉस्पिटल

World Class
Super-specialized
Eye care

विश्वस्तरीय सम्पूर्ण नेत्र चिकित्सा

Cataract

- With world class latest technology
- Multi-focal Lenses
- Tri-focal Lenses
- Toric Lenses
- Panoptix Lenses

Glaucoma

- Trabeculectomy with Ologen
- ND Yag Laser Trabeculoplasty
- Applanation Tonometry
- Gonioscopy ▪ HVF, OCT
- Non-contact Tonometry

Refractive services

- Optimized and customized Lasik Laser for removal of spectacles
- Epi-Lasik ▪ Lasek
- PTK ▪ Refractive IOLs

Retina

- Retinal Detachment Surgeries ▪ Management of Diabetic Retinopathy
- Pneuamatic Retinopexy ▪ Optical Coherence Tomography
- Fluorescein Angiography ▪ Red & Green Lasers
- Photo-Dynamic Therapy – AMD ▪ Vitreous Surgery
- ROP (Retinopathy of Prematurity) screening for infants

Cornea

- Corneal Transplantation, Keratoplasty
- C3R for Keratoconus
- Pterygium with MMC / Autograft
- Amniotic Membrane graft
- Pentacam ▪ Specular Microscope
- DSEK, DMEK, DALK

Low Vision Clinic

24/7 Emergency Services

Child Eye Care
Oculoplastics

Empanelment / मान्यता प्राप्त

• राजस्थान राज्य के कर्मचारी व पेंशनर्स • भूतपूर्व सैनिक अंशदायी स्वास्थ्य योजना (**ECHS**) • राजस्थान स्टेट माईन्स एण्ड मिनरल लिमिटेड (**RSMML**) • मोहनलाल सुखड़िया युनिवर्सिटी (**MLSU**) • एयरपोर्ट ऑथोरिटी ऑफ इण्डिया (**AAI**) • अजमेर विद्युत वितरण निगम लिमिटेड (**AVVNL**) • महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (**MPUAT**) • भारत संचार निगम लिमिटेड (**BSNL**) • यूनिट ट्रस्ट ऑफ इण्डिया (**UTI**) • रिलायंस जनरल इन्शोरेन्स (**Reliance**) • हिन्दुस्तान जिंक लिमिटेड (**HZL**) • भामाशाह स्वास्थ्य बीमा योजना (**BSBY**) • विपुल मेडकॉर्प इन्शोरेन्स टी.पी.ए. प्राइवेट लिमिटेड (**VIPUL**) • सरस डेयरी उदयपुर (**SARAS dairy**) • पैरामाउंट हैल्थ सर्विसेस एण्ड इन्शोरेन्स टी.पी.ए. प्राइवेट लिमिटेड (**Paramount**)

'अलख हिल्स', प्रताप नगर एक्सटेंशन, एयरपोर्ट रोड, उदयपुर 0294-2490970, 71, 72, 9772204624
e-mail : info@alakhnayanmandir.org, Website : www.alakhnayanmandir.org

With Best Compliments

MEWAR GROUP OF COMPANIES

Office Address :

A-207, Road No. 11, Mewar Industrial Area, Madri,
Udaipur (Raj.), India - 313003

Tel: +91-8875054444, 8875064444, Fax: +91-294-2490709

E-mail: mewar@mewarpolytex.com, Web: www.mewarpolytex.com